राजस्थानी ग्रन्थमाला पुष्प १

राजस्थानी कहावतां

भाग दूसरो

संपादक :
प्रो० नरोत्तमदास स्वामी, एम० ए० विद्यामहोदधि
पं० मुरलीधर व्यास विशारद

प्रकाशक :
मंत्री,
राजस्थानी साहित्य परिषद
नं० ४, जगमोहन मल्लिक लेन,
कलकत्ता

प्रथमावृत्ति १०००

[मूल्य —३)

प्रकाशक :
भँवरलाल नाहटा
प्र० मन्त्री,
राजस्थानी साहित्य परिषद
४ जगमोहनमल्लिक लेन,
कलकत्ता ।

मुद्रक :
न्यू राजस्थान प्रेस,
७३ मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट,
कलकत्ता ।

राजस्थानी कहावतां

भाग २

प

१ पईसांरी खीर है

पैसों की खीर है

पैसे पास हों तभी काम बनता है; पैसे होनेसे ही अच्छी चीज मिलती है।

२ पईसै विना वुध बापड़ी

पैसे विना वुद्धि बेचारी है

पैसा पास न हो तो वुद्धि कुछ काम नहीं देती।

३ पईसैरी खातर दिल्ली जाय परो

पैसे के लिअे दिल्ली चला जाय

(१) पैसेके लिअे मनुष्य दूर-दूर पहुँच जाता है।

(२) कंजूस पर, जो अेक पैसेके लिअे दिल्ली जितनी दूर जगहको चला जाय।

४ पईसैरी डोकरी, टको सिर-मुंडाई

पैसेकी वुढ़िया, टका सिर-मुंड़ाईका

थोड़े लाभके लिअे अधिक खर्च करना पड़े तब कही जाती है।

५ पईसैरी भाजी, टकैरो वघार

पैसेकी भाजी, टकेका वघार।

(ऊपरकी कहावत देखो)

६ पईसैरी हांडी गयी, कुत्तैरी जात तो जाणी

पैसेकी हंडिया गयी तो पर्वाह नहीं, कुत्तेकी जाति (के स्वभाव) को तो जान लिया

थोड़ी हानि तो हुई पर असलियत तो मालूम हो गयी ; फिर वैसा धोखा नहीं खायेंगे । थोड़ी हानि उठाकर भारी भयसे बच जाना ।

७ पईसैरी हांडी पण बजा'र लेवै

पैसेकी हांडी भी बजाकर लेते हैं

चाहे थोड़े मोलका ही माल खरीदना हो पर उसको खूब देखभालकर लेना चाहिये । छोटे कामको भी खूब विचारपूर्वक करना चाहिये ।

८ पईसैसूं पईसो हुवै * [पाठान्तर वधै]

पैसेसे पैसा होता है

पैसा पास हो तो उसके द्वारा अधिक धन कमाया जा सकता है ।

मिलाओ — धन-सूं धन वधै ।

९ पईसो तो जहर खावणनै ही कोनी

पैसा तो जहर खानेके लिये भी नहीं है

जब कुछ पास नहीं हो ।

१० पईसो हाथरो मैल है

१२ पग बिन कटै न पंथ

पैरोंसे चले बिना मार्ग नहीं कटता

करनेसे ही काम होता है, अपने आप नहीं।

१३ पगमें चक्कर है

पैरमें चक्र है

दिनरात इधर-उधर आता जाता रहता है। व्यर्थ घूमनेवाले पर।

१४ पगरै लागी अर पाटी बांधै माथैरै

पैरके लगी और पट्टी बाँधता है माथेके

असङ्गत काम करना। कहीं करनेका काम कहीं करना। बेवकूफीका काम करना।

१५ पगां बळती को दीसै नी, डूंगर बळती दीस जाय

पैरोंके पास जलती आग नहीं दिखायी देती, दूर पहाड़ पर जलती हुई दिखायी दे जाती है

अपने दोष नहीं दिखायी देते, दूसरोंके दिखायी पड़ जाते हैं।

१६ पगांरै किसी महँदी लागियोड़ी है

पैरोंके कौनसी महँदी लगी हुई है (कि चल नहीं सकते)

(१) जब कोई व्यक्ति पैदल चलनेमें आनाकानी करता है तब

(२) जब कोई व्यक्ति काम नहीं करता है तब।

१७ [इयांरै] पगांरो बांध्योड़ो हाथांसूँ को खुलैनी

(इनके) पैरोंसे बाँधा हुआ हाथोंसे नहीं खुलता (ये जिसे पैरोंसे बांध दें उसे दूसरे लोग हाथोंकी सहायतासे भी नहीं खोल सकते)

किसी चतुर या सबल व्यक्ति पर।

२४ पड़वा पाटी भांगणी, बीज पाटी सांभणी

प्रतिपदाको स्लेट फोड़ देना और द्वितीयाको सँभाल लेना

पाठशालाओंके छात्रोंको उक्ति।

२५ पड़ै पासो तो जीतै गंवार

पासा अनुकूल पड़े तो गंवार भी जीत जाय (चौसरके खेलमें सब दारमदार पासा पड़ने पर ही है, उसमें और चतुरताकी आवश्यकता नहीं होती)

भाग्य अनुकूल हो तो गंवार भी काम बना लेता है, नहीं तो अक्लमन्दकी भी कुछ नहीं चलती।

मिलाओ—पासा पड़े अनाड़ी जीतै।

२६ पड़्या तो कांई हुयो, टांग तो ऊपर ही है

(कुश्तीमें) गिरे तो क्या हुआ, टांग तो ऊपर ही है

जो पराजित हो जाने पर भी पराजय स्वीकार नहीं करता उस पर।

२७ पड़्यो पण टांग तो ऊंची ही राखी

गिरा, पर टांग तो ऊपर ही रखो।

(ऊपरवाली कहावत देखो)

२८ पढै फारसी वेचै तेल, अै देखो कुदरतरा खेल

पढ़े फारसी वेचै तेल, ये देखो कुदरतके खेल

(१) जब पढ़ा लिखा आदमी छोटा काम करे तब व्यंगमें।

(२) भाग्यके कारण पढ़े-लिखे भी मारे-मारे फिरते हैं!

२९ पढै फारसी वेचै आटो, ओ देखो किसमतरो घाटो

पढ़ फारसी वेचै आटा, यह देखो किसमतका घाटा।

(ऊपरवाली कहावत देखो)

३६ परणीजै जिको गायीजै

जिसका विवाह होता है उसीके गीत गाये जाते हैं

जिसका प्रसंग होता है उसीका बखान होता है।

३७ परणीज्या नहीं तो जान तो गया हा

ब्याहे नहीं गये तो बरातमें तो गये थे

काम स्वयं नहीं किया तो क्या हुआ, किया जाता हुआ देखा तो है (जब कोई किसीसे कहे कि तुम क्या जानो, तुमने काम कभी किया तो है ही नहीं, तब वह इस प्रकार उत्तर देता है)।

३८ परमात्मा गिंजैनै नख को दिया नी

परमात्माने गंजेको नाखून नहीं दिये (नहीं तो वह अपना ही सिर खुजा डालता)

परमात्माने नीच या दुष्ट व्यक्तिको बुराई करनेके साधन नहीं दिये, नहीं तो वह अपना और पराया सबका नाश कर डालता।

३९ परमात्मा घण-देवो है

परमात्मा अधिक देनेवाला है

परमात्मा जब देता है तो, चाहे सुख हो या दुःख, अधिक ही देता है।

४० परायी गांडमें मूसळ देवै जरां सूई सो लागै

परायी गांड़में मूसल देता है तो सुई सा लगता है

हम दूसरोंकी बड़ी हानि करते हैं तो भी वह हमें थोड़ी ही जान पड़ती है और अपनी थोड़ी हानि होती है तो भी बड़ी भारी दीख पड़ती है

मि०—पराया सिर पंसेरी बराबर।

४१ परायी थाळीमें घी घणो दीसै

परायी थालीमें घी ज्यादा दिखायी पड़ता है

दूसरेका लाभ या धन या सुख सदा अपनेसे अधिक जान पड़ता है।

४२ परायी पीड़ परदेस बराबर

दूसरेका दुख परदेशके बराबर

परायी पीड़का ध्यान किसीको नहीं होता।

४३ पराधीन सपनै सुख नाहीं

पराधीनको स्वप्नमें भी सुख नहीं

पराधीनताकी, तथा नौकरी आदि पराधीनतावाले पेशोंकी, निंदा।

४४ पराया घर ऊनै पाणीसूं बाळै

पराये घरोंको गर्म पानीसे जलाता है

किसीके कुकर्मोंको प्रशंसा करके उसे वैसा करनेके लिये प्रोत्साहित करना।

४५ पराया पूत कमा'र थोड़ा ही दै

पराये पूत कमाके थोड़ेही देते हैं (अर्थात नहीं देते)

(१) दूसरोंसे काम करानेकी आशा नहीं करनी चाहिये।

(२) बुढ़ापेमें अपनी संतान ही कमाकर खिलाती है।

(३) गोद लिये हुये पुत्र पर।

४६ परायै कांसै घी घणो लखायीजै

परायी थालीमें घी अधिक दिखायी पड़ता है

(देखो ऊपर कहावत नं० ४१)

४७ परायै दुख दूबळा थोड़ा, परायै सुख दूबळा घणा

पराये दुःखसे दुबले होनेवाले लोग थोड़े हैं, पर पराये सुखसे दुबले होनेवाले बहुत हैं

पराये दुःखकी चिन्ता करनेवाले थोड़े, पर पराये सुखसे जलनेवाले बहुत, मिलते हैं।

४८ परायै धन माथै लिछमीनाथ

पराये धन पर लक्ष्मीनाथ

दूसरेके धनके बल पर, या दूसरेके धनको पाकर, दातारगी दिखानेवाले पर। मिलाओ—माले मुफ्त दिले बेरहम।

४९ परायो माथो लाल देख'र आपरो माथो थोड़ो ही फोड़ीजै

पराया माथा लाल देखकर अपना माथा थोड़े ही फोड़ा जाता है (ताकि वह भी लाल हो जाय)

हानि उठाकर दूसरोंकी बराबरी नहीं की जा सकती।

५० पहरणनै तो घाघरो ही कोनो, नांव सिणगारी

पहननेको तो लहंगा तक नहीं, और नाम है सिनगारी (शृंगार की हुई)

जब नामके अनुसार गुण न हो तब।

५१ पहली आवै जकैरी गोरी गाय

जो पहले आवेगा उसकी गोरी गाय होगी

(१) दौड़के खेलमें दौडनेवालोंको उत्साहित करनेके लिअे कही जाती है

(२) जो पहले पहुंचता है वही लाभ उठाता है।

५२ पहली घरमें, पछै मसीतमें

पहले घरमें, फिर मसजिदमें (दिया जलाया जाता है)

(१) पहले घरकी जरूरतें पूरी करके तब मन्दिर आदिमें दान देना चाहिअे। घरवालोंका ध्यान रखकर परोपकार करना चाहिअे।

(२) कोई काम घरमें करके पीछे बाहर करना चाहिअे। सुधार पहले घरका या अपना करना चाहिअे पीछे दूसरों का।

मिलाओ—Charity begins at home.

५३ पहली धाप'र हँसले पछै बात कर्‌यौ

पहले पेट भरकर हंस ले, फिर बात करना

जो बात करते-करते हंसता जाय उसके प्रति।

६० पंच परमेश्वर

पंच परमेश्वरके समान हैं।

६१ पंचांमें परमेश्वरो वास है

पंचोंमें परमेश्वरका निवास है।

मि०—(१) पंच जहां परमेश्वर।

(२) पंचनके मुख है परमेश्वर।

६२ पंसेरीमें पांच सेररी भूल

पंसेरीमें पांच सेरकी भूल

बहुत बड़ी भूल।

६३ पंसेरीमें पांच सेररो घोखो

पंसेरीमें पांच सेरकी गड़बड़ (या भूल

(ऊपरकी कहावत देखो)

६४ पाका पान तो खिरणरा ही है

पके हुअे पत्ते तो टूटनेको ही हैं

बूढ़े आदमी मरनेको ही हैं। बूढ़ोंके मरनेकी ही अधिक संभावना होती है।

६५ पाकै घड़ैरै कानो का लागै नी

पके घड़ेके जोड़ नहीं लगता

पकी उमरमें सुधार नहीं हो सकता।

६६ पागड़ी गयी आगड़ी, सिर सलामत चायीजै

पगड़ी गयी दूर, सिर सलामत चाहिअे

(१) थोड़ी हानि हुई तो कुछ पर्वाह नहीं, बच तो गये।

(२) लज्जा गयी तो कोई पर्वाह नहीं, सिर तो बच गया (निर्लज्जकी उक्ति)।

७२ पाणीपर पथ्थर तिरै

पानी पर पत्थर तैरते हैं
असंभव काम संभव होता है।

७३ पाणी पहलाँ पाळ बाँधै

पानी आनेके पहले पार बाँधता है
(देखो ऊपर कहावत नं० ७१)

७४ पाणी पाणीरी ढाळ वैवै

पानी अपनी ढाल पर बहता है
काम अपने रास्तेसे होता है।

७५ पाणी पीजै छाण, गुरु* कीजै जाण (पाठान्तर- सगो, सगपण)

पानी छानकर पीना चाहिअे, गुरु (पाठान्तर-समधी, संबंध) परीक्षा करके करना चाहिअे।

७६ पाणी पीजै छाणियो, कीजै मनरो जाणियो

पानी छानकर पीना चाहिअे, काम मनका जाना हुआ करना चाहिअे।

७७ पाणी पीणो छाणियो, काम करणो मनरो जाणियो

(ऊपरवाली कहावत देखिये)

७८ पाणी पी'र जात नहीं बूझणी

पानी पीकर जाति नहीं पूछनी चाहिअे।
काम करनेके बाद उसका विचार नहीं करना चाहिअे।

७९ पाणी पी'र मूत तोलै

पानी पीकर मूतको तोलता है
बड़े भारी कंजूसके लिअे।

७२ पाणीपर पथ्थर तिरै

पानी पर पत्थर तैरते हैं

असंभव काम संभव होता है ।

७३ पाणी पहलाँ पाळ बाँधै

पानी आनेके पहले पार बाँधता है

(देखो ऊपर कहावत नं० ७१)

७४ पाणी पाणीरी ढाळ वँवै

पानी अपनी ढाल पर बहता है

काम अपने रास्तेसे होता है ।

७५ पाणी पीजै छाण, गुरु* कीजै जाण (पाठान्तर- सगो, सगपण)

पानी छानकर पीना चाहिअे, गुरु (पाठान्तर-समधी, संबंध) परीक्षा करके करना चाहिअे ।

७६ पाणी पीजै छाणियो, कीजै मनरो जाणियो

पानी छानकर पीना चाहिअे, काम मनका जाना हुआ करना चाहिअे ।

७७ पाणी पीणो छाणियो, काम करणो मनरो जाणियो

(ऊपरवाली कहावत देखिये)

७८ पाणी पी'र जात नहीं बूझणी

पानी पीकर जाति नहीं पूछनी चाहिअे ।

काम करनेके बाद उसका विचार नहीं करना चाहिअे ।

७९. पाणी पी'र मूत तोलै

पानी पीकर मूतको तोलता है

बड़े भारी कंजूसके लिअे ।

६७ पागड़ी गयी भैंसरी गांडमें

पगड़ी गयी भैंसकी गांड़में

रिश्वतखोर हाकिमके लिअे जो दोनों ओरसे रिश्वत लेता है और ज्यादा देनेवालेको जिताता है।

टिप्पणी—इस पर अेक कहानी है अेक रिश्वत खानेवाला हाकिम था। अेक पक्षने उसको रिश्वतमें पगड़ी भेंट की। दूसरे पक्षको जब यह बात मालूम हुई तो वह भैंस भेंट कर आया। हाकिमने भैंस देनेवालेके अनुकूल फैसला दिया। तब पहले पक्षवाला हाकिमके पास गया और उसने कहा—मेरी पगड़ी-का क्या हुआ? हाकिमने उत्तर दिया--पगड़ी गयी भैंसकी गांड़में।

६८ पाड़ोसीरै बरससी तो छांट्यां अठैई पड़सी

पड़ोसीके यहां मेह बरसेगा तो बूंदें यहां भी गिरेंगी

पड़ोसी या मित्रको लाभ होगा तो कुछ लाभ हमें भी होगा।

६९ पाड़ोसण छड़ै खोच, धमको पड़ै म्हारै सीस

पड़ोसिन निगदा करती है, धमाका मेरे सिर पड़ता है

टि०—छड़ना=ऊखलमें डालकर मूसलसे कूटना।

७० पाणी आगो पाळ बांधै

पानीसे पहले पाल बांधता है

पहलेसे उपाय करता है।

पहलेसे बचानेकी करता है।

७१ पाणी आगो पाळ पहली बांधै

७२ पाणीपर पथ्थर तिरै

पानी पर पत्थर तैरते हैं

असंभव काम संभव होता है ।

७३ पाणी पहलां पाळ बांधै

पानी आनेके पहले पार बांधता है

(देखो ऊपर कहावत नं० ७१)

७४ पाणी पाणीरी ढाळ वहै

पानी अपनी ढाल पर बहता है

काम अपने रास्तेसे होता है ।

७५ पाणी पीजै छाण, गुरु* कीजै जाण (पाठान्तर- सगो, सगपण)

पानी छानकर पीना चाहिये, गुरु (पाठान्तर-समधी, संबंध) परीक्षा करके करना चाहिये ।

७६ पाणी पीजै छाणियो, कीजै मनरो जाणियो

पानी छानकर पीना चाहिये, काम मनका जाना हुआ करना चाहिये ।

७७ पाणी पीणो छाणियो, काम करणो मनगो जाणियो

(ऊपरवाली कहावत देखिये)

७८ पाणी पी'र जात नहीं बूझणी

पानी पीकर जाति नहीं पूछनी चाहिये ।

काम करनेके बाद उसका विचार नहीं करना चाहिये ।

७९. पाणी पी'र मूत तोलै

पानी पीकर मूतको तोलता है

बड़े भारी कंजूसके लिये ।

८० पाणी पीवै छाण, जीव मारै जाण

जो पानीको छानकर पीते हैं वे जानबूझकर जीवोंको मारते हैं

जैनियों पर, जो जीव-हत्यासे बहुत डरते हैं।

८१ पाणीमें मीन पियासी*

पानीमें रहकर भी मछली प्यासी है

सब कुछ होते हुए भी उसका लाभ न उठावे, या उठा पावे, तब।

८२ पाणीरी पीक डुमारमें देखो

पानीकी चाह पानीका अकाल पड़नेपर देखो जाती है (तभी पानीका मूल्य लोग समझते हैं)

वस्तुके अभावमें उसका मूल्य मालूम होता है।

८३ पाद, छींक, डकार—तीनूं गुणाकार

पाद, छींक, और डकार ये तीनों गुणकारी होते हैं।

८४ पादण घर कस्तूरी कितां'क दिन ?

पादनेवालोंके घर कस्तूरी कितने दिन (काम दे)?

दुष्ट पर सत्संगका प्रभाव अधिक नहीं रह सकता।

* यह कहावत कबीरके इस पदकी प्रथम पंक्ति है

पानीमें मीन पियासी।

मोहि सुन-सुन आवै हाँसी।

घरमें वस्तु धरी नहिं सूझत, बाहर खोजन जासी

मृगकी नाभि माहिं कस्तूरी, बन-बन फिरत उदासी

आतम-ज्ञान बिना सब सूनो, क्या मथुरा, क्या काशी

कहै कबीर, सुनो भाई साधो, सहज मिले अविनाशी

८५ पादणरी पोंच नहीं, गोळंदाजांमें चेरो करो

शक्ति पादनेकी भी नहीं और कहता है कि गोलंदाजोंमें नौकर रख लो

थोड़ी शक्तिवाला बहुत बड़ा काम हाथमें लेना चाहे तब।

८६ पाद्यां ही सर ज्याय तो भाड़ै कुण जाय ?

पादनेसे ही काम बन जाय तो पाखाने कौन जावे ?

साधारण प्रयत्नसे काम चल जाय तो बड़ा परिश्रम कौन करे ?

८७ पादो, अे चिड्यां ! सावण आयो

हे चिड़ियों ! पादो, सावन आ गया

जब किसी अयोग्य व्यक्ति की मनचाही हो जाय तब व्यंगमें।

८८ पापड़ खा'र पादमणी हुई है

पापड़ खाकर पद्मिनी बनी है।

थोड़ा-सा थोथा दिखावा करके गुणवान बननेका आडंबर करना।

८९ पापड़ तो घणा ही पीट्या हा* [पाठान्तर-पोया हा, वेल्या हा]

पापड़ तो बहुत-से पीटे थे (पोये थे, वेले थे)

प्रयत्न तो बहुत तरहके किये। तरह-तरहके काम किये पर किसीमें सफलता नहीं मिली।

९० पाप फूटै पण फूटै

पाप फूटता है और फूटता है

(१) पाप अवश्य प्रकट होता है।

(२) पापका फल अवश्य भोगना पड़ता है।

मिलाओ—(१) पाप पहाड़ पर चढ़के पुकारै।

(२) पाप उभरै पर उभरै।

(३) Murder is out.

६१ पापीरा धन परलै जाय

पापीका धन प्रलयमें जाता है।

पापकी कमाई व्यर्थ या बुरे कामोंमें नष्ट होती है।

६२ पापीरै मनमें पाप बसै

पापीके मनमें पाप ही बसता है

(१) पापीको पापके सिवाय और कुछ नहीं सूझता।

(२) पापी सबको पापी समझता है। कपटी सबको कपटी समझता है।

६३ पारकी आस, सदा निरास

पराई आशा रखनेसे सदा निराश होना पड़ता है

मिलाओ —Self-help is the best help.

६४ पारकै पईसे परमानन्द, लालकंवरजी करै अनंद

पराया पैसा मिलनेसे बड़ा आनन्द है, लालकुंवरजी आनन्द करते हैं

(मौज उड़ाते हैं)

(१) पराये धन पर आनंद मनानेवालेके लिये।

(२) पराये धन पर आनंद मनाना सहज है।

६५ पारकी घर, जठै थूकणरो ही डर

पराये घरमें थूकनेका भी डर लगता है

पराये घरमें स्वाधीनतासे नहीं रहा जा सकता।

६६ पारसनाथसूं गधो भलो, पीस ल्यावै संसार

पारसनाथसे गधा भी अच्छा जिससे [illegible] लानेके लिये आटा तो पीस

देता है।

[illegible]

मि० — (१) [illegible] आटो [illegible] पीस।

[illegible] ॥

[illegible]

(२) [illegible] ॥

[illegible]

९७ पाली ! थारा भाग, धना भगत धाड़ा करै !

हे पाली ! धन्य तेरे भाग, जो धना भक्त तुझमें डाके डालते हैं !

९८ पालीव़ाळो पेम, नकारैआळो नेम

पालीवाला पेम, नकारवाला नेम
जो कभी इनकारका शब्द मुंहसे नहीं निकालता उसपर । पालीमें पेमसिंह नामका सरदार था जो नकार नहीं करता था ।

९९ पाळ जकैरो धरम

जो पालता है उसका धर्म है

(१) धर्मका पालन करनेको सब स्वतंत्र हैं, सब कोई धर्म कर सकते हैं ।

(२) धर्मका पालन करनेवालेको ही धर्मका फल मिलता है ।

१०० पाव़णा जीमता ही जाय, रांड़ां रोव़ती ही जाय

पाहुने जीमते ही जाते हैं, रांड़ें रोती ही जाती हैं
लोग विरोध करते रहेंगे और काम होता रहेगा ।

१०१ पाव़णा जीमता ही जासी, रांडां रोव़ती ही रहसी

पाहुने जीमते ही जायगे और रांड़ें रोती ही रहेंगी
(ऊपरवाली कहावत देखो)

१०२ पाव़णो प्यारो, पण अेक-दो दिन

पाहुना प्यारा होता है, पर अेक-दो दिन
पाहुना ज्यादा दिन रहे तो फिर अच्छा नहीं लगता ।

१०३ पांच पंच मिल कीजै काज, हारे-जीते नांही लाज

कई-अेक आदमियोंको मिलकर काम करना चाहिअे क्योंकि मिलकर काम करनेसे सफलता मिलती है और यदि वह न भी मिले तो किसी अेकके सिर बदनामी नहीं आती ।

१०४ पांचमें तीन उठाऊं और दोमें सीर राखूँ

पांचमेंसे तीन उठा लूं और बाकी दोमें हिस्सा रखूं

स्वार्थी और चालाक पुरुषके लिए जो सब प्रकारसे स्वार्थसिद्धि चाहता है।

१०५ पांचरो, मालक पचासरो गुमास्तो

पांच बरसोंका मालिक और पचास बरसोंका गुमास्ता

मालिक छोटी उमरका हो और नौकर बड़ी उमरका हो तो भी नौकरको मालिककी आज्ञा पालन करनी पड़ती है।

१०६ पांचरो लाभ, पनररो खरच

पांचका लाभ, पंद्रहका खर्च

आयसे अधिक व्यय।

१०७ पांच-सातरी लाकड़ी, अेक जणंरो बोझ

पांच या सातकी अेक-अेक लकड़ी मिलनेसे अेकका भारा पूरा हो जाता है

सबकी थोड़ी-थोड़ी सहायतासे काम बन जाता है।

[नीचे कहावत नं० १११ देखिये]

१०८ पांचांमें परमेसररो वास

पांच आदमियोंमें परमेश्वरका निवास होता है।

(ऊपर कहावत नं० ६१ देखिये)

१०९ पांचांमें पंचांरो वास

पांच आदमियोंमें पंचोंका निवास होता है

पांच आदमी मिल जाते हैं तो वे पंचोंके बराबर हैं।

११० पांचांरी आमदमें तीन उठावणा'र दोमें पांती राखणी

पांचकी आमदमें तीन उठाना और बाकी दोमें भी हिस्सा रखना।

[illegible]

(ऊपर कहावत नं० १०४ देखिये)

१११ पांचांरी लकड़ी अेकरो भारो, पांचांरी लात अेकरो गारो

पांचकी अेक-अेक लकड़ीसे अेक आदमीका पूरा भारा तय्यार हो जाता है और पांचकी लातोंसे अेक आदमीका गारा (ढेर) हो जाता है

(१) कई आदमियोंकी थोड़ी-थोड़ी सहायतासे सारा काम बन जाता है।

(२) कई आदमियोंके थोड़ा-थोड़ा सतानेसे अेक आदमी बर्बाद हो जाता है।

११२ पांचूं आंगळयां घीमें

पांचों उंगलियां घीमें

खूब लाभ-ही-लाभ है।

११३ पांचूं आंगळयां सरीसी को हुवै नी

पांचों उंगलियां अेक-सी नहीं होतीं

सब आदमी (या सब चीजें) बराबर नहीं होते।

११४ पांडेजी ! पगै लागूं, तो कह—कुपासिया

किसीने कहा कि पांड़ेजी ! पांव छूता हूं। तो बहरे पांड़ेजी उत्तर देते हैं कि—कपासिये।

बहरे आदमीके लिअे, जो किसीकी बातको ठीक न सुनकर अंदाजेसे उत्तर दे देता है।

११५ पांडेजी पिसतावैला, झक मार खीचड़ो खावैला

पांड़ेजी पछतावेंगे और झख मारकर खिचड़ा खावेंगे

पहले बहुत समझानेपर भी कोई काम न करना और अंतमें पछताकर और झख मारकर वही काम करना।

मि० -(१) पांड़ेजी पछितावेंगे, वही चनेकी खावेंगे।

(२) पांड़ेजी पछितावेंगे, सूखे चने चबावेंगे।

१२१ पीससी जको पिसाई लेसी

जो पीसेगा वह पिसाई (पीसनेकी उजरत) लेगा

(१) जो काम करेगा वह मजदूरी लेगा (मुफ्त नहीं करेगा)।

(२) जो काम करेगा उसीको मजदूरी मिलेगी (दूसरेको नहीं)।

१२२ पींडारैमें छाणाही नीकळै

पिंडारेमें कंडे ही निकलेंगे (और कुछ नहीं निकल सकता)

बुरे आदमीकी प्रत्येक वात बुरी होती है।

१२३ पींपळांनै पोखो

पींपलके पेड़ोंको पोषण (जल-सिंचन)

जब किसी भोजनभट्टको बड़े समयके पश्चात भोजनका निमंत्रण मिले तब व्यंगमें।

१२४ पींवतां-पींवतां समंदर ही खूट ज्याय

पीते-पीते समुद्र भी समाप्त हो जाता है

केवल खर्च करते रहनेसे बहुत बड़ी संपत्ति भी चुक जाती है।

१२५ पुटियो जाणै आभो म्हारै ही ताण ऊभो है

पुटिया समझता है कि आकाश मेरे ही बल पर ठहरा हुआ है (पुटिया अेक पक्षीका नाम है जो अपने पैर आकाश की ओर रखता है)

जब कोई (अयोग्य) व्यक्ति समझे कि काम उसके सहारेसे ही हो सकता है।

मि०—कुत्तो जाणै गाडी म्हारै ही ताण चालै।

१२६ पुस्करणा लाल फौज है

पुष्करणे लाल फौज हैं

पुष्करणे ब्राह्मण वीर और साहसिक होते हैं।

१२७ पुराणो देगचो, कळीरी भड़क

पुराना देगचा, और कलईकी तड़क-भड़क

जब कोई बूढ़ा या बुढ़िया बनाव-शृंगार करे तब हँसीमें कही जाती है।

१२८ पूछतो-पूछतो दिल्ली जाय परो

पूछता-पूछता [आदमी] दिल्ली पहुंच जाता है

(१) पूछताछ द्वारा प्रयत्न करते रहनेसे बड़े काममें भी सिद्धि हो जाती है (चुपचाप बैठे रहनेसे कुछ नहीं होता)

(२) जब किसी आदमीसे कहीं जानेके लिये कहा जाय और वह कहे कि मुझे पता नहीं मालूम तब कही जाती है।

१२९ पूत जाया, हे पदमणी ! जटा थोड़ी, जूंवां घणी

अरी पद्मिनी ! कैसे पूत जने हैं कि जिनके बाल तो थोड़े हैं और जुंएं बहुत हैं

मैले-कुचैले व्यक्तिके लिये।

१३० पूतरा पग पालणैमें पिछाणीजै

पूतके पैर पालनेमें पहचाने जाते हैं

(१) भविष्यमें बालक कैसा होगा इसका अनुमान बचपनमें ही हो जाता है।

(२) होनहार बालकके लिये।

(३) जब किसी कामके आसार पहले ही दीखने लगें तब।

मिलाइये—होनहार बिरवानके होत चीकने पात।

१३१ पूतरा लखण पालणै, बहूरा लखण बारणै

पूतके [illegible] पालनेमें और बहूके लक्षण द्वारपर (मालूम हो जाते हैं)

पूतके [illegible] बचपनमें ही मालूम हो जाता है।

[illegible] मालूम होता है।

पुत्र सपूत होगा तो स्वयं कमा लेगा, कपूत होगा तो जोड़ा हुआ भी उड़ा देगा। इसलिअे दोनों अवस्थाओंमें धन जोड़ना व्यर्थ है।

१३३ पेट थोथो है

पेट थोथा है (क्योंकि चाहे जितना भरो कभी नहीं भरता)

पेटको भरना पड़ता है इसीलिअे मनुष्य विविध प्रकारके कष्ट सहता है और पराधीनता भोगता है।

१३४ पेट पापी है

क्योंकि सारे पाप पेट भरनेके लिअे ही किये जाते हैं।

मिलाओ—बुभुक्षितः किं न करोति पापम्।

१३५ पेट-भर्‌यॉंरी वातां है

पेट भरेकी बातें हैं

पेट भरनेपर ही सब बातें सूझती हैं, भूखेको कोई बात अच्छी नहीं लगती।

१३६ पेटमें ऊँदरा कूदै है

पेटमें चूहे कूदते हैं

बहुत भूख लग रही है।

१३७ पेटमें ऊँदरा लड़ै

पेटमें चूहे लड़ते हैं।

(ऊपरवाली कहावत देखो)

१३८ पेटमें ऊँदरा थड्यां करै

पेटमें चूहे खेल रहे हैं (थड़ी=पैरों पर खड़ा होना)

(ऊपरवाली कहावत देखो)

१३९ पेटमें मिनक्यां लड़ै

पेटमें बिल्लियां लड़ती हैं

(ऊपरवाली कहावत देखो)

१४६ पोसवाळमें कांगसिया जोवै

पाठशालामें कंघे ढूंढ़ता है (कंघोंका पाठशालासे क्या संबंध ?)

किसी चीजको अैसी जगह ढूंढ़ना जहांसे उसका कोई संबंध नहीं।

१४७ पोपांबाई, राम-राम। नांव कियां जाण्यो ? उणियारो देख'र

कोई व्यक्ति-पोपां बाई, राम-राम !

पोपांबाई—तुमने मेरा नाम विना बताये कैसे जान लिया ?

वह व्यक्ति—तुम्हारी शकल देखकर।

जिसकी शकल-सूरतसे ही बेवकूफी टपकती हो उसके लिअे।

१४८ प्राणीरै लारै दाणा बीखरग्या

प्राणीके पीछे दाने बिखर गये।

मृतकके पीछे मौसर करने पर।

१४९ प्रीत छिपायी ना छिपै

प्रेम छिपाया नहीं छिपता।

१५० प्रीत छिपायोड़ी को छिपै नी

प्रीति छिपायी नहीं छिपती।

फ

१५१ फाट्या कपड़ा बूढा माईतांरी लाज नहीं करणी

फटे कपड़ों और बूढ़े मां-बापकी लाज नहीं करना चाहिये।

१५२ फाट्या कपड़ा मत देखो, घर दिल्ली है

फटे कपड़ोंकी ओर मत देखो, इसका घर दिल्लीमें है (घरकी ओर देखो)।

१५३ फाट्या कपड़ा मत देखो, जातरी ईंदी है

फटे कपड़े मत देखो, जातका ईंदी है (जातिकी ओर देखो)।

टिप्पणी—ईंदा पड़िहार (प्रतीहार) राजपूतोंकी एक शाखा है।

१५४ फाड़णवाळैनै सीवणवाळो को पूगै नी

फाड़नेवालेको सीनेवाला नहीं पहुंच सकता (बराबरी नहीं कर सकता)

काम बनता धीरे-धीरे है, पर बिगड़ते देर नहीं लगती।

१५५ फावड़ैरो नांव गुलसफो

फावड़ेका नाम गुलसफा

आगामें बहुत थोड़ी प्राप्ति हो तब।

१५६ फिरै सो चरै, बंध्यो भूखां मरै

फिरता है सो चरता है

घर बैठे पेट नहीं भरता। घर बैठे रोजी नहीं मिलती।

१५७ फिर्यां-चिर्यांसूं आदमी हुवै

फिरने-चिरनेसे आदमी बनता है

यात्रासे अनुभव बढ़ता है।

१५८ फींचा्ळ्ळ पिणियारी गावै है (पाठान्तर—पग)

टांगें 'पनिहारो' गाती हैं ।

बहुत थक गया है ।

टि० –'पणिहारी' अेक गीतका नाम है ।

१५९ फूटा भाग फकीरका भरी चिलम ग़ुड ज्याय

फकीरके फूटे भाग कि भरी हुई चिलम लुढ़क जाती है

भाग्य विपरीत होनेसे बना-बनाया काम बिगड़ जाता है ।

१६० फूटी हांडी अवाजसूं पिछाणीजै

फूटी हांडी आवाजसे पहचानी जाती है

बोलने पर बुरे आदमीका पता चलता है ।

१६१ फूड करै सिणगार मांग ईंटासूँ फोड़ै

फूहड़ जब श्रृंगार करती है तो ईंटोंसे मांगको फोड़ती है

फूहड़ स्त्री पर ।

१६२ फूड रांडरै हुई तयारी, कुत्ता चाल्या रेवाड़ी

फूहड़ स्त्रीके घर भोजकी तय्यारी हुई तो कुत्ते झुंड-के-झुंड चले

फूहड़ पर ।

१६३ फूड़रा मैल फागणमें उतरै

फूहड़के मैल फागनमें उतरते हैं

फूहड़ जाड़ेभर नहीं नहाती ।

१६४ फूफोजी रूससी तो भूवाजीनै राखसी

फूफाजी रूठेंगे तो फूफीजीको रख लेंगे (और क्या करेंगे ?)

कोई नाराज होगा तो क्या कर लेगा ?

१६५ फूल नहीं तो फूलरी पांखड़ी

फूल नहीं तो फूलकी पंखुरी

बहुत नहीं तो थोड़ा ही सही।

१६६ फूलरी जागां पांखड़ी

फूलकी जगह पंखुरी ।

१६७ फेरांरो दोस मती लाग्या

फेरोंका दोष मत लगना

फेरोंका दोष लगना=फेरों यानी सप्तपदीके बाद ही विधवा हो जाना।

ब

१६८ बकरी दूध देवै पण मींगण्यां रळा'र देवै

बकरी दूध देती है पर मेंगनी मिलाकर देती है

(१) जब कोई व्यक्ति अनिच्छासे काम करे।

(२) दुष्ट काम करते हैं पर साथमें थोड़ी-बहुत हानि भी कर देते हैं।

१६९ बकरी मींगणी देवै पण रोय-रोय देवै

बकरी मेंगनी देती है पर रो-रोकर देती है

जब कोई अनिच्छा-पूर्वक काम करे।

(ऊपरवाली कहावत देखो)

१७० बकरीरै मूंढेमें मतीरो कुण रवटण दै ?

बकरीके मुंहमें तरबूज कौन रहने देता है ?

गरीबको कोई लाभ नहीं उठाने देता; गरीबके पास कोई अच्छी चीज नहीं रहने देता।

१७१ बकरीरो दूध नहीं देखणो, लड़ाक देखणी

बकरीका दूध नहीं देखना, पर यह देखना कि वह लड़ाकू है या नहीं

झगड़ालू व्यक्तिके लिये व्यंगमें।

१७२ बकरी रोवै जीवनैं, कसाई रोवै मांसनै

बकरी रोती है अपने जीवको, कसाई रोता है मांसको

सबको अपनी-अपनी पड़ी है; सब कोई अपने ही स्वार्थको देखते हैं; सबका ध्यान अपनी ही हानिकी ओर जाता है, दूसरेकी हानि की ओर नहीं।

१७३ बकरैरी मा कद-ताणी खैर मनासी

बकरेकी मां कबतक खैर मनावेगी ; (वह तो कभी-न-कभी मारा ही जायगा)

अेक-दो बार आपत्ति टल भी गयी तो क्या हुआ, अेक-न-अेक दिन तो उसकी लपेटमें आना ही होगा ।

१७४ बकरैरी मा किता थावर टाळसी

बकरेकी मां कितने शनिवार टालेगी (अेक-न-अेक शनिवारको तो वह मारा ही जायगा)

(ऊपरकी कहावत देखो)

१७५ बगलमें छोरो, गांवमें ढींढोरो

बगलमें लड़का, गांवमें ढिंढोरा

चीज पासमें रखी हो और उसे सब जगह ढूंढ़ना ।

१७६ बजरंग वीरका सोटा, फूट जाय भंगीका लोटा

भंगी=भंगेड़ी ।

१७७ बळ आगै बुध बापड़ी

बलके आगे बुद्धि बेचारी है

बलके सामने बुद्धि काम नहीं देती ।

१७८ बळती लायमें कूदै

जलती आगमें कूदता है

जानको जोखिममें डालता है ।

१७९ बळयोड़ी बाटी ही को उथळीजै नी

जली हुई रोटी भी नहीं पलटी जाती

बहुत आसान काम भी नहीं किया जाता (आलसीके लिअे) ।

१८० बाई कहतां रांड आवै

बाई कहते रांड़ आता है ; बाई कहना चाहते हैं पर मुंहसे निकलता है रांड़ जिसे बोलनेका शऊर न हो उस व्यक्तिके लिअे ।

१८१ बाईजी मूंढैरा भारी घणा, सहररा लोग निमाणा* घणा
(पाठान्तर--मसकरा)

बाईजी मुंहकी भारी बहुत हैं और शहरके लोग ढीठ बहुत हैं
किसीकी सज्जनताका दूसरों द्वारा अनुचित लाभ उठाया जाय तब ।
मुंहका भारी=जो सङ्कोचके कारण बोल न सके या उत्तर न दे सके ।

१८२ बाई बत्तीसी, वीरो छत्तीसो

बहनमें बत्तीस कुलक्षण, तो भाईमें छत्तीस
जब अेक व्यक्ति दूसरेसे बुराईमें बढ़कर हो तब ।

१८३ बाई-बाई कहता रांड कहण लाग जावै

बाई-बाई कहते-कहते रांड कहने लगते हैं
(ऊपर कहावत नं० १८० देखो)
मि०—क्षणे रुष्टाः क्षणे तुष्टाः ।

१८४ बाईरा फूल बाईरै चढै

बाईके फूल बाईके चढ़ते हैं
(१) बहन-बेटीका धन बहन-बेटीको ही दे दिया जाता है
(२) जो वस्तु जिस व्यक्तिसे मिले वह वस्तु उसी व्यक्तिको दे दी जाय या उसीके निमित्त लगा दी जाय (परन्तु गांठसे कुछ न देना पड़े) तब ।

१८५ बाईरा बंधण कट्या सहजै हुयगी रांड

बाईके बंधन कटे, सहजै हो गई रांड

(१) इच्छित कार्य (चाहे वह बुरा ही हो , सहजमें हो जाय तब ।

मिलाओ—

सहजे चुड़लो फूट ग्यो, हुलका हुयग्या हाथ ।
बाईरा बन्धण कट्या, भलो करो रघुनाथ ॥

१८६ बाईरा महादेव करै

बाई (देवी) के महादेव बनाते हैं

अेकसे लेकर दूसरेको चुकाना ।

मि०—रामकी टोपी श्यामके सर ।

१८७ बाटी खातैनै बूज आवै

रोटी खाते हुअेको बूज आती है (ग्रास छातीमें अटक जाता है) रोटी खाते हुअेको बूज आती है (ग्रास छातीमें अटक जाता है)

खाते-पीतेको कुबुद्धि उपजती है ; जब कोई आराममें रहता हुआ भी अैसा काम कर बैठे जिससे कष्ट खड़ा हो जाय ।

१८८ बांध्या बळद ही को रैवै नी

बांधे हुअे बैल भी नहीं रहते

मूर्ख भी बंधनमें रहना नहीं चाहता ।

१८९ बादस्यारी बेटीसूं फकीररा ब्यांव

बादशाहकी बेटीसे फकीरका विवाह

हिम्मत और मेहनतसे कठिन-से-कठिन काम भी बन जाता है।

१९० बाप-पीटी कहो भावैं मा-पीटी कहो, वात अेक-री-अेक

बाप-पीटी कहो चाहे मा-पीटी कहो, वात अेक-को-अेक

दोनों अेक ही बात हैं। अेक ही बातको घुमा-फिराकर कहा जाय तब ।

१६१ बाप और जबान अेक है

बाप और जबान अेक हैं (जबान=जबानसे कही हुई बात)
(१) बातको निभानेवालेके लिअे।
(२) दोनोंकी अेक-सी इज्जत करनी चाहिअे।

१६२ बाप न मारी ऊंदरी, बेटो बरकंदाज

बापने तो चुहिया भी नहीं मारी और बेटा बरकंदाज बना फिरता है
शेखी मारनेवालेके लिअे।

१६३ बाबाजी ! कोपीन बासै है, तो कै-रह किसी जाग्यां है ?

बाबाजी, लंगोटी गंधाती है तो बाबाजी उत्तर देते हैं कि रहती किस जगह है
(गंदी जगहमें रहती है अतः गंधाना उचित ही है)
बुरी संगतसे आदमी बुरा होता है।

१६४ बाबाजी ! धूणी तापो हो ? कै-बेटाजी ! जी जाणै है

बाबाजी ! धूनी तापते हो ? बाबाजी उत्तर देते हैं कि बेटाजी ! जी जानता है
कार्य स्वयं करने पर ही उसके सुख-दुखको असलियतका पता चलता है।

१६५ बाबैजीरा छोकरा, च्यारूं मारग मोकळा

बाबाजीके छोकरोंके लिअे चारों (दिशाओंके) रास्ते खुले हैं
उच्छृंखल व्यक्तिके लिअे।

१६६ बाबो आवै जरां बाटियो लावै

बाबा आवे तब बाटी लावे
आशामें बैठे रहनेवाले व्यक्तिके लिअे।
(आगे कहावत नं० ३९० देखो)

१६७ बाबो आवै न ताळी बाजै

न बाबा आवे, न ताली बजे
न अैसा होगा, न यह काम होगा। कार्यके होनेकी असम्भावना।

१९८ बाबोजी घोर जोगा, बीबोजी सेज जोगा

बाबाजी कब्रके योग्य, और बीबीजी सेजके योग्य

(१) वृद्ध पुरुष और युवा स्त्रीके अनमेल योगके लिअे ।

(२) अनमेल संयोगके लिअे ।

१९९ बाबोजी जीम्यां पछै ठीया रहसी

बाबाजीके भोजन कर लेनेके बाद चूल्हेकी ईंटें बाकी बचेंगी

अभी काम कर लेना चाहिअे, पीछे नहीं होगा ।

२०० बाबोजी छानमें बैठा गोधा नाथै

बाबाजी छप्परमें बैठे सांड़ोंको नाथते हैं

समय व्यतीत करनेको व्यर्थके कार्य करनेवालेके लिअे ।

२०१ बाबोजी-रा-बाबोजी, तरकारी-री-तरकारी

बाबाजी-के-बाबाजी और तरकारी-की-तरकारी

(१) आदर भी करना और अवज्ञा भी करना ।

(२ आदर भी करना और साथ ही हानि भी पहुंचाना ।

(३) जब अेक ही चीज दोका काम दे ।

कहानी—

अेक व्यक्तिने किसी बाबाजीसे उनका नाम पूछा । बाबाजीने बताया—बैंगनपुरी । तब उस व्यक्तिने यह कहावत कही ।

२०२ बाबो ढोलरो कांई करै ? फाड़ै

बाबा ढोलका क्या करे ? फाड़ता है

जब किसी व्यक्तिको अैसी वस्तु मिल जाय जो उसके किसी उपयोगको न हो तब ।

२०३ बाबो बैठो इयै घरमें, टांग पसारै उवै घरमें

बाबा बैठा है इस घरमें, पर टांगें फैलाता है उस घरमें

दोनोंपर अेक साथ अधिकार जमानेका प्रयत्न करना।

अपनी चीजके साथही परायी चीज पर भी अधिकार जमानेकी इच्छा करना।

२०४ बाबो'र बहूजी अेकै उणियारै है

बाबा और बहूजी दोनों अेक ही आकृतिके हैं

दोनों अेक-से हैं।

२०५ बाबो हालै न चालै, बैठो ही घर घालै

बाबा हिलता है न चलता है, बैठा-बैठा ही घरका नाश करता है

(१) जो घरमें बैठा-बैठा खाता है उसके लिअे।

(२) साधु-महंतोंके लिअे व्यंगमें।

२०६ बामण कह छूटै, नै बळद बह छूटै

ब्राह्मण कहकर ही रहता है, बैल चलकर ही रहता है

ब्राह्मण खरी बात करनेसे नहीं हिचकिचाता, बैल परिश्रमसे नहीं चूकता।

२०७ बामण, कुत्ता, वाणिया जात देख गुर्राय

ब्राह्मण, कुत्ते और बनिये अपनी जातिवालोंको देखकर गुर्राने लगते हैं

ब्राह्मण और बनिये हमपेशे लोगोंको देखकर ईर्षा करते हैं, कुत्ता दूसरे कुत्तेका देखकर गुर्राता है।

इन लोगोंमें जाति-प्रेम नहीं होता।

मि०—बामन, कुत्ते, हाथी; नहीं जातके साथी।

२०८ बामण, नाई, कूकरा तीनूं जात कुजात

ब्राह्मण, नाई और कुत्ते-तीनों कुजात जातके हैं

ब्राह्मण, नाई और कुत्ते दुष्ट होते हैं।

२०९ बामणरी बलायमें वाणियो कमाय खाय

ब्राह्मणको 'बला' में बनिया कमा खाता है

ब्राह्मण लोग सीधे होते हैं, पूरे हिसाबकी पर्वाह नहीं करते, बनियेमें रुपया रखते हैं और हिसाब करते समय अेकाध पैसा ज्यादा भी होता है 'हमारी बलासे' कहकर छोड़ देते हैं। इसी रकमसे बनिया रोजी कमा लेता है।

२१० बामणरो जी लाडूमें

ब्राह्मणका जी लड्डूमें

ब्राह्मणको लड्डू प्यारे लगते हैं।

मि०—(१) बामण रीझै लाडुवां, बाकल रीझै भूत।

(२) ब्राह्मणो मधुर-प्रियः।

२११ बाये आवै, फूंकां जाय

हवाके साथ आती है, फूंकके साथ जाती है

जो चीज ठहरती नहीं उसके लिअे।

२१२ बारटजी! परड़ किता वेम ब्यावै?

बारहठजी! परड़ (अेक प्रकारकी सांपिन) कितनी बार बच्चे देती है?

किसी विषय पर असम्बद्ध आदमीसे प्रश्न करना।

२१३ बारह गाडा बडाई है

बारह गाड़े भरकर अभिमान है

अभिमानी व्यक्तिके लिअे।

२१४ बारह पूरबिया तेरह चौका

बारह पूरबिये तेरह चौके

अेक राय न होने पर।

२१५ बारह माळी तेरह होका

बारह माली, तेरह हुक्के

(ऊपरवाली कहावत देखो)

२१६ बाळक देखै हीयो, बूढो देखै कीयो

बालक हृदय को देखता है और बूढ़ा किये हुअे कामको

बालक प्रेम चाहता है और बूढ़ा काम (या चाकरी) को।

२१७ बाळक बादस्या बरोबर हुवै

वालक बादशाहके बराबर होता है (बालक और बादशाह बराबर हैं)

बालक बादशाहकी भांति अपनी मर्जीका मालिक होता है और किसीकी पर्वाह नहीं करता। बालक किसीसे नहीं डरता।

२१८ बारह बरस दिल्लीमें रै'र भाड़ ही भूंजी

बारह बरस दिल्लीमें रहकर भाड़ ही झोंका

अच्छे स्थानमें रहकर भी लाभ न उठाना।

२१६ बाळो ठाकर सेवियै, ढळती लीजै छांह

बालक ठाकुरकी सेवा करना चाहिअे और ढलती छायाको लेना चाहिअे।

बालक ठाकुरके राज्यमें इच्छानुसार कार्य कर सकते हैं। छोटेपनसे ठाकुरके साथ रहनेसे उसकी कृपा बराबर बनी रहती है और बहुत समय तक लाभ उठाया जा सकता है। बड़ी उम्रका ठाकुर अेक तो देवेगा नहीं, दूसरे उसका अनुग्रह रहा तो भी कितने दिन ? इसी प्रकार ढलती छायाके नीचे आश्रय लेंगे तो वह हटेगी नहीं, बराबर बढ़ती ही जायगी। प्रातः-कालकी चढ़ती छाया धीरे-धीरे घटकर बिलकुल ही चली जाती है।

२२० बावन तोळा पाव रत्ती

बावन तोले, पाव रत्ती

बिलकुल ठीक।

२२१ बारै जित्ता मांय

जितने बाहर उतने भीतर

कूटनीतिज्ञ या चालाकके लिअे ।

२२२ बाहर टेढो हो चलै बांबी सीधो सांप

सांप बाहर टेढ़ा चलता है पर बांबीमें सीधा ही जाता है

घरवालोंसे या अपनोंसे कपट नहीं करना चाहिअे ।

२२३ बाहर बाबू सूरमा, घरमें गीदड़दास

जो बाहर लोगोंके सामने बहादुरी बघारे और घरमें जोरूके सामने भीगी

बिल्ली बन जाय उसके लिअे ।

२२४ बाहररी पूरी, सहररी आधी

बाहरकी पूरी और शहरकी आधी (बराबर हैं)

बाहरकी पूरी और शहरकी आधी तनख्वाहके बराबर है क्योंकि बाहर

परदेशकी पूरी तनख्वाह घरकी आधी तनख्वाहके बराबर है क्योंकि बाहर

सभी तरहका खर्च बढ़ जाता है और स्वदेश जैसा आराम भी नहीं

मिलता ।

२२५ बांग्योड़ी तो ढेढरी ही खाली को जावै नी

उठायी हुई (लाठी आदि) तो ढेढ़की भी खाली नहीं जाती

अपने संकल्पसे विचलित होनेवाले व्यक्तिके प्रति, उसे उत्साहित करनेके लिअे ।

२२६ बांडै कुत्तैरा लायमें कांई बळै ?

दुम-कटे कुत्तेका आगमें क्या जले ?

जिसके पास कुछ नहीं उसकी क्या हानि हो सकती है ?

२२७ बां बातांनै घोड़ा ही को पूगै नी (नावड़ै नी)

उन बातोंको घोड़े भी नहीं पहुंच सकते

बीती हुई बात नहीं लौटायी ज-

२२८ बांबी कूट्यां सांप थोड़ो ही मरै

वांबीको पीटनेसे सांप थोड़े ही मरता है ?

बाहरी उपचारसे बुराई दूर नहीं होती ।

२२९ बांह देवै जकैरी बांह नहीं ताड़नी

जो बांह (सहारा) दे उसकी बांह नहीं तोड़ना चाहिअे

जो सहायता दे उसकी हानि करना नहीं चाहिअे ।

मि०—(१) खावै जको हांडीनै ही फोड़ै ।

(२) जिस थालीमें खाय उसीमें छेद करै ।

२३० बूठैरी बात तो वटाऊ कैवैला

बरसेकी बात तो बटाऊ कहेंगे

किसी स्थानमें वर्षा हुई होगी तो उसका हाल आये हुअे यात्री कह देंगे ।

सर्व-प्रसिद्ध बात छिपी नहीं रहती ।

२३१ बेटी जायी रे जगनाथ ! ज्यांरो हेठै आयो हाथ

हे जगन्नाथ ! जिसके बेटी जनमी उसका हाथ नीचे आ गया

बेटीके बापको वरके पक्षवालोंसे सदा दबकर ही चलना पड़ता है ।

२३२ बेटी दे'र बेटे लेवणो है

बेटी देकर बेटा लेना है (बेटा बनाना है)

जमाईके लिअे ।

२३३ बेटो घररी जाभ है

बेटा घरकी जहाज है

बेटेसे ही घर चलता है ।

२३४ बैठणो छयांमें, हुवो भलांई कैर ही

बैठना छायामें ही चाहिअे, चाहे करील ही हो ।

२२१ बारै जित्ता मांय

जितने बाहर उतने भीतर

कूटनीतिज्ञ या चालाकके लिअे ।

२२२ बाहर टेढो हो चलै बांबी सीधो सांप

सांप बाहर टेढ़ा चलता है पर बांबीमें सीधा ही जाता है

घरवालोंसे या अपनोंसे कपट नहीं करना चाहिअे ।

२२३ बाहर बाबू सूरमा, घरमें गीदड़दास

जो बाहर लोगोंके सामने बहादुरी बघारे और घरमें जोरूके सामने भीगी बिल्ली बन जाय उसके लिअे ।

२२४ बाहररी पूरी, सहररी आधी

बाहरकी पूरी और शहरकी आधी (बराबर हैं)

परदेशकी पूरी तनख्वाह घरकी आधी तनख्वाहके बराबर है क्योंकि बाहर सभी तरहका खर्च बढ़ जाता है और स्वदेश जैसा आराम भी नहीं मिलता ।

२२५ बांग्योड़ी तो ढेढरी ही खाली को जावै नी

उठायी हुई (लाठी आदि) तो ढेढ़की भी खाली नहीं जाती

अपने संकल्पसे विचलित होनेवाले व्यक्तिके प्रति, उसे उत्साहित करनेके लिअे ।

२२६ बांडै कुत्तैरा लायमें कांई बळै ?

दुम-कटे कुत्तेका आगमें क्या जले ?

जिसके पास कुछ नहीं उसको क्या हानि हो सकती है ?

२२७ बीं बातांनै घोड़ा ही को पूगै नी (नावड़ै नी)

उन बातोंको घोड़े भी नहीं पहुंच सकते

बीती हुई बात नहीं लौटायी जा सकती ।

२२८ बांबी कूट्यां सांप थोड़ो ही मरै

वांवीको पीटनेसे सांप थोड़े ही मरता है ?

बाहरी उपचारसे बुराई दूर नहीं होती ।

२२९ बांह देवै जकैरी बांह नहीं तोड़नी

जो बांह (सहारा) दे उसकी बांह नहीं तोड़ना चाहिअे

जो सहायता दे उसकी हानि करना नहीं चाहिअे ।

मि०—(१) खावै जको हांडीनै ही फोड़ै ।

(२) जिस थालीमें खाय उसीमें छेद करै ।

२३० बूठेरी बात तो वटाऊ कैवैला

वरसेकी वात तो वटाऊ कहेंगे

किसी स्थानमें वर्षा हुई होगी तो उसका हाल आये हुअे यात्री कह देंगे ।

सर्व-प्रसिद्ध बात छिपी नहीं रहती ।

२३१ बेटी जायी रे जगनाथ ! ज्यांरो हेठै आयो हाथ

हे जगन्नाथ ! जिसके बेटी जनमी उसका हाथ नीचे आ गया

बेटीके वापको वरके पक्षवालोंसे सदा दवकर ही चलना पड़ता है ।

२३२ बेटी दे'र बेटो लेवणो है

बेटी देकर बेटा लेना है (बेटा बनाना है)

जमाईके लिअे ।

२३३ बेटो घररी जाझ है

बेटा घरकी जहाज है

बेटेसे ही घर चलता है ।

२३४ बैठणो छयांमें, हुवो भलांई कैर ही

बैठना छायामें ही चाहिअे, चाहे करील ही हो ।

२२१ बारै जित्ता मांय

जितने बाहर उतने भीतर

कूटनीतिज्ञ या चालाकके लिअे ।

२२२ बाहर टेढो हो चलै बांबी सीधो सांप

सांप बाहर टेढ़ा चलता है पर बांबीमें सीधा हो जाता है

घरवालोंसे या अपनोंसे कपट नहीं करना चाहिअे ।

२२३ बाहर बाबू सूरमा, घरमें गीदड़दास

जो बाहर लोगोंके सामने बहादुरी बघारे और घरमें जोरूके सामने भीगी बिल्ली बन जाय उसके लिअे ।

२२४ बाहररी पूरी, सहररी आधी

बाहरकी पूरी और शहरकी आधी (बराबर हैं)

परदेशकी पूरी तनख्वाह घरकी आधी तनख्वाहके बराबर है क्योंकि बाहर सभी तरहका खर्च बढ़ जाता है और स्वदेश जैसा आराम भी नहीं मिलता ।

२२५ बांग्योड़ी तो ढेढरी ही खाली को जावैनी

उठायी हुई (लाठी आदि) तो ढेढ़की भी खाली नहीं जाती

अपने संकल्पसे विचलित होनेवाले व्यक्तिके प्रति, उसे उत्साहित करनेके लिअे ।

२२६ बांडै कुत्तैरा लायमें कांई बळै ?

दुम-कटे कुत्तेका आगमें क्या जले ?

जिसके पास कुछ नहीं उसकी क्या हानि हो सकती है ?

२२७ बां बातांने घोड़ा ही को पूगै नी (नावड़ै नी)

उन बातोंको घोड़े भी नहीं पहुंच सकते

बीती हुई बात नहीं लौटायी जा सकती ।

२२८ बांबी कूट्यां सांप थोड़ो ही मरै

वांबीको पीटनेसे सांप थोड़े ही मरता है ?

बाहरी उपचारसे बुराई दूर नहीं होती ।

२२९ बांह देवै जकैरी बांह नहीं ताड़नो

जो बांह (सहारा) दे उसकी बांह नहीं तोड़ना चाहिअे

जो सहायता दे उसकी हानि करना नहीं चाहिअे ।

मि०—(१) खावै जको हांडीनै ही फोड़ै ।

(२) जिस थालीमें खाय उसीमें छेद करै ।

२३० बूठंरी बात तो वटाऊ कैवैला

बरसेकी बात तो वटाऊ कहेंगे

किसी स्थानमें वर्षा हुई होगी तो उसका हाल आये हुअे यात्री कह देंगे ।

सर्व-प्रसिद्ध बात छिपी नहीं रहती ।

२३१ बेटी जायी रे जगनाथ ! ज्यांरो हेठै आयो हाथ

हे जगन्नाथ ! जिसके बेटी जनमी उसका हाथ नीचे आ गया

बेटीके बापको वरके पक्षवालोंसे सदा दबकर ही चलना पड़ता है ।

२३२ बेटी दे'र बेटे लेवणो है

बेटी देकर बेटा लेना है (बेटा बनाना है)

जमाईके लिअे ।

२३३ बेटो घररी जाभ्क है

बेटा घरकी जहाज है

बेटेसे ही घर चलता है ।

२३४ बैठणो छयांमें, हुवो भळांई कैर ही

बैठना छायामें ही चाहिअे, चाहे करील ही हो ।

२३५ बैठतो वाणियो, उठती माळना

बैठता बनिया, उठती मालिन

दुकान खोलते ही बनिया और बाजारसे उठते समय मालिन सस्ता सौदा देती है।

२३६ बैठां आगै ऊभांरो कांई जोर ?

बैठे हुओंके सामने खड़े हुओंका क्या जोर (चलता है) ?

जिनने पहले जगह घेर ली उनको खड़े हुए व्यक्ति नहीं उठा सकते ।

२३७ बैठी-सूती डूमणी घरमें घाल्यो घोड़ो

बैठी-सोयी डूमनीने घरमें घोड़ा डाल लिया

आराममें रहते हुए आफत खड़ी कर लेना।

२३८ बैठै जोय तो उठावै न कोय

पहले देखभाल करके उचित जगह पर बैठे तो फिर कोई उठाता नहीं।

सभा-सम्मेलनोंमें प्रायः लोग आगे जाकर बैठ जाते हैं, पीछे कोई बड़े आदमी आते हैं तो उन्हें उठा दिया जाता है।

२३९ बैठ्यांसूं बेगार भली

निकम्मे बैठेसे बेगार अच्छी

नहीं करनेसे कुछ करना अच्छा।

आलसमें दिन बिताना बुरा है।

२४० बैठो मजूर मांदो पड़ै

निकम्मा बैठा मजदूर बीमार पड़ता है

निकम्मा बैठना अच्छा नहीं।

२४१ वै दिन गया जद खलेलखां फाख्ता उडांवता हा

वे दिन गये जब खलेलखां फाख्ता उड़ाते थे

संपत्तिके दिन चले गये । अब वह अवस्था नहीं रही ।

२४२ वै वातां ही गयी

वे बातें ही गयीं

अच्छे दिन चले गये ।

२४३ वैरी गत वो ही जाणै

उसकी गति वही जानता है

परमात्माके लिअे । ईश्वरीय लीलाको कोई नहीं जान सकता ।

२४४ वैठ्यो माळा फेर, मुसाफर ! कदेयक डाळो निव ज्यासी

हे मुसाफिर, बैठा माला फेर, कभी-न-कभी डाल झुकेगी ही

हे प्राणी, ईश्वर-भजन करो, कभी भगवानकी कृपा होगी ही और तुम्हारा काम भी बनेगा ।

२४५ बो'त गयी, थोड़ी रही, सो भी जावणहार

उम्र बहुत तो बीत चुकी, थोड़ी बाकी रह गयी है, सो वह भी जानेवाली है ।

२४६ बोलती बन्द हुगी

बोलती बंद हो गयी

(१) चुप हो जाना पड़ा । जवाब नहीं आया ।

(२) सामना करनेका हौसला जाता रहा ।

२४७ बो पाणी मुलतान गयो

वह पानी मुलतान गया

वह बात अब नहीं रही ।

२४८ बोलसूँ तोल बँधै

बोलनेसे मूल्य मालूम होता है

बोलनेसे मनुष्यकी योग्यताका पता चलता है।

२४६ बोलसूँ तोल वधै

बोलनेसे मूल्य बढ़ता है

बोलनेसे ही योग्यता प्रकट होती है और तभी लोग कदर करते हैं।

२५० बोलीरा घाव़ को मिलै नी

बोलीके घाव नहीं मिलते

अनुचित या बुरी बात कहनेका जो बुरा प्रभाव पड़ता है वह कभी दूर नहीं होता। कड़वे वचनोंसे जो चोट पहुंचती है वह कभी नहीं भूलती।

२५१ बोलै जकीरा बोर विकै

जो बोलती है उसके बेर विकते हैं

(१) प्रयत्न करनेसे काम सिद्ध होता है।

(२) जो बोलता-चालता है उसका काम बन जाता है; जो चुप बैठा रहता है उसका नहीं बनता।

२५२ बोलै जकीरा भूँगड़ा ही विक ज्याय

जो बोलती है उसके (भुने हुअे) चने भी बिक जाते हैं

बोलने-चालनेसे कठिन काम भी बन जाता है। चुप रहनेसे कुछ नहीं होता।

२५३ बोलै जकैरो गुर झूठो

जो बोले उसका गुरु झूठा

जब कोई हरगिज न बोले तब कही जाती है।

२५४ बोळो पूछ बोळीनै, कांई रांधां होळीनै ?

बहरा बहरीसे पूछता है कि होलीके दिन क्या रांधें ?

जब दो बहरे इकट्ठे हो जायं।

२५५ बोल्या'र ठावा लाभा

बोले और ठीक पता चला

बोलनेसे योग्यताकी तुरंत परीक्षा हो जाती है।

मि०—मिनखां आद्दी पारख्या बोल्या अर लाध्या।

२५६ बोल्या 'र बोया

बोले और डुबाया

मुखसे बोलते ही बुरी बात निकाली।

भ

२५७ भगतणनै कांई किसब सिखावै ?

वेश्याको क्या कसब सिखावे ? (कसब=वेश्यावृत्ति)

(१) जब कोई जानकारको वही बात सिखावे ।

२५८ भगतणरो जायो कैनै बाप कैवै ?

वेश्याका जाया किसको अपना बाप कहे ?

२५९ भगतां भेळा मिल गया, कुण जाणै कुँभार ?

भक्तों (साधुओं) के साथ मिल गये, कौन जानता है कि कुंभार हैं ?

साधुओंके लिअे जिनमें सभी जातियोंके लोग होते हैं ।

२६० भगवान भावनारा भूखा है

भगवान भावनाके भूखे हैं

भगवान तो हृदयके सच्चे प्रेमसे राजी होते हैं ।

मि० —देवता भावनारा भूखा है ।

२६१ भज कलदारं, भज कलदारं, कलदारं भज मूढ़मते*

हे मूर्ख, कलदारको भज, कलदारको भज, कलदारको भज (कलदार=रुपया)

रुपयेका भजन करो । धन-संचयकी चिंता रखो ।

रुपया सबसे बड़ी चीज है ।

---

* संस्कृतमें शंकराचार्यजीका अेक गीत है जिसका आरंभ इस प्रकार है—भज गोविंदं भज गोविंदं गोविन्दं भज मूढ़मते । उसी परसे यह कहावत बनी है । कविराज ऊमरदानने 'भज गोविंदं' के गीतकी तरह 'भज कलदारं' का भी गीत हिंदीमें बनाया है जो उनके कविता-संग्रह 'ऊमरकाव्य' में छपा है ।

मि०—(१) सर्वे गुणाः कांचनमाश्रयंते ।

(२) अर्थो हि पुरुषस्य परं निधानम्

(३) अर्थस्य पुरुषो दासो अर्थो दासो न कस्यचित् (महाभारत)

(४) टका हर्त्ता टका कर्त्ता टका मोक्षविधायकः ।

टका सर्वत्र पूज्यंते बिन टका टकटकायते ॥

२६२ भणिया मांगै भीख, अणभणिया घोड़ै चढै

पढ़े हुअे भीख मांगते हैं, बिना पढ़े घोड़े पर चढ़ते हैं

अनपढ़ या नहीं पढ़नेवालोंकी उक्ति ।

२६३ भणै जकैरी विद्या

जो पढ़ता है उसकी विद्या है

पढ़नेसे ही विद्या आती है ।

२६४ भण्यै विचै गुण्या वत्ता

पढ़ेकी अपेक्षा गुनेहुअे अच्छे

मि० - Experience is better than learning.

२६५ भण्यो न गुण्यो, नांव विद्याधर

पढ़े न गुने, नाम विद्याधर

जब नामके अनुसार गुण न हों तब ।

मि०—(१) पढ़े न लिखे नाम विद्याधर ।

(२) आंखोंके अंधे नाम नयनसुख ।

२६६ भण्या पण गुण्या कानी

पढ़े पर गुने नहीं (पढ़ी हुई विद्या पर मनन नहीं किया)

बिना गुननेके पढ़ना व्यर्थ है ।

२६७ भण्योड़ैरै च्यार आंख्यां हुवै

पढ़े लिखेके चार आंखें होती हैं

विद्याकी प्रशंसा।

२६८ भरम भारी, खीसा खाली

भरम बहुत पर जेब खाली

लोग समझते हैं कि इसके पास धन बहुत है पर वास्तवमें कुछ भी नहीं है।

२६९ भरी जवानी पइसो पल्लै, राम चलावै तो सीधो चल्लै

भरी जवानी हो और पासमें पैसा हो तो फिर राम चलावे तभी आदमी सीधे रास्ते चलता है।

भरी जवानीमें पैसा पास होने पर सुमार्गगामी होना संभव नहीं।

मि०—धन, जोबन, अर ठाकरी अर चौथो अविवेक।
ऐ च्यारूं भेला हुवै अनरथ करै अनेक॥

२७० भलाभली माता जमी है

(नीचेवाली कहावत देखो)

२७१ भलाभली माता जमी है जका सगळो सैवै

भली तो अेक माता पृथ्वी है जो सब कुछ सहती है।

२७२ भलां ही छुरी खरबूजे पर पड़ो, भलांही खरबूजो छुरी पर पड़ो

चाहे छुरी खरबूजे पर पड़े चाहे खरबूजा छुरीपर पड़े दोनोंका फल अेक ही होता है (अर्थात् खरबूजेको ही हानि पहुचती है)

(१) जब दोनों प्रकारसे अेक ही व्यक्तिको हानि पहुचे

(२) चाहे बलवान गरीबसे वैर करे चाहे गरीब बलवानसे वैर करे—दोनों अवस्थाओंमें गरीबको हानि होती है।

मि०—छुरी खरबूजेपर गिरी तो खरबूजेको जरर।
खरबूजा छुरीपर गिरा तो खरबूजेको जरर॥

२७३ भलोमें भलो माता पिरथी है

सबसे भलो एक वस्तु माता ही है।

(देखो ऊपर कहावत नं० २७१)

२७४ भलो भलाई बुरो बुराई, कर देखो, रे भाई !

भलाईसे भला और बुराईसे बुरा फल होता है, हे भाई ! करके देखलो।

२७५ भायी जका भायी, लारली छींकै टांग दीजै (पाठान्तर—लटका दो)

जितनी भायी (अच्छी लगी, रुचि हुयी) उतने (रोटे) खाये, बाकी
छींके पर लटका दी।

(१) भाईसे भाईकी बनती नहीं हो तब।

(२) भाई हैं परन्तु आपसमें प्रेम नहीं है।

२७६ भाई ! भिणज्यो सोई, ज्यांमें हँडिया खदबद होई

हे भाई ! वही विद्या पढ़ना जिससे हंड़िया खुदबुद करे (अर्थात पेटभर
मिल सके)

पेट भरनेवाली विद्या पढ़नी चाहिये।

मि०—पढ़िये भैया सोई, जामें हंडिया खुदबुद होई।

२७७ भाई भलां ही मर ज्याव्रो, भाभीरो वट निकळनो जोयीजै

भाई चाहे मर जावो, पर भाभीका घमंड टूटना चाहिये

(१) अपनी बड़ी हानि करके भी दूसरेको दुःख पहुंचाना।

(२) बड़ी हानि सहकर भी जिद कायम रखना।

मि०—हूं मरूं पण तनै रांड कैवा'र छोडूं।

२७८ भाई भूरा, लेखा पूरा

भाई भूरा ! हिसाब पूरा

जब हिसाब बराबर हो जाय।

मि०—न लेना न देना, मगन रहना।

३०५ भींतांरै ही कान हुया करै है

भींतोंके भी कान हुआ करते हैं।

गुप्त रहस्य अेकांतमें भी नहीं कहना चाहिअे। कहना हो तो खूब देखभाल कर लेना चाहिअे कि कोई छिपा हुआ सुन तो नहीं रहा है। तनिक-सी असावधानीसे गुप्तभेद दूसरोंके हाथ पड़ जाते हैं और भारी हानि उठानी पड़ती है।

३०६ भींटोरा जगै जठै दीयैरो उजास देखै

जहां भिंटोरे जल रहे हैं वहां दीपकका उजेला ढूंढ़ता है

(देखो कहावत नं० ३०२)

३०७ भुसै जिका कुत्ता खावै कोनी

भूंकनेवाले कुत्ते काटते नहीं

जो शीघ्र क्रुद्ध हो जाते हैं और बकने लगते हैं वे नुकसान नहीं पहुंचाते, वे प्रायः दिलके साफ होते हैं, बातको मनमें नहीं रखते।

३०८ भूख मीठी क लापसी ?

भूख मीठी है या लपसी ?

भूख मीठी है क्योंकि भूखमें सभी चीजें मीठी लगने लगती हैं।

भूखमें वस्तुके स्वादका ध्यान नहीं रहता।

३०९ भूखा उठावै पण भूखा सुवावै कोनी

(परमात्मा) भूखे उठाता है पर भूखे सुलाता नहीं (सवेरे सब भूखे उठते हैं पर रातको भोजन करके सोते हैं)

परमात्मा सबको खानेको देता है।

३१० भूखा फकीर, धाया अमीर, मर्‍यां पीर

मुसलमान भूखा हो तो फकीर बन जाता है, धनी हो तो अमीर कहलाता है और मर जाता है तो पीर हो जाता है।

३११ भूखा सो रूखा

भूखे आदमीको क्रोध जल्दी [illegible] है

३१२ भूखां भजन न होय, गोपाला ! [illegible]

(१) भूखा आदमी ईश्वर-भजन नहीं कर [illegible] ईश्वर-भजन नहीं सूझता ।

(२) भूखे आदमीसे काम नहीं हो सकता ।

मि०—अल्लाहको भी याद दिलाती हैं रोटियां ।

३१३ भूखी तो ही ईंदी, भागी तोई-डांग

गरीब है तो भी जातिकी ईंदी है और टूट गयी है [illegible] है

३१४ भूखो मारवाड़ी गावै, भूखो गुजराती सूवै

भूखा मारवाड़ी गाता है और भूखा गुजराती सोता है

मि०—भूखा बंगाली भात-भात पुकारता है ।

३१५ भूखो तो धायां ही पतीजै

भूखेको तो पेट भरने पर ही विश्वास होता है, खाली भोजन देनेके वायदोंसे नहीं ।

मि०—भूखा खाये हो पतियाय ।

३१६ भूत को मारै नी, भैराण मारै

भूत नहीं मारता, भय मारता है

भूतके झूठे भयसे डरकर बहुतसे [illegible] है। [illegible] भय मनुष्यको मारता है ।

[illegible]र्थ है

३१७ भूतरी भाईबंदीमें जीवरो [illegible]

भूतको भाईबंदीमें जानका [illegible]

दुष्टके मेलसे हानि होती है ।

३१८ भूल गया रागरंग, भूल गया छकड़ी।
तीन चीज याद रही तेल, लूण, लकड़ी॥

गृहस्थीमें प्रवेश करनेके बाद पहलेके सब रागरंग भूल जाते हैं। दैनिक आवश्यकताओंकी पूर्त्तिकी ही दिनरात चिंता लगी रहती है। गृहस्थाश्रम-की चिंताओंके लिअे।

३१९ भूल-चूक लेणी-देणी

भूल चूक लेनी-देनी

हिसाब करते समय यह कहावत कही जाती है कि कोई गलती रह गयी हो तो मालूम होने पर ठीक कर ली जायगी।

३२० भूवा उघाड़ी फिरै भतीजनै खलको-टोपी जोयीजै

फूफी नंगी फिरती है, भतीजेको कुर्त्ता-टोपी चाहिअे

टि०—फूफी भतीजेको कुर्त्ता-टोपी दिया करती है।

जब अपने पास कुछ नहीं हो और दूसरे मांगें तब

मि०—आप मियां मंगते बाहर खड़े दरवेश

३२१ भूवाजी आपतो सासरै जाय कोनी, भतीजीनें सीख देवै

फूफीजी खुद तो ससुराल जाती नहीं, भतीजीको जानेका उपदेश देती हैं।

जब कोई दूसरोंको उपदेश दे पर स्वयं उसके अनुसार काम न करे।

मिलाओ—(१) पर उपदेश कुशल बहुतेरे।

(२) परोपदेशे पाण्डित्यं सर्वेषां सुकरं नृणाम्।

(३) खुदरा फजीहत दीगरा नसीहत।

(४) आप व्यासजी बैंगण खावै, दूजानैं परमोध बतावै।

३२२ भूवाजीरै सोनैरा सींठ जकैरा भतीजीनें कांई ?

फूफीके सोनेके गहने हैं तो उनसे भतीजीको क्या ?

दूसरेके पास बहुत-कुछ भी हो पर हमारे पास कुछ न हो तो हमें क्या ?

म

मकड़ी जाळैमें फँसगी

मकड़ी जालेमें फँस गयी

जब कोई व्यक्ति आफतमें फंस जाता है तब

मकर-चकररी घाणी, आधो तेल'र आधो पाणी

मकर चकरकी घानी, आधा तेल और आधा पानी

धूर्त्तता और मक्कारीसे भरा व्यापार।

मजा मजेमें लड़का-लड़की नफेमें

विषय-वासना की तृप्तिके साथ साथ संतान की प्राप्ति भी होती है

मजूरीरो मैणो कोनी, चोरी-जारीरो मैणो है

मजदूरीका ताना नहीं, चोरी-जारीका ताना है

मजदूरी करना कोई बुरा काम नहीं।

मढी सांकड़ी, मोडा घणा

मठ छोटा और मोडेबहुत (मोडा=मुंडित, साधु)

जगह थोड़ी, बैठनेवाले बहुत

जगह थोड़ी, रहनेवाले बहुत

मणभररो माथो* हलावै पण टकैभर* जीभ को हलायीजै नी

(पाठान्तर—सिर; पईसैरो

मन भरका सिर हिलाता है पर पैसे भरकी जबान नहीं हिलाता।

जब कोई व्यक्ति किसी कथनका उत्तर जबानसे न देकर

केवल सिर हिलाकर देता है तब।

३३० भैंस बोरौ देख'र चमकै !
भैंस बोरा देखकर चौंकती है !
जो स्वयं कुकर्मी हो वह दूसरों के कुकर्मों पर चौंके तब

३३१ भैंसरी-भैंस सगी हुवै
भैंस भैंसकी सगी होती है
जातिवाले अपने जातिवालों को ही चाहते हैं।

३३२ भैंसरै गाय कांई लागै ?
भैंसके गाय क्या लगे ?
जब दो व्यक्तियोंमें कोई रिश्ता न हो।

३३३ भैंसरो सींग लफोदर नांव
भैंसका सींग और 'लफोदर' नाम
साधारण चीजका अद्भुत और अपरिचित नाम रखा जाय तब

३३४ भोत गयी, थोड़ी रही, सो भी जावणहार
(देखो ऊपर कहावत नं० २४४)

३३५ भोपो मठमें कोयनी
भोपा मठमें नहीं है
रूठे हुअे व्यक्तिके लिअे।
(ऊपर कहावत नं० ३२६ देखो)

३३६ भोळांरा भगवान
भोले आदमियोंके सहायक भगवान होते हैं।

३३७ भोळैं बामण भेड खायी, अब खावै तो राम-दुवाई
ब्राह्मणने धोखेमें भेड़ खा ली, अब कभी खावे तो रामकी दुहाई है
धोखेमें या भूलसे बुरा काम हो गया, अब कभी नहीं होगा।
कोई धोखेमें बुरा काम कर लेता है और पीछे पछताता है तब।

म

३३८ मकड़ी जाळैमें फँसगी

मकड़ी जालेमें फँस गयी

जब कोई व्यक्ति आफतमें फंस जाता है तब

३३९ मकर-चकररी घाणी, आधो तेल'र आधो पाणी

मकर चकरकी घानी, आधा तेल और आधा पानी

धूर्त्तता और मक्कारीसे भरा व्यापार।

३४० मजा मजेमें लड़का-लड़की नफेमें

विषय-वासना की तृप्तिके साथ साथ संतान की प्राप्ति भी होती है

३४१ मजूरीरो मैणौ कोनी, चोरी-जारीरो मैणो है

मजदूरीका ताना नहीं, चोरी-जारीका ताना है

मजदूरी करना कोई बुरा काम नहीं।

३४२ मढी सांकड़ी, मोडा घणा

मठ छोटा और मोडेबहुत (मोडा=मुंडित, साधु)

जगह थोड़ी, बैठनेवाले बहुत

जगह थोड़ी, रहनेवाले बहुत

३४३ मणभररो माथो* हलावै पण टकैभर* जीभ को हलायीजै नी

(पाठान्तर—सिर; पईसैरो)

मन भरका सिर हिलाता है पर पैसे भरकी जबान नहीं हिलाता।

जब कोई व्यक्ति किसी कथनका उत्तर जबानसे न देकर

केवल सिर हिलाकर देता है तब।

३३० भैंस बोरौ देख'र चमकै !

भैंस बोरा देखकर चौंकती है !

जो स्वयं कुकर्मी हो वह दूसरों के कुकर्मों पर चौंके तब

३३१ भैंसरी-भैंस सगी हुवै

भैंस भैंसकी सगी होती है

जातिवाले अपने जातिवालों को ही चाहते हैं ।

३३२ भैंसरे गाय कांई लागै ?

भैंसके गाय क्या लगे ?

जब दो व्यक्तियोंमें कोई रिश्ता न हो ।

३३३ भैंसरो सींग लफोदर नांव

भैंसका सींग और 'लफोदर' नाम

साधारण चीजका अद्भुत और अपरिचित नाम रखा जाय तब

३३४ भोत गयी, थोड़ी रही, सो भी जावणहार

(देखो ऊपर कहावत नं० २४४)

३३५ भोपो मठमें कोयनी

भोगा मठमें नहीं है

रूठे हुअे व्यक्तिके लिअे ।

(ऊपर कहावत नं० ३२६ देखो)

३३६ भोळांरा भगवान

भोले आदमियोंके सहायक भगवान होते हैं ।

३३७ भोळै बामण भेड खायी, अब खावै तो राम-दुहाई

ब्राह्मणने धोखेमें भेड खा ली, अब कभी खावे तो रामकी दुहाई है

धोखेमें या भूलसे बुरा काम हो गया, अब कभी नहीं होगा ।

कोई धोखेमें बुरा काम कर लेता है और पीछे पछताता है तब ।

३५१ मन टट्टू चालै पण पईसा कठै ?

मनका टट्टू तो चलता है पर पैसे कहां ?

मन तो इच्छा करता है पर द्रव्य नहीं।

(ऊपरवाली कहावत देखो)

३५२ मन ना मिलै ज्यांसूँ मिलबो किसोरे ?

लागी प्रीत ज्यांरो तजबो किसो रे ?

जिनसे मन नहीं मिलता उनसे मिलना कैसा और जिनसे प्रेम हो गया उनको छोड़ना कैसा ?

जिनसे मन न मिले उनसे नहीं मिलना चाहिअे

और जिनसे प्रेम कर लिया उनको कभी छोड़ना नहीं चाहिअे।

३५३ मन विनारो पावणो, घी घालूं क तेल ?

बिना मनका मेहमान है उसे घी परोसूं या तेल ?

बिना मनका काम कभी अच्छी तरह नहीं किया जाता।

३५४ मन मिलियांरा मेळा, नहीं तो चल अकेला

मन मिले तो मेला (साथ) करो, नहीं तो अकेले चल दो

जिनसे मन मिल जाय अैसे लोगोंसे हेलमेल रखना चाहिअे,

नहीं तो अकेले रहना अच्छा।

३५५ मन मिलियांरा मेळा, नहीं तो सबसूं भला अकेला

(ऊपर की कहावत देखो)

३५६ मन राजा-सो, कर्म कमेड़ी-सो !

मन राजा जैसा, और भाग्य पंडुखी जैसा ?

मनकी अभिलाषाअें तो बहुत बड़ी, पर भाग्य साधारण।

३४४ मणमें चाळीस सेरई मैदो !

मनमें चालीस सेर मैदा है।
सर्वांश में झूठ

३४५ मणमें चाळीस सेर रो धोखो !

३४६ मणमें आठ पंसेरी री भूल !

मनमें आठ पंसेरीकी भूल !
सर्वांशमें झूठ, रत्ती भर भी सच नहीं ।

३४७ मणमें पंसेरीरी भूल

मनमें पंसेरीकी भूल
बहुत बड़ी भूल । बहुत बड़ा झूठ

३४८ मन खटाईमें दीसै है

मन खटाईमें दिखायी पड़ता है
मनमें कपट जान पड़ता है ।

३४९ मन चंगा तो कठोतरीमें गंगा

मन शुद्ध है तो कठौतीमें ही गंगा है
मन शुद्ध है तो तीर्थ-पूजा आदि बाहरी आडंबरोंकी आवश्यकता नहीं, और मन ही शुद्ध नहीं है तो ये सब आडंबर व्यर्थ हैं ।

३५० मन चालै पण टट्टू को चालैनी

मन चलता है पर टट्टू नहीं चलता
(१) इच्छा होती है पर साधन नहीं ।
द्रव्य न होनेसे इच्छाके अनुसार कार्य नहीं होता ।
(२) वृद्ध और शक्तिहीन पुरुषोंकी विषय-वासनाके लिये ।

३६२ मन होय तो माळवै जाय परो

मन हो तो मालवे चला जाय

काम करनेको मन हो तो फिर मनुष्य कठिन काम भी कर लेता है।

३६३ मनै न म्हारै जायैनै, दे खाटरै पायैनै

यदि मुझे या मेरे लड़केको नहीं देते तो चाहे खाटके पायेको दो

कोई चीज अपने काम न आवे तो अपनी बलासे चाहे जहां जाय।

३६४ मर ज्याव़णो पण बात राखणी

मर जाना पर बात रखनी चाहिये।

(१) वचनसे कभी नहीं टलना चाहिये चाहे मरना ही पड़े

(२) कीर्त्ति कर जाना चाहिये चाहे प्राण देना पड़े

३६५ मर ज्यावणो पण दळियो नहीं खाव़णो

मर जाना पर दलिया नहीं खाना

चाहें मरना पड़े पर पेट भरनेके लिये नीच काम नहीं करना चाहिये

मि०—(१) लंघण कर लंकाळ, सादूळो भूखो सुवै।
कुळ-वट छोड कपाळ, पैंड न देत, प्रतापसी॥

(२) सिंह-बचा जो लंघणा तोय न घास चरंत

३६६ मरणनै ही व़खत* कोनी (पाठान्तर—फुरसत)

मरनेको भी समय नहीं

जब कोई बहुत काममें लगा होता है तब

३६७ मरणरा किसा गाडा जूतै है ?

मरनेको कौनसे गाड़े जुतते हैं ?

मौत न जाने कब आ जाय। उसके लिये कोई तय्यारी नहीं की जाती।

३५७ मनरा लाडू खावै

मनके लड्डू खाता है

(१) झूठी आशाअें करना

(२) पूरे न हो सकनेवाले ऊंचे-ऊंचे मनोरथ करना

मि०—To build castl es in the air

३५८ मनरा लाडू खावणा तो कसर क्यूं राखणी ?

मनके ही लड्डू खाना तो फिर कमी क्यों रखना (फिर तो पेट भर खाना चाहिअे ।

(नीचेवाली कहावत देखिये)

३५९ मनरा लाडू खावणा तो पेट भर खावणा

मनके लड्डू ही खाना तो फिर भरपेट खाना चाहिअे

जब मनोरथ करना ही है तो फिर तुच्छ मनोरथ क्या करना ।

३६० मनरै हार्‌यां हार है, मनरै जीत्यां जीत

मनके हारे हार है, मनके जीते जीत

जय-पराजय या सफलता-असफलता मन पर ही निर्भर है ।

मनमें उत्साह हो तो सफलता मिलती है और मन ही हिम्मत हार जाय तो असफलता निश्चित है । इसलिअे मनोबल रखना चाहिअे ।

मि० —(१) मनके हारे हार है मनके जीते जीत ।
पारब्रह्मको पाइये मनहीकी परतीत ॥
(२) मन अेव मनुष्याणां कारणं बंध-मोक्षयोः ॥

३६१ मनसूं ही गधेरो नांव मोवनियो !

मनसे ही (जबर्दस्ती) गधेका नाम मोहनिया !

इसका निकास इस प्रकार है—केहरीसिंह, देवीसिंह, छत्रसिंह और दौलतसिंह मारवाड़-नरेश महाराजा विजयसिंहके सरदार थे जो राज-विद्रोही हो गये थे। उनने महाराजाको बहुत कष्ट दिया। महाराजाके गुरु आत्मारामजी संन्यासी थे। उनने कहा कि तुम्हारा कष्ट मैं अपने साथ लेता जाऊंगा। थोड़े दिनोंमें आत्मारामजी का देहान्त हो गया। सरदार लोग उन्हें मिट्टी देनेको किलेमें अेकत्र हुअे। उपर्युक्त सरदार भी आये। उनको उसी समय घेर कर पकड़ लिया गया। इस पर किसी कविने यह दूहा कहा—

केहर देवो छत्रसो दोलो राजकंवार।
मरतै मोडै मारिया चोटी आला च्यार॥

३७५ मरतो तरळा खावै

मरता हुआ टिल्लेबाजी करता है

व्यक्ति मिथ्या चेष्टा पर।

३७६ मरतो मलार गावै

मरता हुआ मलार गाता है

शक्ति न होनेपर भी काम करनेकी डींग मारता है।

३७७ मरद तो अेकदंता ही भला

मर्द तो अेक दांतवाले ही अच्छे

जिसके दांत टूट जाते हैं वह हंसीमें ऐसा कहता है।

३७८ मरदां मरणा हक्क है, रोणा हक्क न होय

मर्दोंके लिअे मरना न्याय है, रोना न्याय नहीं
मर्द विपत्ति पड़ने पर रोते नहीं, उससे जूझ जाते हैं।

३७९ मरिया मरिया लेखै लाग, जीवै जका खेलै फाग

मरे-मरे व्यक्ति लेखे लगे और जो जीते हैं वे फाग खेलते हैं
मरे सो गये, बाकी मौज उड़ाते हैं।

३६८ मरतां किसा गाडा जूतै ?

मरते हुअे कौन गाड़े जुतते हैं ?

(ऊपर की कहावत देखिये)

३६९ मरतां मौत विगाड़ीजै

मरते-मरते मौत विगाड़ी जाती है

जब कोई विना सामर्थ्यका काम करता है तब ।

३७० मरती क्या न करती ?

मरती हुई क्या नहीं करती ?

(१) मरता हुआ मनुष्य क्या नहीं करता—बुरे-से-बुरा काम भी कर डालता है

(२) जो मरनेको तय्यार है वह कठिन-से-कठिन कार्य से भी नहीं डरता

३७१ मरतैआळी डाचल्यां मारै

मरते हुअे मनुष्यके (समान) मुंह मारता है

थोड़ी वातके लिअे वहुत लालच करना ।

३७२ मरतैनै सं मारै

मरते हुअेको सब मारते हैं

दुर्बल या गरीबको सब सताते हैं ।

३७३ मरतैरै सागै मरीजै कोनी

मरतेके साथ मरा नहीं जाता

३७४ मरतै मोडै मारिया चोटीआळा च्यार

मरते हुअे मोडे (संन्यासी) ने चार चोटीवालों (अमुंडितों) को मार डाला

जब कोई अपनी हानिके साथ दूसरे कइयोंकी हानि करा दे तब ।

इसका निकास इस प्रकार है—केहरीसिंह, देवीसिंह, छत्रसिंह और दौलतसिंह मारवाड़-नरेश महाराजा विजयसिंहके सरदार थे जो राज-विद्रोही हो गये थे। उनने महाराजाको बहुत कष्ट दिया। महाराजाके गुरु आत्मारामजी संन्यासी थे। उनने कहा कि तुम्हारा कष्ट मैं अपने साथ लेता जाऊंगा। थोड़े दिनोंमें आत्मारामजी का देहान्त हो गया। सरदार लोग उन्हें मिट्टी देनेको किलेमें अेकत्र हुअे। उपर्युक्त सरदार भी आये। उनको उसी समय घेर कर पकड़ लिया गया। इस पर किसी कविने यह दूहा कहा—

केहर देवो छत्रसो दोलो राजकंवार।
मरतै मोडै मारिया चोटी आला च्यार॥

३७५ मरतो तरळा खावै

मरता हुआ टिल्लेबाजी करता है

व्यक्ति मिथ्या चेष्टा पर।

३७६ मरतो मलार गावै

मरता हुआ मलार गाता है

शक्ति न होनेपर भी काम करनेकी डींग मारता है।

३७७ मरद तो अेकदंता ही भला

मर्द तो अेक दांतवाले ही अच्छे

जिसके दांत टूट जाते हैं वह हंसीमें ऐसा कहता है।

३७८ मरदां मरणा हक्क है, रोणा हक्क न होय

मर्दोंके लिअे मरना न्याय है, रोना न्याय नहीं

मर्द विपत्ति पड़ने पर रोते नहीं, उससे जूझ जाते हैं।

३७९ मरिया मरिया लेखै लाग, जीवै जका खेलै फाग

मरे-मरे व्यक्ति लेखे लगे और जो जीते हैं वे फाग खेलते हैं

मरे सो गये, बाकी मौज उड़ाते हैं।

३८० मरी क्यूं ? सांस को आयो नी

अेकने पूछा—मरी क्यों ? दूसरा उत्तर देता है—सांस नहीं आया इसलिअे ।

३८१ मरै न मांचो छोडै

(१) न मरता है न खाट छोड़ता है (चंगा होता है)

(२) मरे तो कहीं जाकर खाट छोड़े (और हमारा पिंड छूटे)

बूढ़ेके लिअे जिसकी सेवा करते-करते घरवाले थक जाते हैं

(३) जब किसीसे पिण्ड नहीं छूटता हो तब

(४) मरेंगे तभी खाट छोड़ेंगे

मरनेपर ही किसी कामका पिंड छोड़ेंगे

जो दूसरोंको अनिच्छाकी पर्वाह न करके किसी स्थानपर डटा रहे उसके लिअे

३८२ मर्‌यां तांईरा नातो है

मरे तकका नाता है

(१) सांसारिक संबंध मरने तक ही हैं, बादमें कोई किसीका नहीं ।

(२) मरनेके बाद सब भूल जाते हैं ।

३८३ मर्‌यां पछै कुण देखणने आवै

मरनेके बाद कौन देखने आता है ?

(१) मरनेके बाद कोई काम हो तो व्यर्थ है

(२) कोई मरे हुअेको बुराई करे तब

(३) मरनेके बाद उसके साथ चाहे जैसा व्यवहार करो

३८४ मर्‌यां पछै कुण देख्यो है ?

मरनेके बाद किसने देखा है ?

मरनेके बाद न जाने क्या हो ?

मरनेके बादका हाल कौन जानता है ?

३८५ मर्‌योड़ा दाव्र तो ढेढ ही घींसैला

मरे हुअे जानवरोंको तो ढेढ़ (चमार) ही घसीटेंगे

(१) कुत्सित कार्य नीच पुरुष ही किया करते हैं

(२) जो जैसा होता है वह वैसा ही कार्य करना पसन्द करता है।

३८६ मर्‌योड़ां लारै मरीजै थोड़ो ही

मरे हुओंके पीछे मरा थोड़े ही जाता है

कोई आदमी किसी मृत संबंधीके पीछे बहुत दुःख करे तब।

३८७ मसाणां गयोड़ा मुड़दा आगै ही पाछा आया हा ?

श्मसान गये हुअे मुर्दे आगे भी कभी लौटे थे ?

श्मसान पर गये मुर्दे फिर नहीं लौटे।

३८८ मसाणां गयोड़ा लाकड़ा कदे ही पाछा आया हा ?

श्मसान पर गया हुआ काठ कभी लौट कर आया ?

नीचों को सौंपी हुई वस्तु कभी वापिस नहीं मिलती।

३८९ मसाणां में मोठैरो सव्राद जोयीजै

श्मसानमें मोठेका स्वाद चाहिअे

जो कुछ मिल गया उसे ही गनीमत समझो।

३९० मसाणां रै लाडव्रांमें इळायचीरो सव्राद जोयीजै

श्मसानके लड्डुओंमें इलायचीका स्वाद चाहिअे

(ऊपर की कहावत देखिये)

३९१ मंगतैसूं कोई गळी छानी कोनी

मंगते से कोई गली छिपी नहीं

बहुतसे रास्तों को जानने वाले मनुष्य के प्रति हंसी में ऐसा कहा जाता है।

३६२ मा आवै, दही-बाटियो लावै

मा आवेगी, दही-बाटी लावेगी

किसीकी प्रतीक्षा करते रहना।

इसका निकास इस कहानीसे है—अेक स्त्री थी जिसके अेक छोटा बच्चा था। अेक बार भयंकर अकाल पड़ा तो उसके लिअे बच्चे को पालना कठिन हो गया। तब वह जंगलमें गयी और बच्चे को अेक पेड़के खोखलमें लिटा दिया और कहा - बेटा! मैं तेरे लिअे दही-बाटी लाने जाती हूं। यह कहकर चली गयी। बच्चा बराबर पुकारता रहता—मां आवेगी, दही-बाटी लावेगी। भगवानने उसकी पुकार सुनी और उसके अगूठेमें दूध उत्पन्न कर दिया जिसे वह चूसता रहता। यों करते अकाल बीत गया। मांने सोचा कि बच्चेको देख आऊं—जीता है या मर गया। मां आयी तो उसने बच्चे को ज्यों-का-त्यों पाया। बच्चे ने कहा—मां! दही बाटी लायी? मांने कहा-बेटा! लायी तो नहीं, अब लाती हूं। यह कहकर दही-बाटिया लाने चल दी। मनमें सोचा—जब इतने दिन नहीं मरा तो अब दो-चार दिनमें क्या मरेगा? भगवानने सोचा देखो, मैंने इसके बालकको इतने दिनों तक पाला पर इसे अभी भी कोई पर्वाह नहीं, अब तो सुकाल आ गया, अब मैं क्यों पालूं? बस दूधका आना बंद हो गया और बालक मर गया। मां कुछ दिनोंके बाद दही-बाटी लेकर आयी तो बच्चेको मरा पाया।

फेफरदेसर गांवके मार्ग में 'बालकिये रो धोरो' प्रसिद्ध है जहां इसी प्रकार की घटना घटी थी "यायी आमा, दही बाटियोलासी" वह बच्चा मरकर पितर हुआ जो बड़ा चमत्कारिक और पथिकों का मार्गदर्शक था।

३६३ माईतांरी गाळ्यां घीरी नाळ्यां

मा-बापकी गालियां घीकी नालियोंके समान हैं

बड़ोंकी गालियां (कठोर वचन) हितकारी होती हैं

३९४ माई नांऊसूं खाई प्यारी

माता की अपेक्षा खाया हुआ ज्यादा प्यारा होता है

जो खिलाता है वह मातासे भी अधिक प्यारा लगता है।

जिससे स्वार्थ निकले वह संबंधियोंसे भी अधिक प्यारा होता है—उसीका लोग सबसे ज्यादा ध्यान रखते हैं।

३९५ माई ! माई ! भोत वियाई

ए माई ! ए माई !! अन्यत्र बहुत बियाई हुई है (तुम्हारे अतिरिक्त और बहुत सी माताओं ने पुत्र जने है)

एक जगह से कार्य सिद्धि नहीं हुई तो और बहुत सी जगहोंसे हो सकती है।

३९६ मा करै सो धी करै

जो माता करती है वही बेटी करती है

सन्तान माताके अनुसार होती है।

३९७ मा खेतमें, पूत जनेतमें

माता खेतमें, बेटा बरातमें

कुसुम या कसुमेके लिओ जिससे कुसुमी रंग बनता है।

कुसुमका पौधा खेतमें होता है और उससे उत्पन्न कुसुमी रंग काम आता है, बराती कुसुमी रंगके वस्त्रादि पहनते हैं।

३९८ माख्यां मार'र तीसमारखां बण्या है

मक्खियां मारकर तीसमारखां बने है

व्यर्थ शेखी मारने वाले पर।

३९९ माढपुरा मथुरा नगरी, आधा मोदी आधा खतरी

माडपुरा मथुरा जैसा नगर है, उसमें आधे मोदी और आधे खत्री हैं

माडपुरा=बीकानेरके एक स्थान (लक्ष्मीनाथजी की घाटी) का पुराना नाम।

४०० माणै जकांरा माल

जो भोगते हैं उन्हींके माल हैं

संपत्ति उन्हीं की है जो भोगते हैं, कमानेवालोंकी नहीं।

४०१ माताजी मठमें वैठी ही गटका कस्या है, वाणियैर धकै क्रो चढीनी

माताजीने मंदिरमें वैठे-वैठे ही मौजसे वलि-भोजन को गटका है, किसी बनियेके धक्के नहीं चढ़ो।

भोले-भाले व्यक्तियों को सतानेवाले के प्रति

इसका निकास इस कहानी से है—

एक बनिये ने किसी कार्यके लिए भैरूजी को मान्यता की, कार्य सिद्ध होने पर संकल्पित भैंसेको वलि के लिअे लाकर भैरवमूर्त्ति से वांध दिया क्योंकि वह अहिंसावादी पशुवध कैसे करता। भैंसा भैरव मूर्त्ति को लेकर भगा, पासही माताजी का मठ (देवी का मन्दिर) था, देवी हँसी, भैरव ने रुष्ट होकर उपर्युक्त कहावत कही। किसी जबरदस्त से पाला पड़ने पर इस कहावत का उपयोग किया जाता है।

४०२ मातो देख'र डरणो नहीं, पतलो देख'र अड़नो नहीं

मोटा ताजा आदमी देखकर उससे डरना नहीं चाहिअे और पतले आदमीको देखकर उससे अड़ नहीं जाना चाहिअे।

मोटे आदमी हमेशा बलवान् नहीं होते और न पतले आदमी हमेशा कमजोर।

४०३ माथेमें गिज, कांकरांमें कलाबाजी खावै

माथेमें गज और कंकरोंमें गुलाचियां खाता है

असमर्थ व्यक्ति शक्ति से ऊपर कार्य करने की चेष्टा करे तब।

४०४ माथेमें दियो गोट बोलै

माथे पर मारनेसे गोट बोलती है

माथेमें कुछ भी नहीं है।

४०५ माथै रो भार पगां नै

सिरका भार पैरों को ही ढोना होता है

करजा लेने वाले को चेतावनी ।

४०६ माथैरी पागड़ी बगल में लियां पछै कांई डर ?

माथेकी पगड़ी बगलमें लिये पीछे क्या डर ?

लज्जा छोड़ देनेपर किसी बातका भय नहीं रहता ।

४०७ माथो ऊखली में दियां पछे घावों रौ काई डर

सर ऊखली में डाल देने पर घावों का क्या डर

खतरे के काम में हाथ डालने पर नुकसान से नहीं डरना चाहिए ।

४०८ माथो मसाला मांगै है

माथा मसाले मांगता है

मार खाना चाहता है, मार खानेकी मनमें आ रही है ।

४०९ माथो मूंड्यो तो मनमें मूंड नहीं तो पड़सी नरक की कूंड

माथा मुंडाया है तो मनको भी मुंडा नहीं तो नरक कुंडमें पड़ोगे

मन वशमें नहीं किया तो साधू होनेसे क्या लाभ ।

४१० माथो मोटो, घरमें टोटो

सिर मोटा, घरमें टोटा

मोटे सर वाला व्यक्ति भाग्यवान समझा जाता है, जब वैसे पुरुष के घरमें भी टोटा हो तब ऐसा कहा जाता है ।

४११ माथो मूंडयां जती नहीं, आधो ओढयां सती नहीं

माथा मुंडवा लेनेसे ही कोई यती नहीं हो जाता और आधा वस्त्र ओढ़ लेनेसे ही कोई सती नहीं हो जाती ।

४१२ मादलियो मार्‌यो'र गोठ बिखरी

मादलिये को मारा और गोष्ठी बिखर गयी

जब किसी व्यक्ति के न रहने पर कार्य अस्तव्यस्त हो जाय तब।

टिप्पणी—मादलिया अेक भील सरदार था।

४१३ मान मनाया खीर न खाया, अैंठा पातल चाटण आया

सम्मानके साथ मनाया तब तो खीर भी नहीं खायी और अब जूठे पतल चाटनेको आ पहुंचे

आदरपूर्वक करनेको कहा तब तो काम नहीं किया, अब बेइज्जती के साथ वही काम करता है।

४१४ मानें तो देव, नहीं तो भींतरा लेव

यदि कोई (देवताओंको) माने तो देवता हैं नहीं तो भींतके लेवड़े हैं

४१५ मा पर पूत, पितापर घोड़ा बो'त नहीं तो थोड़ा-थोड़ा

पुत्र माता जैसा होता है और घोड़ा पिता जैसा।

४१६ मा-पोटी कहो भावें, बाप-पोटी कहो

मां-पोटी कहो चाहे, बाप-पोटी कहो

दोनोंका तात्पर्य अेक ही है, केवल कहनेका फर्क है।

४१७ मा-बाप! थांरी बेटी म्हारी बेटेनें परणाय दो

एक महतरानीका अपने मालिक से कथन—मां-बाप! अपनी लड़की मेरे लड़केसे ब्याह दो।

मतलब मर्जीसे साधारण आदमी का भी हौसला बढ़ जाता है।

धन पाकर छोटा आदमी अनुचित बातें कहने या करने लगे तब।

इस कहावतसे मिलती हुई कहावतें हैं—

अेक गांवमें अेक ठाकुर था । उसके यहां अेक महतरानी थी जो बड़ी सोधी थी पर जब वह द्वार पर आकर खड़ी होती तो बड़े ठाठसे कहती —मां-बाप* ! अपनी लड़की मेरे लड़केको ब्याह दें । जब वह उस जगह से हटती तो फिर वैसी ही सोधी हो जाती । अेक दिन ठाकुरने कहा—बात क्या है ? इस जगहमें कोई विशेषता होनी चाहिअे, इसको खोदो । खोदा तो नीचे मुहरोंसे भरा अेक चरू निकला । ठाकुरने कहा बस, यही कारण है, इसीकी गर्मीसे महतरानी अैसी बातें कहती है । ठाकुरने चरू उठवा कर भीतर रख लिया । तबसे महतरानीका वैसा बोलना भी बंद हो गया ।

४१८ मा-बाप मीठा मेवा है

मां-बाप मीठे मेवे हैं मां-बाप बड़े हितकारी हैं ।

४१९ मा भठियारी, पूत फतैखां

मां भठियारी और बेटा फतहखां

हैसियतके प्रतिकूल कार्य करनेवाले व्यक्तिके लिअे ।

४२० मा मरी, बेटी हुई, रह्या तीन-रा तीन

मां मर गयी तो बेटी जनम गयी, इस प्रकार तीन-के-तीन ही रहे

अेक ओरका घाटा दूसरी ओरसे पूरा हो जाय तब ।

मि० –(१) बाप मरा घर बेटा भया, इसका टाटा उसमें गया ।

(२) बाबा मरे, निहालू जनमे, वही तीन-के-तीन ।

(३) बाबो मर्यो गीगली जायी रेया तीन रा तीन ।

४२१ मामेरो ब्यांव मा पुरसगारी, जीमा बेटा रात अंधारी

मामेका ब्याह, मां परोसनेवाली और अंधेरी रात, बस फिर क्या चाहिअे, बेटा ! खूब जीमो ।

जब सभी बातें अनुकूल हों ।

---

* राजस्थानमें महतर अपने जजमानों को मां-बाप कह कर संबोधन करते हैं ।

४२२ मामैरै कानमें मुरकी, भाणजो भार्‌यां मरै

मामेके कानोंमें बाली और भानजा भार मरे
जो दूसरेके धन पर घमंड करे उसके लिये ।
मि० –मामूके कानमें बालियां, भानजा अैंडा-अैंडा फिरै ।

४२३ मायड़को मन धीयड़सूं, धीयड़को मन धींगासूं

माताका मन (प्रेम) बेटीसे और बेटीका मन शोहदोंसे ।
मि०—(१) मा चाहै बेटीको, बेटी चाहै मोटे धींगको ।

४२४ माया कनै माया आवै

मायाके पास माया आती है
धनवानके पास धन आता है ।
मि०—Money breeds money.

४२५ माया गंठ, विद्या कंठ

माया (धन) जो गांठमें हो और विद्या जो कंठमें हो (वही काम आता है) ।
मि०—(१) पुस्तकस्थातु या विद्या परहस्तगतं धनम् ।
(२) नाणो आंट'र विद्या कंठ

४२६ माया थारा तीन नाम, परस्या परसू परसराम

हे धन, तेरे तीन नाम हैं—अेक परसिया, दूसरा परसू और तीसरा परशुराम
मनुष्यका आदर धनके अनुसार होता है—जब धन नहीं होता तो लोग पर-
सिया कहकर पुकारते हैं, जब कुछ धन हो जाता है तो परसा कहने लगते
हैं और जब और ज्यादा धन हो जाता है तो परसराम कहा जाता है ।

४२७ मायामें भै, कायामें नहीं

धनमें भय होता है, शरीरका कोई भय नहीं
पासमें धन हो तो हर समय और हर स्थान पर भय बना रहता है कि कहीं
[illegible] कोई भय नहीं होता—
[illegible] ।

४२८ मायासूं माया मिलै कर-कर लांबा हाथ

मायासे माया लंबे हाथ कर-करके मिलती है।

धनवान, धनवानका आदर करते हैं, गरीबोंका नहीं।

४२९ मारणों तो मीर ही मारणो

मारना हो तो किसी मीर (बड़े व्यक्ति) को ही मारना चाहिये।

काम करना हो तो बड़ा ही करना चाहिअे।

४३० मारवाड़ मनसोबे डूबी

मारवाड़ मनसूबांमें डूबी।

मारवाड़के लोग मनसूबे ही बांधते रहते हैं, करके कुछ भी नहीं दिखाते।

मिलाओ—मारवाड़ मनसोबे डूबी पूरब डूबो गाणे सें।

खानदेस खुरदै सें डूब्यो दक्खण डूबी खाणे सें।

४३१ मार, विद्या-सार

(गुरुकी) मार विद्याका सार है।

(१) गुरुकी मार विद्या देनेवाली होती है इससे उसका बुरा नहीं मानना चाहिअे।

(२) बिना मारके विद्या नहीं आती।

मिलाओ—Spare the rod & spoil the child.

४३२ मारसूं भूत भागे

मारसे सब डरते हैं।

मार पड़नेसे बड़े-बड़े बदमाश भी सीधे हो जाते हैं।

४३३ मारै र रोवण को दै नी

मारता है और रोने नहीं देता

जबर्दस्त या अत्याचारीके लिअे।

४३४ मारै सो मीर

जो मार लेता है वही मीर है।

जो काम कर लेता है वही श्रेष्ठ है।

४३५ मांरै पेटमें सीख र कोई को आयो नी

माताके पेटमें सीखकर कोई नहीं आया।

काम सीखने ही से आता है अपने-आप नहीं।

४३६ माल माथैं जगात है

माल पर जकात है (जिसके पास माल होता है उसीको जकात देनी पड़ती है)

४३७ मालैरा मढै वीरमरा गढै

मालाजीके वंशज मढ़ियोंमें और वीरमजीके गढ़ोंमें रहेंगे।

राव मालोजी या मल्लीनाथजी मारवाड़के राजा थे और वीरमदेवजी उनके छोटे भाई। मालोजीके बाद उनका राज्य तो उनके वंशजोंमें बंटकर टुकड़े-टुकड़े हो गया और वीरमजीके पुत्र चूंडोजीने मंडोर जीत कर अेक नया राज्य कायम किया। वर्त्तमान जोधपुरके महाराजा राव चूंडोजीके वंशज हैं। इस प्रकार मारवाड़ अधिपति तो वीरमजीके वंशज हुअे और मालोजीके वंशज झोंपड़ियोंके निवासी बन गये।

४३८ माला फेरयां हर मिलै तो हूं फेरूं झाड़

माला फिरानेसे ही यदि भगवान मिल जायँ तो मैं माला क्या, झाड़को ही फेरने लगूं, जिसके फूलोंसे माला बनती है।

मन शुद्ध और पवित्र नहीं तो माला फिराना व्यर्थ है।

मिलाओ—माला फेरे हरि मिलैं बंदा फेरै झाड़।

४३६ माळी' र मूला छीदा ही भला

माली और मूली विरल ही अच्छे।

खेतमें मूली बिल्कुल पास बोनेसे फसल अच्छी नहीं होती और माली अेक साथ रहें तो अनर्थ करते हैं।

४४० माली सींचै सो घड़ा रुत आयां फल होय
धीरे धीरे ठाकरां धीरे सब कुछ होय

माली चाहे सौ घड़े ही पानी क्यों न सींचे पर फल ऋतु आने पर ही लगता है।

काम धीरे-धीरे ही होता है, अनावश्यक उतावली करनेसे वह जल्दी नहीं हो जाता।

४४१ मांगण गया स मर गया, मरया स मांगण जाय
उससे पहले वो मुआ जो होते ही नट जाय

जो मांगने गये वे मर गये, जो मरे हुअे (मनस्विता-हीन) हैं वे ही मांगने जाते हैं पर वह उससे पहले मर गया जो होते हुए भी न दे।

मांगनेकी एवं सूमकी निंदा।

मिलाओ—(१) मांगन मरन समान है मत कोई मांगो भीख।
(२) मांगन गयो सो मर गये, मरे सो मांगन जाहिं।

४४२ मांग-तांग छाछा लायी, सिवजीनै छांटो

मांग-मूंगकर छाछ लायी और शिवजीको छींटा

४४३ मांग्या मिलै रे माल, जकांरै कांई कमी रे लाल!

जिनको माल मांगे ही मिल जाता है उनको क्या कमी हो सकती है?

मांगकर काम चलानेवालेको क्या कष्ट हो सकता है? कष्ट तो उन्हें होता है जो परिश्रम करके प्राप्त करते हैं।

४४४ मांग्यासूँ तो मौत ही को आवै नी

मांगनेसे तो मौत भी नहीं आती

इच्छा की हुई वस्तु नहीं मिलती।

४४५ मांग्योड़ी मौत ही का मिलै नी

मांगी हुई मौत भी नहीं मिलती।

(१) जब कोई बहुत निराश हो जाय या जीनेसे ऊब जाय

(२) मांगनेसे और तो क्या मौत भी नहीं मिलती अतः मांगना बुरा है।

(ऊपरवाली कहावत देखिये)

४४६ मांटीड़ो निरभाग, ज्यांरी बैर रो अभाग

पति भाग्यहीन है तो उसकी स्त्रीका अभाग्य है

पति भाग्यहीन होता है तो स्त्रीको कष्ट उठाने पड़ते हैं।

४४७ मांटीनै रोवै बैठी-बैठी, रिजकने रोवै ऊभी-ऊभी

पतिको बैठी-बैठी रोती है और रिजकको खड़ी-खड़ी

पतिसे भी जीविका प्यारी होती है।

४४८ मांटी मस्यौरो फिकर नहीं, सपनो साचो हुयो जोयीजै

पतिके मरनेका फिक्र नहीं, पर सपना सच्चा होना चाहिये

अपनी बुराई भले ही हो पर हठ नहीं छोड़ना।

४४९ मांटीरी मारी और राजरी डंडी रौ कांई मैणो ?

पतिने मार दिया और राजने दंड दिया तो इसमें क्या ताना।

४५० मांय-रा-मांय, बारै-रा-बारै

भीतर-के भीतर और बाहर-के-बाहर

(१) जो दोनों और मिला रहे

(२) जो दोनों ओरसे लाभ उठावे।

४५१ मिनकी दूध पीवै नहीं तो ढोळ तो देवै

बिल्ली दूध पीती नहीं तो गिरा तो देती है

दुष्ट आदमी व्यर्थ दूसरों की हानि करते हैं ।

४५२ मिनकी दूध पीवती आंख्यां मींचै

बिल्ली दूध पीते हुअे आंखें मूंदती है

४५३ मिनकीरै पेटमें घी थोड़ो ही खटावै

बिल्लीके पेटमें घी थोड़े ही खटता है (रह सकता है, पच सकता है)

छिछोरे व्यक्तियोंके पेटमें बात नहीं रहती, वे उसे सबसे कहते फिरते हैं ।

४५४ मिनकीरै भागरा छींको टूट्यो

बिल्लीके भागका छींका टूटा

(१) जब संयोगसे कोई कार्य हो जाय ।

(४) जब संयोगसे तुच्छ आदमीको कोई बड़ी वस्तु मिल जाय ।

४५५ मिनख कमावै च्यार पोर, ब्याज कमावै आठ पोर

मनुष्य केवल चार पहर (अर्थात् केवल दिनमें) कमाता है पर व्याज आठों पहर (अर्थात् दिन-रात) कमाता रहता है ।

व्याज दिन-रात चढ़ता रहता है अतः रकमको व्याज पर लगाना अधिक लाभदायक है ।

मिलाओ—(१) व्याज और भाड़ा दिन-रात चलता है ।

(२) व्याजके आगे घोड़ा नहीं दौड़ सकता ।

४५६ मिनख मजूरी देत है, क्या देवेगो राम ?

मजदूरी तो मनुष्य भी देता है परमात्मा क्या देगा ? अर्थात् सब कुछ देगा ।

४५७ मिनख मजूरी देत है, क्या राखै ला राम ?

जब मनुष्य भी मजदूरी देता है तो क्या राम नहीं देगा ?

४५८ मिनख मार हाथको धोवेनी

मनुष्यको मारकर हाथ नहीं धोना ।

निर्दयी या दुष्टके लिअे ।

४५९ मिनखरो काम मिनखसूँ पड़ै

मनुष्यका काम मनुष्यसे पड़ता ही है । इसलिये किसी मनुष्यको तुच्छ समझकर उपेक्षा नहीं करना चाहिये । सभीको सहायता करनी चाहिअे क्योंकि दूसरोंको सहायताकी आवश्यकता खुदको भी पड़ेगी ।

४६० मिनखरो मिनखसूँ सो बार काम पड़ै

मनुष्यका मनुष्यसे सैकड़ों बार काम पड़ता है ।

(ऊपरवाली कहावत देखिये)

४६१ मिनखांमें नाई, पखेरुवांमें काग

पाणी मायलो काछबो, तीनूं दगैबाज

मनुष्योंमें नाई, पक्षियोंमें कौआ और जलवालोंमें कछुआ- तीनों दगाबाज होते हैं ।

मिलाओ—नराणां नापितो धूर्त्तः पक्षिणां चैव वायसः ।

४६२ मिनखांरी माया, रूंखांरी छांया (पाठान्तर—दरखतरी)

मनुष्योंको ही सब माया है और रूंखों ही की छाया है ।

मनुष्योंके कारण ही सब चहल पहल है । घरमें बहुत-से मनुष्य हों तभी शोभा है ।

४६३ मिनखांरी माया है

(ऊपरवाली कहावत देखिये)

४६४ मिन्नी केदार कांकण पहर्यो !

बिल्लीने केदारजीका कंकन पहना !

जन्म भरका कपटी और धूर्त्त जब महात्मा बने तब। असे आदमी विश्वास करने योग्य नहीं होते !

४६५ मिन्नी तीरथां न्हा'र आई

बिल्ली तीर्थोंमें नहाकर आई।

(१) दुष्ट आदमी ऊपरसे महात्मा बन जाय तो भी विश्वासके योग्य नहीं।

(२) कोरी तीर्थ यात्रासे कोई महात्मा नहीं हो सकता।

(ऊपरवाली कहावत देखो)

४६६ मिन्नीरी चाल जावणो, कुत्तैरी चाल आवणो

बिल्लीकी चाल जाना, कुत्तेकी चाल आना।

कार्य करनेको जाते समय बिल्लीकी भांति चुपचाप तथा सावधानी पूर्वक जाना चाहिअे और काम करके आते समय कुत्तेकी भांति जल्दीसे आ जाना चाहिअे।

४६७ मिन्नीरो कोठारियो ढकूँ कन खोलूँ ?

बिल्लीकी कोठरी—इसे ढकूं या खोलूं ?

जब कोई तुच्छ आदमी इतरा कर बार बार अपनी चीजको दिखानेके लिअे खोले और बन्द करे।

४६८ मिन्नीरो गू चोकै-पोतैमें ही कामको आवैनी

बिल्लीका गू चौका पोतनेके काममें भी नहीं आता।

सर्वथा निकम्मे व्यक्ति या वस्तुके लिअे।

मिलाओ—बिल्लीका गू लीपनेका न पोतनेका।

४८१ मियेंजीरी दोड़ मसीत ताणी

मियांकी दौड़ मसजिद तक

जिस आदमीमें थोड़ी ही सामर्थ्य हो उसके लिअे ।

४८२ मियोजी जिलमरा गांडू

मियांजी जन्मके डरपोक

डरपोक या कमजोर आदमीके लिअे ।

४८३ मियेजी मरया पण टांग ऊँची रही

मियांजी मरे पर टांग ऊँची ही रही

अन्त तक अपना हठ रखना ।

४८४ मीठाखाऊ मंद-कमाऊ

मीठा खानेवाला और थोड़ा कमानेवाला

जो कमाता नहीं और मौज करना चाहता है उसके लिअे ।

४८५ मीठी छुरी जहरसूं भरी

कपटीके लिअे ।

४८६ मीठाबोला लोक नै कड़वी-बोली मां

मीठा बोलनेवाले लोग और कडुवा बोलनेवाली माता

(१) कुपथमें जानेपर लोग तो उत्साहित करते हैं पर माता फटकारती है ।

४८७ मीठी रोटी तोड़ै जठीनै ही मीठी

मीठी रोटीको जिधरसे तोड़ो उधर ही मीठी होगी

सज्जन सब प्रकारसे भले होते हैं

कोई काम जो सभी प्रकारसे लाभदायक हो ।

४८८ मीठी वाणी दगावाजरी निसाणी

मीठा बोलना यह दगावाजका लक्षण है

दगावाज मीठी-मीठी बातें करके अपने फंदेमें फँसाता है।

४८९ मीठैरै लालच अँठो खावै

मीठेके लालचसे जूठा खाता है

(१) जिह्वाके स्वादके लिअे बुरा काम करता है

(२) स्वार्थके लिअे खुशामद करनी पड़ती है

४९० मीठो खासी जका खारो ही खासी

जो मीठा खावेंगे वे खारा भी खावेंगे।

(१) जो आनंद मनाते हैं उन्हें दुख भी भोगना पड़ता है

(२) जो लाभ लेते हैं उन्हें हानि भी सहन करनी पड़ती है

४९१ मींडकीनै जुकाम हुयो

मेंढ़कीको जुकाम हुआ

(१) जब छोटा आदमी भी नजाकत दिखावे

४९२ मुखमें राम बगलमें छुरी

कपटी के लिअे।

४९३ मुखे मिष्टा, हि्रदे दुष्टा, व्रात-व्रात ठगोसरी

बणिकपुत्र महापापी, बीस विस्वा महेसरी

मुखमें मीठे पर हृदयमें दुष्ट और बात-बात में ठगोंके सरताज-इस प्रकार बनिये महापापी होते हैं और उनमें भी माहेश्वरी तो बीस विश्वे।

मि०—(१) जाण मारै वाणियो, पिछाण मारै चोर।

(२) वाण्यो मित्र न वेस्या सती।

(३) जल नदियां मिलिया जके मिलिया समंद मँझार
वित कर चढिया वाणियो पूगा समँदां पार
(४) दरसावै जगनै दया पाप उठावैं पोट
हितमें चितमें हाथमें खतमें मतमें खोट
(५) कूड़ कपट माही लई, स्वस्थ को जल सींच
विधि कर रची सुरंग दे, वैश्य जाति नग बीच

४६४ मुदरानैं आदेस है

मुद्रा (साधु-वेश) को नमस्कार है।

यदि कोई व्यक्ति साधुपनसे रहित हो पर साधुका वेश धारण किये हो तो भी उसका आदर किया ही जाता है।

४६५ मुफतका चंदन घस ले लाला तूं भी घस, तेरे बापको बुलाला।

(१) जो मुफ्तके मालका बेरहमीसे उपयोग करे उसके लिये !

(२) मुफ्त मिले मालका उपयोग लोग बेरहमीसे करते हैं।

४६६ मुफत माल बेरहम

मुफ्तका माल मिलने पर दिलमें दया नहीं रहती।

मुफ्तकी चीजको खूब उड़ाया या काममें लाया जाता है।

मि०—(१) माले मुफ्त दिले बेरहम।
(२) मुफत का चंदन घस, ले लाला !
तू भी घस तेरे बापको बुलाला।

४६७ मुफतरी मुरगो काजीजीनैं हलाल

मुफतकी मुर्गी काजीजीको हलाल।

मुफ्तकी चीज सभी ले लेते हैं।

४९८ मुफतरो खावणो, मसातमें सोवणो

मुफ्तका खाना, मसजिदमें सोना ।

निकम्मोंके लिअे ।

४९९ मुनी जिता ही मत

जितने मुनि उतने ही मत ।

(१) सबकी राय भिन्न-भिन्न होती है !

(२) अनेक संप्रदाय हैं, धर्म अनन्त हैं ।

(३) जब किसी जातिमें या समाजमें अेकता न हो ।

मि०—(१) भिन्नरुचिर् हि लोकः

(२) मुंडे-मुंडे मतिर् भिन्ना

(३) श्रुतिर् विभिन्नाः स्मृतयो विभिन्ना ।

नैको मुनिर् यस्य वचः प्रमाणम् ।

धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां ।

महाजनो येन गतः स पथाः ॥

५०० मुंजेवही बळ ज्याय, पण वट को नीकळेनी

मूंज जल जाती है पर उसका बल (अैंठन) नहीं जाता ।

स्थिति बिगड़ जाने पर भी हठ या अैंठको न छोड़ना ।

५०१ मूततीनै माधोसाही लाधो

मूतती हुईको माधोशाही (अेक सिक्का) मिला ।

बिना परिश्रम लाभ हो गया या काम बन गया ।

५०२ मूतरो कितोक निवास ?

मूतकी कितनी गर्मी ?

अस्थायी वस्तुके लिअे जो ज्यादा देर नहीं टिकती ।

५०३ मूरख खाय मरै, का उठाय मरै

मूर्ख खाकर मरता है या उठा कर मरता है (मूर्ख जब खाता है तो मूर्खतासे बहुत ज्यादा खा जाता है या कोई काम करता है तो दुःसाहससे शक्ति न होने पर भी उसे करता है)।

(१) जो अति करके हानि उठावे उसके लिये ।

(२) मूर्ख अति करके हानि उठाता है

५०४ मूरखनै मारणो सोरो, समझावणो दोरो

मूर्खको मारना सहज, समझाना कठिन

मूर्ख समझानेसे बातको नहीं मानता । मूर्ख मारनेसे ही समझता है ।

५०५ मूरखनै समझावतां ग्यान गांठरो जाय,

मूरखको समझावते ज्ञान गांठका जाय

मूर्खको समझानेका प्रयत्न करनेसे कष्टके सिवाय कोई फल नहीं होता ।

५०६ मूरख मिलतो ही मारै

मूर्ख मिलते ही मारता है

मूर्ख मिलते ही हानि पहुंचाता है ।

५०७ मूरखांरा किसा न्यारा गांव बसै ?

मूर्खोंके कोई अलग गांव थोड़े ही बसते हैं ?

मूर्ख और बुद्धिमान सभी साथ ही रहते हैं । मूर्ख सब जगह पाये जाते हैं ।

५०८ मूरखांरै किसा सींग लागै ?

मूर्खों के कोई सींग थोड़े ही लगे रहते हैं ?

मूर्खों और बुद्धिमानोंमें आकृतिका कोई अन्तर नहीं होता किन्तु लक्षणोंसे पहचाने जाते हैं । मूर्खोंकी पहचान उनके कार्योंसे होती है और कोई विशेष पहचान नहीं होती ।

५०९ मूळमें मूलजी कँवारा, साळैरा लगन पूछै !

असलमें मूलजी खुद ही कुँवारे और सालेके विवाहका लग्न पूछते हैं !

५१० मूळसूं ब्याज प्यारो

मूलकी अपेक्षा ब्याज प्यारा होता है

(१) रुपया उधार देनेवाले ब्याजके लोभमें मूलके डूबनेको नहीं देखते— ऐसे लोगोंको भी रुपया दे देते हैं जहां उसके डूबनेकी सम्भावना होती है ।

(२) बेटा-बेटीको अपेक्षा नाती-पोते अधिक प्यारे लगते हैं ।

५११ मूसळ जठै खेमकूसल

जहां मूसल वहां क्षेम-कुशल

उस मस्त व्यक्तिके लिए जो हमेशा निश्चिन्त रहता है

५१२ मूँगांरै भरोसै काली-मिर्च ना चाब लियै

मूंगोंके धोखेमें काली मिर्च मत चबा जाना

(१) लाभदायक समझकर हानिकारक कार्य न कर बैठना ।

(२) कमजोरके भरोसे जबर्दस्तसे न अड़ जाना ।

५१३ मूँघो रोवै एक ब्वार सूंघो रोवै ब्वारब्वार

महँगा रोवै अेक बार सस्ता रोवै बारबार

महँगी चीज लेनेसे अेकवार दाम तो ज्यादा लग जाते हैं पर चीज अच्छी मिल जाती है । सस्ती लेनेसे पहले तो दाम कम लगते हैं पर वह बारबार खराब होती है ।

५१४ मूँड्योड़ै माथैरो अर ब्वांट्योड़ी ओखदरो काँई ठा पड़ै ?

मुँड़े हुअे माथे (वाले) का और कुटी हुई औषधिका क्या पता चले ? कुटी हुई औषधिमें कौन-कौनसी दवाअें मिली हैं इसका पता नहीं चल सकता और सिर मुँड़ाने पर यह पता नहीं चल सकता कि मुंडित व्यक्ति ढोंगी है या सच्चा साधु ।

५१५ मूँढा जिती वातां

जितने मुँह उतनी ही बातें

सब लोगोंकी बातें अलग-अलग होती हैं।

सब आदमी अलग-अलग बात कहते हैं!

५१६ मूँढा देख'र टीका काढै

मुँह देखकर टीके निकालता है।

(१) बाहरी वेश देखकर उसके अनुसार आदर करना

(२) सबके साथ अेक व्यवहार न करना

५१७ मूँढै चढाया माथै चढ़ै

मुँह चढ़ाये सिर चढ़ते हैं

मुँह लगानेसे लोग सिर चढ़ जाते हैं

५१८ मूँढमें कवो माथेमें जूती

मुँहमें ग्रास, सिरमें जूती

तिरस्कारके साथ भोजन करना या तिरस्कार पूर्वक कुछ देना

५१९ मूँढैमें बत्तीस दाँत है

मुँहमें बत्तीस दांत हैं

जिस व्यक्तिके अशुभ वचन सत्य हो जायँ उसके लिए

५२० मूँ देख' टीको काढै

मुँह देखकर टीका निकालता है

(ऊपर कहावत नं० देखिये)

५२१ मूँ देख्यांरी प्रीत है

मुँह देखेकी प्रीति है

जब तक सामने रहे तभी तक प्रेम करना। दिखाऊ प्रेम।

५२२ मूँमें राम बगलमें छुरी

सामने मीठा बोलता है पर पीछेसे बुराई करता है

ऊपरसे मीठी बातें करता है पर हृदयमें कपट रखता है !

५२३ मूँ मीठो, पेट खोटो

मुख मीठा, पेट खोटा

कपटीके लिये जो ऊपरसे मीठा बोले पर हृदयमें कपट रखे ।

५२४ मूँ सुई-सो पेट कुई-सा

मुँह सुई जैसा (छोटा) पर पेट कुई जैसा (मोटा)

देखनेमें दुबला पर बहुत खानेवाला ।

५२५ मेह और पावणा किणरे घरे

मेह और पाहुने किसके घर ?

मेह और पाहुने भाग्य से ही आते हैं ।

मेह और पाहुने स्थायी होकर नहीं रहते ।

५२६ मेह और पावणा किता दिनांरा ?

मेह और पाहुने कितने दिनोंके ?

ये अधिक नहीं ठहरते ।

५२७ मैं पिया, म्हारे बळद पिया, अब कुवा ढुड़ पड़ा

मैंने पिया, मेरे बैलने पिया, अब कुँवा गिर पड़ा

स्वार्थी मनुष्य का कथन ।

५२८ मैंसूँ गोरी जकैनै पीळियेरा राग

जो मुझसे गोरी है उसे समझो कि पीलिया रोग है

जो अपनेको अत्यन्त सुंदर समझे और दूसरे की सुंदरतामें भी दोष निकाले उसके लिये व्यंगसे ।

५२२ मूँमें राम बगलमें छुरी

सामने मीठा बोलता है पर पीछेसे बुराई करता है

ऊपरसे मीठी बातें करता है पर हृदयमें कपट रखता है !

५२३ मूँ मीठो, पेट खोटो

मुख मीठा, पेट खोटा।

कपटीके लिअे जो ऊपरसे मीठा बोले पर हृदयमें कपट रखे।

५२४ मूँ सुई-सो पेट कुई-सा

मुँह सुई जैसा (छोटा) पर पेट कुईं जेसा (मोटा)

देखनेमें दुबला पर बहुत खानेवाला।

५२५ मेह और पाव़णा किणरें घरें

मेह और पाहुने किसके घर ?

मेह और पाहुने भाग्य से ही आते हैं।

मेह और पाहुने स्थायी होकर नहो रहते ।

५२६ मेह और पावणा किता दिनांरा ?

मेह और पाहुने कितने दिनोंके ?

ये अधिक नहीं ठहरते।

५२७ मैं पिया, म्हारें बळद पिया, अवं कुवा ढुड़ पड़ा

मैंने पिया, मेरे बैलने पिया, अब कुँवा गिर पड़ा

स्वार्थी मनुष्य का कथन।

५२८ मैंसूँ गोरी जकैनें पीळियैरा राग

जो मुझसे गोरो है उसे समझो कि पोलिया रोग है

जो अपनेको अत्यन्त सुंदर समझे और दूसरे की सुंदरतामें भी दोष निकाले उसके लिये व्यंगसे।

५२६ मैं ही कियो'र मैं ही ढायो

मैंने ही किया और मैंने ही ढहाया (मिटाया)

खुद ही बनाना और बिगाड़ना ।

५३० मोकै माथै हाथ आवै जकां ही हथियार

मौके पर हाथमें आ जाय वही हथियार

मौके पर जिससे काम बन जाय उसे ही वास्तव में साधन व सहायक समझना चाहिए ।

५३१ मोटा* कानांरा काचा (*पाठान्तर राजा)

बड़े आदमी कानोंके कच्चे होते हैं

जो सुनते हैं वही सच मान लेते हैं जांच नहीं करते ।

५३२ मोटी रातांरा मोटा ही झांझरका

लंबी रातोंके लंबे ही तड़के

बड़ोंकी सभी बातें बड़ी होती हैं ।

५३३ मोटारी गोढमें बड़नो सोरो, पण निकळनो दोरो

बड़ोंकी गोदमें घुसना सहज पर फिर निकल आना कठिन

बड़ोंसे मेल-जोल करना कठिन नहीं पर मेलजोल हो जानेके बाद उनके चंगुल से छुटकारा मिलना कठिन है ।

५३४ मोटांरी पंसेरी ही भारी

बड़ोंकी पंसेरी भी भारी होती है

(१) बड़ों की हरेक बात बड़ी ।

(२) बड़ोंकी तुच्छ-से-तुच्छ बात बड़ी समझी जाती है ।

५३५ मोटांरी वात करै सो विना मोत मरै

जो बड़ोंकी वात करता है वह बिना मौत मरता है

बड़ोंकी वातें करनेसे कभी उनके बिरुद्ध वात भी मुँहसे निकल जाती है जिसका बुरा फल भोगना पड़ता है।

५३६ मोडा घणा, मढी सांकड़ी

मुँड़िये बहुत, कुटी सँकरी

(१) जब थोड़ी-सी जगहमें बहुत आदमी हों तब।

५३७ मोड़ो लागो सरड़ राम

'हे राम! (तेरे भजन में) मैं देर से लगा' यह कहता हुआ लावके प्रत्येक सर्राटे के साथ राम का नाम लेता है। मानो अब सारी कसर निकालना चाहता है।

किसी काममें देर से लगना और फिर शीघ्रता दिखाना।

५३८ मोत आवै डोकरीरी, घर वतावै पाड़ोसीरो

मौत आती है बुढ़ियाकी पर वह उसे पड़ोसीका घर वता रही है

(१) मरना कोई नहीं चाहता।

(२) अपनी हानि दूसरेके सिर डालनेका प्रयत्न करना।

५३९ मोत कयां ताव हँकारै

मोतरो कैवै, जरां ताव हंकारै

मौत का नाम लेनेसे बुखार की हां भरता है

अधिक मांगने पर कुछ देता है।

५४० मोतरो दारू कोनी

मौतको दवा नहीं

मौत नहीं टाली जा सकती।

५४१ मोथा बुरी बलाय, लूण घतावै खीरमें

मोथे (छोटे मूंग) बुरी बला हैं जो खीर में नमक डलाते हैं

छोटो मूंग अपने अनुचित ठौर भी डटा रहता है। छोटे मूंग के लिये।

५४२ मोर बोलै मीठो, खा ज्यावै सरपनै

मोर बोलता मीठा पर खा जाता है साँपको

कपटीके लिये।

५४३ मोर बागमें बोल्यो, कुण दीठो ?

मोर बागमें बोला, उसे किसने देखा ?

जब कोई गुणी अपना गुण ऐसी जगह दिखाये जहाँ समझनेवाला कोई न हो।

५४४ मोरियो पांखां देख'र राजी हुवै पग देख'र झुरै

मोर पांखें देखकर खुश होता है, पर पैर देखकर रोता है

सब सुख होने पर भी अेक दुख अैसा होना जिससे सब सुखों पर पानी फिर जाय।

५४५ मोरया करैं मलार घरां परायां ऊपरैं

पराये घरोंपर मोर मलार गाते हैं

जो दूसरोंके धनपर या दूसरोंकी कमाई पर मौज करे।

५४६ मोरयो पगां कानी देख'र झुरै

मोर पैरोंकी ओर देख कर रोता है

(ऊपर कहावत नं० ५४० देखिये)

५४७ म्यांऊँरी जागयां कुण पकड़ै

म्यांऊँकी ठौर कौन पकड़े ?

असली खतरेका सामना या उपाय कौन करे ?

मि०—Who is to bill the Cat.

५४८ म्हारी-म्हारी छाळियां दूधो-दहियो पाऊं

मेरी-मेरी बकरियोंको दही-दूध पिलाऊं

अपने घरवालों को आरामसे रखना और दूसरोंकी कोई पर्वा न करना।

५४९ म्हारै बापनै धान मती मिलज्यो, मनै बळीतै मेलसी

मेरे बापको धान न मिले नहीं तो वह मुझे इंधन चुगनेको भेजेगा

आलसी व्यक्ति को लज्जित करने के लिए व्यंगोक्ति।

५५० म्हां वैठां ही पाड़ोसणरी वेटी सासरै जाय !

हमारे बैठे हो पड़ोसिनकी बेटी ससुराल चली जाय।

हमारे रहते यह काम हरगिज नहीं हो सकता

५५१ म्हारै-बारै सात सुख

हमारे और उनके सात सुख हैं

हममें और उनमें पूरा प्रेम-भाव है।

५५२ रांचियो पण जचियो नहीं

रचा पर जँचा नहीं

काम हुआ पर अच्छा नहीं हुआ।

५५३ रजपूतनें रेकारैरी गाळ

राजपूतके लिऐ रेकार गालीके बराबर है

राजपूतको अपमानजनक संबोधन जरा भी सहन नहीं होता।

मि०—तगा, तगाई मत करे बोले मूँह सँभाळ।
नाहरनें रजपूतनै रेकारैरो गाळ॥

५५४ रजपूतरी जात जमी, घोड़ैरी जात परात

राजपूतकी जाति उसकी जमीन है, और घोड़ेकी जाति उसकी···

राजपूतके पास जमीन है तो नीच कुलका होनेपर भी वह ऊँचा हो जाता है।

५५५ राजपूती धोरोंमें रळगी, ऊपर रळगी रेत

राजपूती टीबोंमें मिल गयी और ऊपर रेत फिर गयी

अब राजपूती नहीं रही ।

५५६ रजपूती रैंयी नहीं, पूगी समँदां पार

राजपूती नहीं रह गयी, वह तो समुद्र पार पहुंच गई (अलोप गयी)।

५५७ रतन सेठ बेटा २ करतो मरग्यो बेटा रांडु रा घें मरै

सेठ रामरतनजी डागा बेटे की लालसा लिये हुये ही मरे परन्तु कपूत बेटोंकी कमी नहीं है ।

कुपुत्र होने की अपेक्षा अपुत्र रहना अच्छा

बीकानेर निवासी स्वनामधन्य परम भगवद्भक्त सेठ रामरतनदासजी डागा वर्तमान सुविख्यात फर्म 'बंशीलालजी अबीरचंद' के मालिकों के पुरखे थे । आपने संतान नहीं थी जिसकी उन्हें बड़ी लालसा थी । जब किसी कुपुत्र को फटकारना तथा लज्जित करना हो तब उपर्युक्त कहावत प्रयुक्त की जाती है । अर्थात् वे अपुत्र ही मरे तो अच्छा हुआ तुम्हारे जैसा कुपुत्र उनके उत्पन्न हुआ होता तो वंशको कलंक ही लगता ।

५५८ रमो-खेलो, अे छोकरियां ! लूंढ़ारी ढोरी

खूब आनँद करो, कौन टोकनेवाला है (व्यंगसे)

५५९ रळियांरा जाया, गळियांमें रुळिया

जो आनंदोत्सव में जनमे थे वे गलियोंमें भटक रहे हैं

दैव-गति पर ।

५६० रवै तो आपसूँ, नहीं तो जाय सगै बापसूँ

स्त्री रहती है तो स्वयं ही रहता है नहीं रहती है तो सगे बापको छोड़कर चली जाती है (भाग जाती है) ।

५६१ रस्तै आवणो, रस्तै जावणो

रास्ते आना, रास्ते जाना
अपने कामसे काम रखना ।

५६२ रंगमें भंग

शुभकार्यमें विघ्न पड़ना ।

५६३ रंगरूड़ो गुण-ब्रायरो रोहीड़ैरो फूल

रोहीड़ेका फूल सुंदर रंगका पर गुण रहित अर्थात् निर्गन्ध होता है
गुणोंसे रहित सुंदर या धनवान पुरुषके लिये ।

५६४ राई घटै न तिल व्रधै, रह रे, जीव ! निसंक

(१) भाग्यमें जो कुछ लिखा है वह होगा ही !
(२) भाग्यमें जितना मिलना लिखा है ठीक अुतना ही मिल जायगा ।

५६५ राईनै परवत करै, परवत राअी मान

राईको पर्वत कर देता है, और पर्वतको राईके बराबर
ईश्वरकी कुदरत सब कुछ कर सकती है ।

५६६ राखणहार भया भुज च्यार तो क्या बिगड़ै भुज दो के व्रिगाड़े

यदि चार भुजावाला (परमात्मा) रक्षक है तो दो भुजावाला (मनुष्य) क्या बिगाड़ सकता है ?
परमात्मा जिसकी रक्षा करता है अुसका मनुष्य कुछ नहीं बिगाड़ सकता ।
मि० जाके रखवाल गोपाल धनी ताको भलभद्र कहा डर रे

५६७ राखपत रखावपत

(दूसरोंकी) पत रखो, (दूसरोंसे अपनी) पत रखाओ
दूसरोंके साथ जैसा वर्त्ताव करोगे वैसा ही वर्त्ताव दूसरे तुम्हारे साथ करेंगे।

५६८ रागरो घर वैराग

रागका घर वैराग्य

५६९ रागो हालै रगमग, तीन माथा दस पग

राग रगमग करता हुआ चलता है, उसके तीन माथे और दस पैर हैं

यह एक पहेली है, हलवाहे के दो बैल और हांकने वाले के मिला कर ३ मस्तक और १० पैर होते हैं।

५७० राज पोपांबाईरो, लेखो राई-राईरो

पोपांबाईका राज्य है जिसमें राई-राईका लेखा होता है

अव्यवस्था और कुशासनके लिये।

५७१ राजरी आस करणो, पण आसंगो नहीं करणो

राज्यकी आशा करनी चाहिये पर सामना नहीं करना चाहिये

राज्यसे विरोध करना अच्छा नहीं।

५७२ राज-रीत आवै जठै राज आयो रेवै

जहाँ राजोचित व्यवहार आ जाता है वहाँ राज्य अवश्य आता है।

५७३ राजरा मारग माथै ऊपर

राज्यका मार्ग सिरके ऊपर (होकर भी जाता है)

राजा चाहे जो कुछ कर सकता है।

५७४ राजा* करै सो न्याव, पांसो पड़ै सो दांव (*पाठान्तर—हाकम)

राजा करता है वही न्याय, पांसा पड़ता है वही दाव है

५७५ राजा मानै जको राणी, और भरो पाणी

जिसे राजा माने वही रानी, बाकी दूसरी पानी भरो

मालिक जिसको चाहता है, उसीका आदर होता है।

५७६ राजा रूठसी तो आपरो सुहाग लेसी

राजा रूठेगा तो अपना सुहाग लेगा। (और क्या बिगाड़ेगा ?)

किसी शक्तिशाली व्यक्तिसे न डरनेवाले की उक्ति।

५७७ राजा रूठसी तो आपरी नगरी लेसी

(ऊपरवाली कहावत देखिये)

५७८ राजा बिना नगरी सूनी

५७९ राजारै घरे मोत्यांरो काळ

राजाके घर मोतियोंका अकाल !

जब किसीके यहां कोओ वस्तु बहुत होनेकी आशा हो पर बिलकुल न दिखायी पड़े, या मांगने पर न मिले।

५८० राड़ आडी बाड़ चोखी

राड़के सामने बाड़ अच्छी

(नीचेवाली कहावत देखिये)

५८१ राड़ सूँ बाड़ भली* (पाठान्तर—आड़ आछी)

झगड़े के सामने बाड़ देना ही अच्छा

झगड़े को रोकना ही अच्छा है (झगड़े का कारण होने पर भी बचना चाहिये)।

५८२ रांड अर खांडरो जोबन रातरो

रांड़ और खांड़ का यौवन रात को

खांड़ की उज्ज्वलता रात में चमकती है। रांड़ रात में शृंगार करती है।

५८३ रांडनै रोवणसूं ही काम

रांड़ को रोने से ही काम

५८४ रांड ! भातो मोड़ो लायी, कै-रोज-गगा ! हमै ही वेगो है

रांड ! भाता देर से लायी ? तो कहती है—रोज-गंगा ! अभी भी जल्दी है।

५८५ रांड, भांड अर खुलड़्यो गाडो कैरै सारै थोड़ा ही रैवै है ?

रांड, भांड, और उलटती हुई गाड़ी किसी के वश में थोड़े ही रहते हैं ?

५८६ रांडरी दुराशीससूँ टाबर को मरै नी

रांड की दुराशीष से बच्चे नहीं मरते

अकारण दुराशीष देने से कोअी अनिष्ट नहीं हो सकता।

मिलाओ—ढेडरी दुराशीससूं किसा ढाढ़ मरै !

५८७ रांड रोवै, कवारी रोवै, साथ लगी सतखसमी रोवै

आवश्यकता से अधिक सहानुभूति दिखाने पर।

५८८ रांड, सांड, सोड़ो, संन्यासी, अिणसूं बचै तो सेवै काशी

काशी वास करना हो तो अिन चारों से बचकर रहें।

५८९ रांड हुओीरो धोको नहीं, सपनो तो साचो करणो

रांड (विधवा) होने का धोखा नहीं, सपना सच्चा करना है।

(रांड चाहे हो जाअूं पर सपना तो सच्चा करना ही चाहिये)

नुकसान सह लेना पर अपना हठ कायम रखना।

५९० रांडां तो रँडापो काढै, पण रंडुवा काढण को देनी

विधवाअें तो विधवापन बिता दें पर पुरुष नहीं बिताने देते

पुरुष ही विधवाओं के चरित्र को ज्यादातर बिगाड़ते हैं।

५९१ रांडां रोवती ही जाय, पाव्हणा जीमता ही जाय

५९२ रांडां ! रोवो क्यूँ अे ? खसमांनै

खसम तो जीवै है नी अे ? तो घाटो ही क्यांरो

रांडों ! रोती क्यों हो ? पतियों को ?

पति तो जीते हैं न ? यदि अैसा होता तो फिर घाटा ही किस बात का ?

पौरुषहीन पति या मालिक या किसी अन्य पौरुषहीन व्यक्ति पर

५९३ रांडां ! रोवो क्यूँ हो अे ? मांटा मरग्या ?

जीवां हांनी ? जणा ही ता रोवां हां।

प्रश्न पतियों का—रांडों ? क्यों रोती हो री ?

उत्तर स्त्रियों का—पति मर गये अिस लिअे।

पतियों का कथन—अरी, हम तो जी रहे हैं ?

स्त्रियों का प्रत्युत्तर—तभी तो रोती हैं (कि मरे हुअे पति अभी जीवित हैं, इससे तो अच्छा था कि सचमुच मर जाते)

(ऊपरवाली कहावत देखिये)

५९४ राणीनै काणी कह दी

रानीको कानी कह दिया ?

अपनेको बड़ा समझनेवाला व्यक्ति सच्ची बात कही जाने पर जब नाराज हो जाय तब।

५९५ राणीनै काणी क्यूँ कह दी ?

रानीको कानी क्यों कह दिया ?

(१) ऊपरवाली कहावत देखिये।

(२) जब कोअी बच्चा अकारण नाराज हो जाय तब।

६२४ रीतरो रायतो करनो पड़ै

रिवाज का रायता करना ही पड़ता है

रिवाजके अनुसार चलना ही पड़ता है ।

६२५ रीस मास्यां रेसाण ऊपजै

क्रोधको दबानेसे रसायन उत्पन्न होती है

क्रोधको दबा लेना बड़ा हितकारी है ।

६२६ रुत विन रायण ना फळै, मांग्या मिळै न मेह

बिना ऋतु पेड़ नहीं फलते, मांगनेसे मेह नहीं मिलता

सब काम अपने समय पर ही हो सकते हैं ।

६२७ रुपियांरी खीर है

रुपयों की खीर है (रुपया हो तभी खीर बनती है)

धनसे सब काम होते हैं ।

मि० —पैसोंकी खीर है ।

६२८ रुपिया हुवै जद टट्टू चालै

रुपये हों तब टट्टू चलता है

धन हो तभी अभीष्ट कार्य हो सकता है ।

मिलाओ --Money makes the mare go

६२९ रुपियै कनै रुपियो आवै

रुपयेके पास रुपया आता है ।

रुपयेसे रुपया कमाया जाता है ।

Money brings money.

६३० रुपियो मां, अर रुपियो बाप, रुपियै विना घणो सन्ताप

रुपया मां है और रुपया ही पिता है, रुपये बिना बहुत संताप होता है ।

६३१ रुपियो हाथरो मैल है

रुपया हाथका मैल है (जो आता जाता रहता है)

धन आता जाता रहता है अतः अुसको खर्च करनेमें आगापीछा नहीं सोचना चाहिअे ।

६३२ रूखा सो भूखा

जो रूखा अन्न खाता है वह जल्दी भूखा हो जाता है (जल्दी भूख लग आती है) ।

६३३ रूठ्योड़ो भूपाळ, तूठ्योडो व्राणियो

रूठा हुआ राजा और प्रसन्न हुआ बनिया बराबर है

बनिया तूठकर भी कुछ नहीं देता ।

६३४ रूप-रूड़ो गुण व्रायरो रोहीडैरो फूल (पाठान्तर—रूपाळो)

रूपसे सुन्दर पर गुणोंसे हीन रोहीड़ेका फूल

सुन्दर, पर गुणहीन, पुरुषके लिये ।

मि०—सभा मध्ये न शोभन्ते निर्गन्धामिव किंशुकाः ।

६३५ रूप रोवै, भाग खावै

रूप (वाला) रोता है, भाग (वाला) खाता है

रूप रोवै करम खाय

रूप री धिराणी पाणी ने जाय

भाग्य बड़ा है । विना भाग्यके गुण निरर्थक हैं ।

मि० रूपको रोय करम की खाय ।

विधि-करतूत न जानो जाय ॥

६३६ रूपलालजी गुरु, बाकी सग चेला

रुपया गुरु है, बाकी सब चेले हैं

रुपया सबसे बड़ा है ।

६३७ रूपली पल्लै तो रोहीमें चल्लै (पाठान्तर—चाहे ठूंठ)

रुपल्लो गांठमें हो तो जंगल में चल सकता है

रुपया पास है तो सब जगह आनन्द से रह सकते हैं ।

६३८ रेखमें मेख मारै

रेखमें मेख मारता है

भाग्य को बदल देता है ।

६३९ रैवणो भायांमें, हुवो भलां ही वैर ही

रहना भाअियोंमें, हो चाहे वैर ही

विरोध होनेपर भी भाअी-बंधुओंके साथ ही रहना चाहिअे ।

६४० रोगरो घर खांसी, लड़ाईरो घर हांसी

रोगका घर खांसी, लड़ाअीका घर हँसी

खांसी अनेक रोगोंका मूल है, हँसी-मजाक लड़ाअी का कारण ।

६४१ रोज करै आव-जाव, जकैरो कोअी न पूछै भाव

जो रोजाना आना जाना करता है, अुसका कोअी आदर नहीं करता

अिसलिये विना मतलब आव-जाव नहीं रखना चाहिअे ।

मि०—अतिपरिचयाद् अवज्ञा भवति ।

मान घटै नित-ही-नित जाये ।

६४२ रोजा छुड़ावणनै गया निवाज गळै पड़ी

रोजे छुड़ाने गये, नमाज गले पड़ी

साधारण दुःखसे छूटनेकी कोशिश करते हुअे बड़े दुःखमें पड़ना ।

६४३ रोट खावै मांटीरा, गीत गावै वीरैरा

रोटी खाय पतिकी और गीत गाय भाअीके

लाभ किसीसे पहुंचे तारीफ किसी की की जाय

मि०—खावै पीवै खसम रा गीत गावै वीरै रा

६४४ रोटी खाणी सक्करसूँ, दुनिया ठगणी मक्करसूँ

रोटी खाना शक्करसे, दुनिया ठगना मक्कारीसे

दामी तथा धूर्त पुरुषों को ऐसी कुनीति होती है।

६४५ रोटी खांवतां-खांवतांने मोत आवै

रोटी खाते-खातोंको मौत आती है

६४६ रोटी मोटी बात, जाळा काटै जीवरा

रोटी बड़ी बात है जो जीवके जाल काट देती है

सबसे बड़ी चीज रोटी है।

६४७ रोयां किसो राज मिळै ?

रोनेसे कौन-सा राज्य मिलता है ?

६४८ रोयां राज को आवै नी

रोनेसे राज्य नहीं आ जाता

(१) जब कोओ रोता है तब समझाने के लिये कहते हैं।

(२) रोनेसे कुछ नहीं मिलता, परिश्रम करना चाहिओ।

मि० रोनेसे दान नहीं मिलता।

रोनेसे रोजी नहीं बढ़ती।

६४९ रोयां बिना मा ही बोबो को देवै नी

रोये बिना मा भी दूध नहीं पिलाती

चुपचाप रहनेसे कोओ ध्यान नहीं देता।

मि० बोलै जकोरा बोर बिकै।

६५० राेळ में घोळ हुवै

६५१ रोवतीनै राखी तो कै मागै ही ले चालो

रोती हुई को आश्वासन देकर रोना बंद करवाया तो कहती है कि साथ ही ले चलो

कोअी थोड़ी-सी सहायता करे तो अुसीके पीछे पड़ जाना।

मि० अंगुली पकड़ कर पहुँचा पकड़ना

६५२ रोवतो जावै जको मर्‌यौंरी खबर लावै

जो रोता हुआ जाता है वह मरे की खबर लाता है

(१) बिना मनके कोअी काम करे तब कही जाती है

(२) बेमन काम करने से असफलता ही मिलती है

(३) जो कीखता जाता है उसको सफलता नहीं मिलती

६५३ रोहण बाजै मग तपै, गेला ! खेती क्यौंने खपै ?

रोहिणी नक्षत्रमें हवा चले और मृगशिरमें गर्मी पड़े तो बावले ! किसलिअे खेती की मेहनत अुठाते हो ?

६५४ रोहण तपै मिरगला व्राजै, आदरा अणपूछ्‌या गाजै

रोहिणी नक्षत्रमें गर्मी पड़े और मृगशिर नक्षत्रमें हवा चले तो आर्द्रा नक्षत्रमें बिना पूछे ही बादल गरजेंगे (और पानी बरसेगा)

६५५ लछमी बिन आदर कुण करै ?

लक्ष्मी के बिना कौन आदर करे ?

धनहीन का आदर कोई नहीं करता।

६५६ लछमी बिनारो लपोड़

लक्ष्मी के बिना लपोड़

धन न होने पर आदमी लपोड़—लबार, मूर्ख—कहलाता है।

६५७ लड़नरी वखत करै बिछड़न वेला मत करै

लड़ने का वखत करना, बिछुड़ने का मत करना

साथ २ रहकर लड़ते रहना मर कर बिछड़ने से अच्छा होता है

६५८ लड़ाईमें किसा लाडू बँटै है ?

लड़ाईमें कौन-से लड्डू बँटते हैं ?

लड़ाई करने से या लड़ाईमें जानेसे, कोई लाभ नहीं होता।

६५९ लड़ाईमें लाडू थोड़ा ही बँटै है॰ (पाठान्तर—उछळै है)

लड़ाईमें लड्डू थोड़े ही बँटते हैं।

(ऊपरवाली कहावत देखो)

मि॰—Keep aloof from quarrels, be neither a witnees nor a party

६६० लड़ै सिपाही जस जमादारनै

लड़ै सिपाही, नांव सिरदाररो

लड़ते हैं सिपाही, नाम होता है सरदार का।

युद्धमें सिपाही लड़कर विजय प्राप्त करते हैं पर नाम होता है सेनापतिका कि अमुक सेनापति ने विजय प्राप्त की।

जब काम कोई करे और प्रशंसा की जाय किसी और की।

मि॰—The blood of the soldier makes the glory of the general.

६६१ लहणो बापरा ही खोटो

लहना (ऋण) बापका भी बुरा

ऋण सदा बुरा है, चाहे निकट संबंधियों का ही क्यों न हो।

६६२ लंकामें किसा दाळद्री को हुवै नी ?

लंकामें कौन-से दरिद्री नहीं होते ? अर्थात् होते हैं ।

लंका सोनेकी बनी हुई है । वहां कोई दरिद्री नहीं होना चाहिये ।

जब अच्छे स्थान या कुलमें या अच्छे लोगोंमें या अच्छे भाग्यवालोंमें कोई बुरा या अभागा होता है तो यह कहावत कही जाती है ।

६६३ लंकामें तूँ ही दाळद्री रह्यो

लंकामें तू ही दरिद्री रहा

अच्छोंमें या अच्छे भाग्यवालोंमें तू ही बुरा या अभागा हुआ ।

(ऊपरवाली कहावत देखो)

६६४ लाकड़ांरै देवनै खूँसड़ैरी पूजा

लकड़ोंके देवताको जूतोंकी पूजा

देवताके उपयुक्त पूजा । किसी व्यक्ति या वस्तु के साथ उपयुक्त व्यवहार करना ।

मि०—नष्ट देव री भ्रष्ट पूजा

६६५ ला कोई बीरबल असा नर, पीर बवरची भिस्ती खर

हे बीरबल, कोई ऐसा मनुष्य लाओ जो पीर (की भाँति पूज्य), रसोइया, भिस्ती और गधा चारों एक साथ हो ।

ब्राह्मण के लिये । ब्राह्मण पूज्य होता है, रसोई बनाता है, पानी पिलाता है और गधेकी भाँति भार उठाकर साथ भी चल सकता है । आधुनिक कालके ब्राह्मण का उपहास ।

६६६ लाख जाय, साख ना जाय

लाख (का धन) चला जाय पर साख न जाय ।

साख ही सबसे बड़ा धन है ।

६६७ लाग लगी जद लाज किसी ?

लगन लग गई तब लाज कौन-सी ?

प्रेम हो गया तो लज्जा का क्या काम ? किसी काममें हाथ डाल दिया तो फिर क्या शरमाना ?

६६८ लागै जकैरै दूखै

जिसके (चोट) लगती है उसीके दुखती है [दूसरेके नहीं दुखती] ।

मि० जाके पैर न फटी बेवाई सो क्या जाने पीर पराई ।

६६९ लाग्योड़ीमें लाग्या करै

लगी हुई में लगा करती है

विपत्तिमें विपत्ति आती है ।

मि०—(१) छिद्रेष्वनर्था बहुली भवंति ।

(२) Misfortune never comes alone.

६७० लाजवाळोंनें जोखम है

लाजवालोंको जोखिम का भय है

अपनी लज्जा का ध्यान रखनेवाले को अनेक कष्ट उठाने पड़ते हैं। निर्लज्ज सदा सुखी रहता है।

मि०—एकां लज्जां परित्यज्य

६७१ लाठी जकैरी भैंस

जिसकी लाठी उसकी भैंस

सब कुछ बलवानका है। बलवान अन्यायसे भी निर्बलकी किसी वस्तु पर अधिकार जमा ले तो उसे कौन रोक सकता है ?

मि०—Might is right

६७२ लाडूरी फोरमें कुण खारो, कुण मीठो ?

लड्डूकी फोरमें कौन (सा भाग) खारा और कौन (सा भाग) मीठा

सबको एक समान मानना।

पक्षपात रहित रहना।

सबको अच्छा समझना।

६७३ लातांरो देव वातांसूँ थोड़ो ही मानैं ?

लातोंका देव बातोंसे थोड़े ही मानता है।

दुष्ट दुष्टता करनेसे ही मानता है या सीधा रहता है।

उसको समझाना व्यर्थ है।

मि० शठे शाठ्यम् समाचरेत्

६७४ लाद दो, लदाय दो, लादनवाळो साथ दो

(बोझा ऊँट पर) खुद लाद दो, लदवा दो, और एक लादनेवाला भी साथ दे दो।

अनुचित मांग पर। जब किसीको कोई चीज दो और वह कहे कि हमारे घर पहुँचा भी दो।

जब किसीको कोई लाभ का काम बताया जाय और वह कहे कि साथ चलकर करवा दो।

६७५ लाधो माल खाधो

पाया माल खाया

जो रास्ते में पड़ा हुआ मिला सो अपना हो गया।

६७६ ला म्हारी दो मुट्ठी चिणांरी दाळ

ला मेरी दो मुट्ठी चनेकी दाल।

अनुचित हठ करना

६७७ ला म्हारी सागी रोटीरी कोर

ला मेरी वही रोटीकी कोर (टुकड़ा)

६७८ लांबा हेला, ओछो पीक

लंबे हेले और ओछा स्नेह

दिखावा बहुत और अन्तस में प्रेम नही

हेला आवाज देना, पुकारना, बुलाना।

६७९ लांबा तिलक, माधरो वाणी, दगैवाजरी आई निसाणी

लम्बे तिलक लगाना और मोठा बोलना—यही दगाबाजकी पहचान है।

धोखा देनेवाला ऊपरसे बड़ा महात्मा बनता है और मीठा बोलता है।

मि०—Too much courtesy, too much craft

६८० लांठेरा डोका (डोका सूखी हुई डाली का टुकड़ा) डांगनें फाड़ं

जबर्दस्तका डोका भी लाठी को फाड़ डालता है

जबर्दस्तकी सब चलती है। उससे सब डरते हैं।

६८१ लायनें,दीयो ले'र देखै है

लगी हुई आगको दिया लेकर देखता है।

आगको देखनेके लिए दियेको आवश्यकता नहीं-वह तो विना दियेके ही दिखाई दे सकती है।

जब कोई स्पष्ट बात को (मूर्खतावश) जानने को चेष्टा करे तब

६८२ लाय लाग्यां कूवा खोदै, बो काम कद पार पड़ै ?

आग लगने पर कुँआ खोदे तो वह काम कब पार पड़े

विपत्ति के उपस्थित हो जाने पर उपाय सोचे तब

६८३ लाल किताब में लिक्खा यूँ

लाल किताब में यों लिखा है

६८४ लाल किताब में लिक्खा यूँ—
तेली बैल लड़ाया क्यूँ ?
खळी खवायकै किया मुसंड,
बैलका बैल और साठ रुपिया डंड ।

पक्षपातपूर्ण न्याय। अपने स्वार्थ के लिअे न्याय का गला घोंटना इसका निकास इस कहानी से है :—किसी तेली के बैल ने एक काजी के बैल को मार डाला ! इस पर काजी ने तेली से कहा कि तुमने अपने बैल को क्यों खिला पिलाकर मुसंड किया , जिससे मेरा बैल मारा गया । इस अपराध में तुम्हें बैल और जुर्माना दोनों देना होगा । अन्त में जब काजी को मालूम पड़ा कि मेरे ही बैल ने तेली के बैल को मार डाला है तब उन्होंने अपना दोष हलका करने के लिअे कहा कि फिर जानवर ही तो था अर्थात् पशु को भले बुरे का विचार नहीं होता । इस पर तेली ने अपने मन ही मन कहा, "वाहजी काजी साहब, एक ही अपराध में अपने लिअे खास अेक कानून और मेरे लिअे कुछ दूसरा ही"

६८५ लालच बुरी बलाय

लालच बहुत बुरा है । पूरा दोहा इस प्रकार है—

माखी बैठी सहदपर, पंख गया लपटाय ।
हाथ मलै अर सिर धुणै, लालच बुरी बलाय ॥

मिलाओ—No vice like avarice

६८६ लाल बही छप्पनवें पानै, सेठजी रोवै छानै-छानै

लाल बही के छप्पनवें पन्ने पर सेठजी छिप-छिपकर रोते हैं किसी पूंजीपति का दिवाला निकले तब ।

६८७ ला-ला मिटियां घर मांड्यो है, मूरख कह घर म्हारो

मिट्टी ला-लाकर घर बनाया है और मूर्ख कहता है कि घर मेरा है

शरीरके लिअे कहावत । शरीर मिट्टीका बना है पर अज्ञानी मनुष्य उसे अपना समझता है । धन-दौलत मकान आदिके लिअे भी यह कहावत प्रयुक्त होती है ।

६८८ लिख-लिख भेजूँ पत्तर में, तू सित्तर में न बव्वत्तर में

(बार २) पत्र में लिख दिया है कि तेरा नाम सत्तर और बहत्तर तक तो नहीं है ।

जब कोई किसीसे मेलजोल करना चाहे और वह उसकी ओर ध्यान ही न दे तब इसका निकास इस कहानी से है :—दो मित्र थे, एक परदेश में रहता था और लम्पट था उसने अपने देशस्थ मित्र को एक दोवड़ी (पार्सल) भेजी और उसे अपनी प्रेयसी किसी वेश्या को देने के लिअे लिखा । मित्र था बुद्धिमान । वह उस वेश्या के घर गया और उससे कहा कि किसी तुम्हारे प्रेमी ने एक दोवड़ी मेरी मार्फत भेजी पर मैं तो भेजनेवाले का नाम भूल गया । वेश्या अपने प्रेमियों के नाम बतलाने लगी । सत्तर बहत्तर नाम बतलाये तब तक तो उसके मित्र का नाम नहीं आया । तब उसने दोवड़ी तो अपने मित्र की बहू को दे दी और उसे लिख भेजा कि मूर्ख क्यों व्यर्थ में धन गंवाता है । वहां तेरी गिनती सत्तर बहत्तर तक तो नहीं है अर्थात् उस वेश्या के सैकड़ों प्रेमी हैं तेरी तो वहां गिनती ही नहीं है ।

६८९ लियो-दियो आडो आवै

[देखो दियो-लियो आडो आवै]

६९० लीद खावणी तो हाथी री गधैरी क्यों खावणी ?

लीद खाना तो हाथी की खाना गधेकी क्यों खाना ?

गुनाह बेलज्जत क्यों करना ?

६६१ लीलटांस कीड़ा भखै, मुखै विराजै राग
करणी सूँ क्या काम है, दरसण सूं है काम

नीलकंठ पक्षी कीड़ोंको खाता है पर उसके मुखमें राम-नाम रहता है। हमें उसकी करनी से क्या ? हमें तो दर्शनसे काम है (नीलकंठका दर्शन सगुन माना गया है)।

बुरे को बुराई से काम न रखकर उसकी भलाई से काम रखना चाहिये।

६६२ लुगाईरी अकल खूडी में* हुया करै [पाठान्तर—अेडी नीचै]

स्त्रीकी बुद्धि एड़ीमें हुआ करती है

स्त्री कम अक्लवाली होती है।

६६३ लुखा लाड, घणी खमा

रूखा प्यार, घणी खमा।

कोरे सूखे प्यारसे क्या ? कुछ देने-लेने को तो कहो, नहीं तो दूर से प्रणाम।

६६४ लूँकड़ी पाद दियो, सिसियै साख भर दी

लोमड़ीने पाद दिया, ससे ने साक्षी दे दी

जब किसी की हां में हां मिलाओ जाय तब

६६५ लूँठैरो डोको डांगनै फाड़ै

जबरदस्त की लाल आंखों के तौर सहने पड़ते हैं।

६६६ लूँठाई रा लाल तुर्रा

जबर्दस्त मारता है और रोने नहीं देता।

बलवान् सताता है और चूँ नहीं करने देता।

बलवानके अत्याचारको चुपचाप या ऊपरी प्रसन्नता से सहना पड़ता है।

६९७ लूँटीज्यां पछै काँई डर ?

लुट जानेके पीछे क्या डर ?

जिस बातका भय हो वह हो जाय तो फिर उसका क्या भय !

६९८ लूण बिना पूण रसोई

नमक बिना रसोई अधूरी है

भोज्यवस्तुओं में नमक प्रधान और सबसे उपयोगी है।

६९९ लूली झाड़ू दे जद अेक टांग पकड़नाळो चाहीजे

लँगड़ी स्त्री झाडू दे तब अेक आदमी उसकी टांग को पकड़े रहनेके लिअे चाहिअे।

जब कोई किसी को बिना सहायता के काम न कर सके तब।

७०० लेके दिया, कमाके खाया

झख मारणै जगतमें आया

यदि (किसीका कुछ) लेकर (लौटा) दिया और कमा करके खाया तो वह मनुष्य झख मारनेके लिअे ही जगतमें आया।

दुष्टोंका या आलसियोंका कथन।

७०१ लेणो अेक न देणा दोय

लेना अेक न देना दोय

निकम्मे व्यक्ति के लिअे। सारहीन बात पर।

७०२ लेवण गयी पूत, गमा आयी खसम

लेने गयी पुत्र और गँवा आयी खसम को

लाभके बदले हानि होना

मि०—(१) चौबेजी गये छब्बे होने, दुबे होकर आये।

(२) चौबेजी गये छब्बे होने दो घरके खोय लगे रोने।

७०३ लोभी गरू लालची चेला, दोऊं नरक में ठेलमठेला

गुरु यदि लोभी हो और चेला यदि लालची हो तो दोनों नरकमें जाते हैं

७०४ लोभे लाग्यो दाणियो चाटे लागी गाय,

हिली हिली लोंकड़ी अड़क मतीरा खाय

लोभ लगा हुआ बनिया और चाटे लगी हुई गाय और हिली हुई लोम

मतीरा खाने अवश्य आती है।

७०५ लोवै सूँ लोवो घसीजतां आग नीकळै

लोहेसे लोहा घिसने पर आग निकलती है

समान शक्तिशाली पुरुषों की भिड़न्त से नुकसान ही होता है

७०६ लोह जाणै लोहार जाणैं, खातीरी बलाय जाणैं

लोहा जाने लुहार जाने, खाती की बला जाने

जिसकी जो वस्तु हो उसे ही उसका ध्यान रखना होता है। असम्बद्ध व्यां

भला दूसरे की वस्तु का क्यों ध्यान रखने लगेगा।

७०७ लोहां लकड़ां चामड़ां, पहली किसा वखाण ?

बहू बछेरां डोकरां नीवड़ियां परवांण

लोहा, लकड़ी और चमड़ा प्रयोग में आने पर ही अच्छा बुरा कहा ज

सकता है। बहू बछेड़ा और सन्तान बड़े होने पर अच्छे हो तभी अच

समझने चाहिए।

मिलाओ Never praise a ford till you are over

व

७०८ वकारयो ढेढ सीटी को देवैनी

कहनेसे ढेढ़ सीटी नहीं बजाता (वैसे दिन भर बजाता रहता है) ।

नीच आदमी प्रार्थना करने से जिद्दी होता है ।

७०९ वकारयो भूत बोलै

पुकारने से भूत बोलता है ।

आवाज देते ही कोई तुरन्त बोल उठे तब हंसी में कहा जाता है ।

७१० वखत जाय परो, बात रह ज्याय

समय चला जाता है, बात रह जाती है ।

भली-बुरी बात रह जाती है (समय किसी का एक सा नहीं रहता) ।

७११ वखत-वखतरा रंग जुदा

भिन्न-भिन्न समयों के भिन्न-भिन्न रंग होते हैं ।

सब समय अेक-सा नहीं होता ।

७१२ वखत-वखतरी रागण्यां है

समय-समय की अलग-अलग रागिनियां हैं ।

भिन्न-भिन्न समयों पर भिन्न-भिन्न बातें होती हैं ।

प्रत्येक बात का अपना समय होता है और वह तभी अच्छी लगती है ।

७१३ वखत देख नहीं विणजै जको वाणियो गँवार

जो वक्त का व्यापार नहीं करता वह बनिया गँवार है ।

वक्त के अनुसार काम करना चाहिये । जो नहीं करता वह मूर्ख है ।

मि० —जैसी चलै बयार पीठ तैसी ही दीजै ।

७१९ वडांरा वडा ही काम

बड़ोंके काम भी बड़े ही होते हैं।

(१) बड़े आदमी बड़े काम ही हाथमें लेते हैं।

(२) कोई बड़ा आदमी नीच काम करे तब भी व्यंगसे कहा जाता है।

७२० वडांरी गांड़में वड़नो सोरो, निसरणो दोरो

बड़ोंकी गांड़में घुसना सहज, पर वापिस निकलना कठिन है

बड़े लोगोंसे हेलमेल करना आसान है पर हेलमेल होनेके बाद उनसे पीछा छुड़ाना चाहे तो बहुत कठिन है।

७२१ वडांरे कान हुवै, आंख्यां को हुवैनी

बड़े आदमियोंके कान होते हैं, आँखें नहीं होती

बड़े आदमी निकट रहनेवालोंकी सुनी बातों पर विश्वास कर लेते हैं, स्वयं छानबीन नहीं करते।

७२२ वडी आंख फूटणनै, घणो हेत टूटणनै

बड़ी आंख फूटनेके लिअे और अधिक प्रेम टूटनेके लिअे होता है

७२३ वडो वहू वडा भाग, छोटो लाडो घणो सुहाग

वरसे वधू बड़ी हो तो उसके बड़े भाग हैं क्योंकि छोटा दूल्हा होनेसे सुहाग बहुत दिन रहेगा।

बड़ी कन्या का छोटे वरसे विवाह करनेवालोंकी उक्ति

७२४ वड़ जिसा टेंटा, बाप जिसा बेटा

जैसा बड़ वैसे उसके टेंटे (फल), और जैसा बाप वैसे उसके बेटे

संतान मा-बापके अनुसार ही होती है

७२५ वड़ां पहली तेल कदेई पीग्या हा

बड़ोंसे पहले तेल कभी पी गये थे

बातको पहले ही समझ ली थी

७३० व़णी व़णाव़ै सो व़ाणियो

वनीको जो बनाता है वही बनिया

बनिया समयानुकूल काम करता है

७३१ व़णीरा किसा मोल ?

बनीका कौन-सा मोल ?

कुसमयमें जो काम सुधर जाय वही अच्छा।

७३२ वणीरा सै सीरी* (पाठान्तर—साथी)

काम बनने पर सब साथी बन जाते हैं ।

७३३ वणी-वणीरा सै संगाती, बिगड़ीरा कोइ नांय

बने कामके सब साथी हैं, बिगड़ेका कोई नहीं

(१) संपत्तिमें सब साथ देते हैं, विपत्तिमें कोई नहीं देता।

७३४ वध-वध, रे चंदणरा रूँख ! ऊँचो व़ध

बढ़, रे चंदनके रूख और ऊँचा बढ़

बहुत लंबे आदमीके प्रति हँसी में कहा जाता है।

७३५ वढ्योरा वढै, नहीं जका कांई वढे !

जो काटे गये हैं वे ही काटते हैं, जो नहीं काटे गये वे क्या काटेंगे

जो दान करते हैं (उदार हैं) वे ही कुछ दे सकते हैं जो दान नहीं करते वे क्या देंगे ?

७३६ वन-वनरा काठ भेळा हुया है

वन-वन के काठ अेकत्र हुअे हैं

जगह-जगह के लोगोंका सम्मिलन हुआ है।

७४२ वाज्या ढोल परणीज्या गोल

ढोल बजे और गोलोंका विवाह हुआ

७४३ वाजै पर पग उठै

बाजे (की ताल) पर पैर उठते हैं

आमदनीके अनुसार ही खर्च किया जा सकता है।

७४४ वाड़ में मूत्यां किसो वैर निकळै ?

वाड़में मूतनेसे कौन-सा वैर निकलता है ?

सैद्धान्तिक विरोध होते हुअे भी साधारण हेल-मेल तथा शिष्टाचार में फर्क नहीं लाना चाहिअे

७४५ वाढी आंगळी पर ही को मूतै नी

कटी हुई उँगलीपर भी नहीं मूतता।

आवश्यकता के वक्त मदद न देने वाले के लिअे

७४६ वाणियाँरा पखाणिया चाट्योड़ाँसूँ काम को हुवै नी

बनियोंकी कटोरियां चाटनेवालोंसे काम नहीं हो सकता

जिन्होंने बनियोंके घर रह कर माल उड़ाये हैं उनसे मेहनत का काम नहीं हो सकता (विशेषतया बनियोंके यहां रहनेवाले नौकर-चाकरों पर)।

७४७ वाणियैरी बेटीनै मांसरी कांई ठा ?

बनियेकी बेटीको मांसके स्वादका क्या पता ?

किसी काम से वाकफियत न रखनेवाले के लिअे

मि०—बंदर क्या जाने अदरकका स्वाद ?

७४८ वाण्यो मित्र न वेस्या सती, कागो हंस न बुगलो जती

बनिया कभी किसीका मित्र नहीं हो सकता, वेश्या कभी सती नहीं हो सकती, कौवा कभी हंस नहीं हो सकता, और (अेकाग्र-ध्यानी होने पर भी) बगुला कभी यति नहीं हो सकता है।

बनियेको कभी अपना न समझो (जाण मारै वाणियो, पिछाण मारै चोर)।

७४२ वाज्या ढोल परणीज्या गोल

ढोल बजे और गोलोंका विवाह हुआ

७४३ वाजै पर पग उठै

बाजे (की ताल) पर पैर उठते हैं

आमदनीके अनुसार ही खर्च किया जा सकता है।

७४४ वाड़ में मूत्यां किसो वैर निकळै ?

बाड़में मूतनेसे कौन-सा वैर निकलता है ?

सैद्धान्तिक विरोध होते हुअे भी साधारण हेल-मेल तथा शिष्टाचार में फर्क नहीं लाना चाहिअे

७४५ वाढी आंगळी पर ही को मूतै नी

कटी हुई उँगलीपर भी नहीं मूतता।

आवश्यकता के वक्त मदद न देने वाले के लिअे

७४६ वाणियाँरा पखाणिया चाट्याड़ाँसूँ काम को हुवै नी

बनियोंकी कटोरियाँ चाटनेवालोंसे काम नहीं हो सकता

जिन्होंने बनियोंके घर रह कर माल उड़ाये हैं उनसे मेहनत का काम नहीं हो सकता (विशेषतया बनियोंके यहां रहनेवाले नौकर-चाकरों पर)।

७४७ वाणियैरी वेटीनै मांसरी कांई ठा ?

बनियेकी बेटीको मांसके स्वादका क्या पता ?

किसी काम से वाकफियत न रखनेवाले के लिअे

मि०—बंदर क्या जाने अदरकका स्वाद ?

७४८ वाण्यो मित्र न वेस्या सती, कागो हंस न बुगलो जती

बनिया कभी किसीका मित्र नहीं हो सकता, वेश्या कभी सती नहीं हो सकती, कौवा कभी हंस नहीं हो सकता, और (अेकाग्र-ध्यानी होने पर भी) बगुला कभी यति नहीं हो सकता है।

बनियेको कभी अपना न समझो (जाण मारै वाणियो, पिछाण मारै चोर)।

७४९ वाण्यो लिखै, पढै करतार

वनिये की लिखावट परमात्मा ही पढ़ सकता है

वाणीका या महाजनो लिपि को पढ़ना बड़ा कठिन होता है।

७५० वात करणरी गुनैगारी है

वात करने की गुनहगारी (सजा) है

चर्चा करने पर नुकसान उठाना पड़े तब।

७५१ वात थोड़ी, वैंदो घणां

(असली) वात थोड़ी विवाद वहुत

ना कुछ वात पर विवाद छिड़ जाने पर।

मि० Much ado about nothing.

७५२ वातांसूँ किसो पेट भरीजै

वातों से कौन-सा पेट भरता है ?

(१) कोरी वातों से भूख नहीं मिटती

(२) खाली वातों से काम नहीं चल सकता

मि० भूख मिटे नहिं पेट की थोथो वातां मांय।

७५३ बादळ में दिन दीसै न फूड़ दळै ना पीसै

दिन उग गया पर वदली के कारण दिखाई नहीं दिखाई देता। फूहड़ समझती है कि अभी रात है इसलिअे वह न उठती है न दलने-पोसने का काम शुरू करती है।

फूहड़ और आलसी के लिये जो अपना काम नहीं करते।

७५४ वारी आयां बूढली ही नाचै

वारी आने पर वुढ़िया भी नाचती है

वारी आते ही अशक्त आदमी भी कार्य करने को तैयार हो जावै तव।

७५५ बासी रहै न कुत्ता खाय

न बासी रहे न कुत्ते खावें

(१) बाकी कुछ न बचना ।

(२) गरीब आदमी के लिअे जिसके पास बचत कुछ नहीं होती हो ।

(३) जब काम थोड़ा सा रहे तो कहा जाता है कि अब इतना क्या छोड़ते हो

७५६ बास्ती कनै घी थोड़ो ही खटावै

आग के पास घी थोड़े ही टिकता है

स्त्रियों के लिये पुरुषों के पास अेकान्त में बैठना ठीक नहीं होता क्योंकि इसमें उनके चरित्र में दोष आ जाता है ।

७५७ बांझ कांई जाणै जिणनरी पीड़ ?

बांझ प्रसव की पीड़ा को क्या जान सकती है

(१) जिसने कभी कोई कष्ट नहीं सहा वह उसकी पीड़ा को क्या जाने ?

(२) जिस पर बीतता है वही जानता है

मि० बन्ध्या पीर प्रसूत को कहा बतावें खेद

मि०—नहिबन्ध्या विजानाति गुर्वीप्रसव वेदनां ।

७५८ बांट खाय वैकूंठां जाय

जो बांटकर खाता है वह वैकुंठको जाता है

कोई अच्छी चीज मिले तो उसे दूसरों को बांटकर खाना चाहिअे, अकेले नहीं ।

७५९ बांदरी ही'र बिच्छू खायग्यो

बंदरी थी ही, फिर ऊपरसे बिच्छू खा गया

बंदरिया पहलेही बहुत चंचल होती है फिर बिच्छू खा जाय तब तो उसके उछलने कूदनेका कहना ही क्या ?

साधन पाकर दुर्गुण अधिक तीव्र हो उठें तब ।

इस पर एक कहानी है—एक ब्राह्मण ने देखा कि पंचांगों को बेच कर बनिये लोग खूब नफा कमाते हैं मैं भी क्यों न ऐसा करूं? उसने पंचांग स्टाक कर लिये पर उसके पास बिक्री नहीं होती, वर्ष बीतने पर उसका कोई मूल्य नहीं क्योंकि वह तो वर्ष के आरंभ में बिकने वाली वस्तु है। इस पर तंग होकर ब्राह्मण की उक्ति।

७६९ विण पूछ्यो मूरत भलो, क्या तेरस क्या तीज

तेरस और तीज निश्चय ही अच्छे मुहूर्त हैं, किसीको पूछने की जरूरत नहीं।

७७० विना आटै रोटी करै

विना आटेके रोटी करता है

चालाक और चलते-पुर्जे व्यक्ति के लिअे।

७७१ विना विचार्यां जो करै सो पाछै पछताय

पहले अच्छी तरह सोच-समझ कर पीछे कार्य करना चाहिअे।

मि०—विना विचारे जो करै सो पाछे पछताय।
काम विगारै आपनो जगमें होत हंसाय॥
जगमें होत हंसाय चित्त में चैन न पावै।
खान पान सनमान राग रंग मनहि न भावै॥

७७२ विलायतमें किसा गधा को हुवैनी?

विलायतमें कौन-से गधे नहीं होते

(१) अच्छे और बुरे सभी स्थानोंमें होते हैं

(२) अच्छे स्थानके भी सभी व्यक्ति या पदार्थ अच्छे नहीं होते।

मि०—Learned fools are found every where.

७७३ बीती ताहि विसारदे, आगैकी सुध लेय

(१) जो हो गया उसका फिक्र मत करो, भविष्यका ध्यान रखो

मि०—Let by gones be by gones

७७४ बीती सो बैद

जिस पर बीती है वही वैद्य है

जिस पर बीतती है उसे उस बातका पूरा-पूरा अनुभव होता है और उसका उपाय भी उसे मालूम होता है ।

जो बीमार हुआ है उसे बीमारीका उपाय भी मालूम है ।

७७५ बींद, बींदरो भाई, तीजो बामण, चोथो नाई

अेक दूल्हा, दूसरा दूल्हेका भाई, तीसरा ब्राह्मण, और चौथा नाई (केवल चार आदमी बरातमें गये हैं)

बहुत थोड़ी संख्याके लिअे ।

७७६ बींद-बींदणी जोड़ै-तोड़ै, ले पंसेरी माथो फोड़ै

दूल्हा और दुलहिन दोनों अेकही जोड़-तोड़ के हैं (अेक-से हैं), दोनों पंसेरी लेकर माथा ही फोड़ते हैं

जब दो दुष्टोंको जोड़ी मिल जाय ।

जब दो व्यक्ति अेक-से दुष्ट हों ।

मि० -दो घर डूबतां एक ही घर डूबो

७७७ बींद-बींदणो सावधान, घरमें नहीं है पाव धान

हे दूल्हे और दुलहिन सावधान हो जाओ क्यकि घरमें खानेको पाव भर धान भी नहीं है ।

दूल्हा, दुलहिन दोनों बड़े होशियार बने फिरते हैं पर घरमें खानेको पाव भर धान भी नहीं ।

७७८ बींद मरो बींदणो मरो, बामणरो टको त्यार

दूल्हा मरो या दुलहिन मरो, पर ब्राह्मण की दक्षिणा तो पक गई

दूसरेका नुकसान की पर्वाह न करके अपना स्वार्थ सिद्ध करनेवालेके लिअे ।

७७९ बींदरे मूढेमें ही लाळां पड़ै जद जानी बापड़ा कांई करै ?

दूल्हेके मुंहसे ही लारें टपकें तो बेचारे बराती क्या करें ?

(१) जब मुखियेमें ही दम न हो तो सहायक क्या कर सकते हैं

(२) जिसका काम है वही जब पीछे हटता है तो दूसरे सहायक क्या कर सकते हैं ?

७८० बूढलीरै कयां खीर कुण रांधै ?

बुढ़ियाके कहनेसे खीर कौन रांधे ?

(१) सामान्य आदमीके कहनेसे लोग काम नहीं करते (बादमें चाहे अपने आप या दूसरों के कहे से वही काम करना पड़े) तब .

(२) जब अेक आदमीके कहने पर दूसरा व्यक्ति काम करनेसे इनकार कर दे पर बादमें जाकर वही काम करे तब उस पहले आदमीका कथन ।

७८१ बूढा सो बाळा

बूढ़े सो बालक

बूढ़े बालकवत् हो जातेहैं

७८२ बूढो बाबो आरड़ै, मनै चटायां टारड़ै

७८३ बेच'र पिसतावणो राख'र नहीं पिछतावणो

मालको बेचकर पछताना अच्छा है पर रख कर के पछताना अच्छा नहीं ।

७८४ बेच'र जगात को भरै नी

बेचकर जकात भी नहीं चुकाता

धूर्त, चालाक और चल्तापुर्जा व्यक्ति ।

७८५ बेलड़ियां वन छाया, जाट बखोंमें आया

बेलोंसे जंगल छाया और जाट काबूमें आये ।

७८६ वेळा-वेळारी छियां है

वक्त वक्तकी छाया है (कभी घटती है, कभी वढ़ती)

मनुष्य की दशा समयानुसार बदलती रहती है।

७८७ वेळा-वेळारी राग है

(देखो ऊपर कहावत नं० ७८५)

७८८ वैकूँठ छोटो 'र भगतांरी भीड़

वैकुंठ छोटा और भक्तोंकी भीड़ (हो गई, सारे कहांसे समावें)

थोड़े स्थानमें वहुत व्यक्ति अेकत्र हों तव।

७८९ वैण, सगाई, चाकरी राजीपेरो काम

वादा, सगाई, और नौकरी अपनी खुशीसे की जाती हैं (जवर्दस्ती नहीं हो सकतीं)

७९० वैंते सौ हाथ, फाड़े अेक हाथ ही कोनी

नापता है सौ हाथ, पर फाड़ता अेक हाथ भर भी नहीं

जो वड़ी-वड़ी बातें कहता है पर करना कुछ नहीं उसके लिअे

मि०—नापै सौ गज, फाडै नौ गज।

७९१ वंवतां वंवतां (पाठान्तर-वंव्रतैरी) आंख्यांमें धूड़ थाल दं

चलते-चलते आंखोंमें धूल डाल देता है

चालाक आदमीके लिअे जो देखते-देखते धोखा दे दे।

७९२ वंवतैरी लकड़ी लांबी हु ज्याय

चलते-चलते की लाठी लंबी हो जाती है

चलते-चलते मार्गमें वढ़ईको वैठा देखा, और कुछ काम नहीं हुआ तो यही कह दिया कि जरा लाठी को काटकर छोटा कर देना।

जब किसीको अनावश्यक सताया जाता है तव।

७६३ वैरागीरो जाम, कदै न आवै काम

वैरागीको संतान कभी काम नहीं आती

नोट - वैरागी गृहस्थ साधु होते हैं।

७६४ व्याजनै घोड़ा ही को पूगै नी (पाठान्तर को नावड़ैनी)

व्याजको घोड़े भी नहीं पा सकते

व्याज बड़ी तेजीसे बढ़ता है।

मि०—व्याज और भाड़ा दिनरात चलता है

व्याजके आगे घोड़ा नहीं दौड़ सकता।

७६५ व्याज प्यारो है, मूळ प्यारो कोनी

व्याज प्यारा है, मूल प्यारा नहीं

बेटे से उसको संतान अधिक प्यारी लगती है,

७६६ व्याज व्यापार रो गोलो है

व्याज व्यापार का दास है

व्याज की अपेक्षा व्यापार करना अधिक लाभदायक हैं।

७६७ व्यांव कहै-मनै मांड जाय। घर कहै-मनै खोल जोय

विवाह कहता है मुझे आरम्भ करके देखले, घर कहता है मुझे खोल कर (मरम्मत करवाना) देखले।

७६८ व्यांव वीगड्या, पण घररा तो जीमो

विवाह तो बिगड़ा पर घरके व्यक्ति तो जीमो

काम बिगड़ गया पर जो लाभ उठाया जा सकता है वह तो उठाओ

७६९ व्यांव, (पाठान्तर—सीर)सगाई, चाकरी राजापैरो काम

विवाह, सगाई, और नौकरी अपनी खुशीसे हो सकते हैं दवाव से नहीं

(देखो ऊपर कहावत नं० ७८९)

८०० ब्यांवरा गीत ब्यांवमें गाईजे

विवाहके गीत विवाहमें गाये जाते हैं

प्रत्येक काम अपने स्थान पर हो तभी शोभा देता है।

८०१ व्योपारे वधते लक्ष्मी

व्यापारसे लक्ष्मी बढ़ती है

व्यापारकी प्रशंसा।

मि०—व्यापारे वर्धते लक्ष्मीः

८०२ ब्रह्मा आगे वेद वांचै

ब्रह्माके आगे वेद वांचता है

जानकार आदमीको कोई बात बताना।

८०३ 'श्रीगणेशाय नम' में ही डबको

'श्रीगणेशायनमः' में ही त्रुटि

आरम्भमें ही गलती।

मि०—(१) प्रथमे ग्रासे मक्षिकापातः

(२) बिसमिल्ला ही गलत

८०४ 'श्री दाता धनकैं में ही खोट

'श्री दाता धनकें' में ही गलती

(ऊपरवाली कहावत देखो)

८०५ श्रीमाळ्यांरी गोठमें गयो खटावै है

श्रीमालियोंकी गोठ (गोष्ठी भोजन) में गया निभ सकता है

श्रीमाली ब्राह्मण भोजन-सामग्रीसे अधिक व्यक्तियों को निमंत्रण दे देते हैं और सामग्री खूट जाती है। ऐसी गोठ में नहीं शामिल होने पर ही उनको लाभ होता है, क्योंकि उतनी सामग्री तो दूसरों के लिए बच जाती है।

८०६ सक्करखोरनै सक्करखोरो मिलै

शक्कर खानेवालेको शक्कर खानेवाला मिल जाता है।

८०७ सक्करखोरनै सक्कर मिलै

शक्करखोरेको शक्कर मिल जाती है

जीवन-निर्वाहके लिअे आवश्यक पदार्थ परमात्मा सबको देता है।

मि० —(१) शक्करखोरेको शक्कर, मूंजोको टक्कर

(२) खग अिण साकरखोरंर संग न साकर-गूण
सब दिन पूरै साँअिया चांच दयो सौ चूण

८०८ सक्कर दियाँ मरै जकेनै जहर क्यूँ देणो

जो शक्कर देनेसे मरे अुसे जहर क्यों देना ?

समझानेसे काम बन जाय तो कठोर अुपायकों काममें नहीं लाना चाहिअे।

मि० - गुड़ दिये मरै तो जहर क्यों दाजै

८०९ सखीका बोलबाला, सूमका मूँ काळा

अुदार दानी पुरुषका अुत्कर्ष होता है, कंजूसका अपकर्ष

याचकोंका कथन।

मि०—सखीका बेड़ा पार, सूमकी मट्टी ख्वार

८१० सगळा पेच सिखा दिया, अेक मिन्नीआळो राख लियो—

सारे पेंच सिखा दिये अेक बिल्लीवाला पेंच रख लिया (नहीं सिखाया)

कहते हैं कि शेरका बच्चा जब बिल्ली से सारे दाव पेच सीख चुका तो वह उसी पर वार करने लगा। बिल्ली छलांग मार कर वृक्ष पर चढ़ गयी तो शेर के बच्चे ने कहा यह विद्या नहीं सिखायी तब उसने कहा यदि यह सिखा देती देती तो में कैसे बचती ?

८११ सगळी रात रोया, मस्यो अेक ही कोनी

सारी रात रोये मरा अेक भी नहीं

(१) जिस कामके लिअे अितना आडंबर किया गया वह हुआ ही नहीं

(२) समझाकर हार गये पर कुछ भी फल नहीं हुआ

(३) बहुत प्रयत्न किया पर कुछ भी फल नहीं हुआ।

८१२ सगळी रामायण सुण'र पूछी कै सीता कुण ही ?

सारा रामायण सुनकर पूछा कि सीता कौन थी ?

जो बातको सुनकर भी न समझे

जो बातको सावधानीसे न सुने और फिर पूछ बैठे।

मि० — सारी रामायण सुनके पूछा सीता किसको जोरू थी

सारी रात कहानी सुनी और सुबहको पूछा कि जुलेखां औरत थी या मर्द

८१३ सट्टैरी सगाई, तेलरी मिठाई

सट्टेको सगाअी और तेलकी बनी मिठाअी

दोनों खराब हैं।

८१४ सत मत छोड्यै, सूरमा ! सत छोड्यां पत जाय
सतरी बांधी लच्छमी फेर मिलैली आय

(१) हे शूरवीर, सत्यको मत छोड़ना, सत्यको छोड़नेसे प्रतिष्ठा चली जाती है (सत-सत्य)

(२) हे शूरवीर, साहसको मत छोड़ना, साहसको छोड़नेसे प्रतिष्ठा नष्ट हो जाती है (सत=सत्त्व)
सत्य से बंधी लक्ष्मी फिर आ जायगी।

८१५ सतलड़ी तो हाल अबै लधसी

सतलड़ी तो अभी आगे मिलेगी (अभी मिलनी बाकी है)

कार्य या लाभ होने से पूर्व ही बंटवारे का झगड़ा तो जाय तब।

८१६ सदा दियाळी सन्तकै, आठूँ पोहर अनंद

सन्त के सदा ही दिवाली (उत्सवका दिन) और आठों पहर आनंद रहता है

(१) सन्त सदा सुखी रहते हैं।

(२) सन्त दुख को भी सुख ही समझते हैं।

(३) जो हमेशा आनंदी रहे अैसे पुरुषका कथन।

८१७ सदा-सदा चानणी रातां को हुवै नी

सदा-सदा उजेली रातें नहीं होतीं

(१) हमेशा अच्छे दिन नहीं रहते

(२) हमेशा सुअवसर नहीं मिलते

८१८ सपनें देखी सांखली ढींगसरीरा कैर

हे सांखली ! अब [दूर ब्याही जाने पर] स्वप्न में ढींगसरी [गांव] के कैरों को देखना।

इतना दूर चला जाना कि फिर सहज आनेकी आशा न रहे।

८१९ सपनैरा सात, प्रतखरा पांच

स्वप्नके सात से प्रत्यक्ष के पांच भले

८२० सब ठाठ पड़्या रह जावैगा जब लाद चलैगा बणजारा *

जब बनजारा (अपने बैलोंको) लादकर चल देगा तो फिर सब ठाठ पड़ा ही रह जायगा।

जब संसारसे चलना होगा तो सब ठाटबाट यहीं पड़ा रहेगा।

---

* यह कहावत कविवर नजीरकी निम्नोक्त कविताकी अेक पंक्ति है।

टुक हिरस हवाको छोड़ मियां मत देस-विदेस फिरै मारा
कज्जाक अजलका लूटे है दिन-रात बजाकर नक्कारा
क्या भैंसा बधिया बैल शुतर क्या गौन औ पल्ला सिर भारा
क्या गेहूं चावल मोठ मटर क्या आग धुवां क्या अंगारा
सब ठाठ पड़ा रह जावै जब लाद चलैगा बनजारा

८२१ सब धान बाओीस पसेरी

सारा धान २२ पंसेरीके भाव

(१) अच्छे बुरे में कोओी अन्तर न करना

मि०—टके सेर भाजी टके सेर खाजा

(२) जब चीजें बहुत सस्ती हों तब।

८२२ सबसूँ भली चुप्प*

सबसे भली चुप

चुप रह जाना सबसे अच्छा।

मि० - मौनं सर्वार्थसाधनम्

८२३ सबसूँ मीठी भूख

सबसे मीठी भूख

भूख में जैसा कुछ मिल जाय वही मीठा लगता है।

८२४ सबूरीरा फल मीठा

सब्र (धीरज) के फल मीठे

धैर्य रखना या सन्तोष कर लेना अन्त में लाभदायक होता है।

८२५ सभागियांरी जीभ, अभागियांरा पग

सौभाग्यशालियों की जीभ (चलती है) और अभागियों के पैर

धनवान बैठे मौज अुड़ाते हैं—अुनको अिधर अुधर की बातें करने का ही काम रहता है पर गरीबों को निर्वाहके लिअे अिधर-अुधर आना जाना और परिश्रम करना पड़ता है।

८२६ समझूनै मार है

समझदार के लिअे मार है (समझदार मारा जाता है)

समझदार पर ही काम का भार डाला जाता है, मूर्ख को कोअी काम करने को नहीं कहता ।

काम बिगड़ जाय तो समझदार पर आफत आती है मूर्ख को मूर्ख कहकर छोड़ दिया जाता है ।

मि०—समझदार की मौत है । समझदार की मिट्टी खराब

८२७ समझूरी मौत है

समझदार की मौत है

(ऊपरवाली कहावत देखिये)

मि०—विचार नै मार है ।

८२८ समरथकूँ नहिं दोस, गुसांअी !

समरथको नहिं दोस गुसांअी

बलवान या बड़ा आदमी कोअी बुरा काम भी कर दे तो भी लोग अुसे बुरा नहीं कहते ।

८२९ समेररी गांडमें दो डोरा हुवै

सुमेरको गांड़में (छेदमें दो डोरे) होते हैं

मुखियाको या बड़े आदमीको अधिक कष्ट अुठाने पड़ते हैं ।

८३० समै-समैरी बात है

समय-समय की बात है

मि०—समै करै नर क्या करै समै-समैरी बात ।

केअी समै-रा दिन बड़ा कैअी समै रा रात ॥

समै बड़ी नर क्या बड़ो, समै बड़ो बलवान ।

काबां लूंटी गोपका वो अरजुन वै बाण ॥

८३१ समंदर में रहणो'र मगर मच्छसूँ वैर करणो

समुद्रमें रहना और मगरमच्छसे वैर करना

बलवान मालिक या साथी या सहयोगीसे वैर करनेसे हानि अठानी पड़ती है।

८३२ सरग नरग कुण देख'र आयो है

स्वर्ग और नरक किसने देखा है ?

इसी लोक की करनी ही स्वर्ग नरक है।

८३३ सरपरै बच्चैरो कांअी छोटो कांअी मोटो ?

सांपके बच्चेका क्या छोटा और क्या बड़ा (दोनों अेकसे प्राणहारी होते हैं)

दुष्ट या दुश्मन छोटा हो चाहे बड़ा कभी अुपेक्षा नहीं करनी चाहिअे।

८३४ सरपांरै किसी मासी ?

सांपोंके कौन-सी मौसी

दुष्ट रिश्तेदारी या मित्रताका लिहाज नहीं करते।

८३५ सरमरी मा गोडा रगड़ै

शर्मकी मां गोड़े रगड़ती है

८३६ सरमरो बहू भूखी मरै

शर्मवाली बहू भूखों मरती है

जो आहार-व्यवहारमें लज्जा करता है वह हानि अुठाता है।

८३७ सराही खीचड़ी दांतां चढै

सराही हुअी खिचड़ी दांतोंके चढ़ती है (चिपकती है)

(१) ज्यादा तारीफ करनेसे आदमी बिगड़ जाता है (घमंडी हो जाता है)

(२) जिस पदार्थकी तारीफ की जाय वह जब कष्टदायक हो जाय तब।

८३८ सरावण वखत करै नहीं

सराहने का समय मत मत देना !

किसी उत्तम व्यक्ति को अविद्यमानता में प्रशंसा करने का मौका न देना अर्थात् चिरायु हो !

८३९ सलाम सट्टै मियांजीनै विराजी क्यूँ करणा ?

केवल सलामके लिअे मियांजीको नाराज क्यों करना ?

कोअी साधारण बात करनेसे ही राजी रहै तो यह बात न करके अुसे नाराज करनेसे क्या लाभ ?

८४० सळ सट्टै भैंस मारै

चमड़ेके टुकड़ेके लिअे भैंसको मारता है

थोड़ीसी बातके लिअे बड़ा हानिकर बैठता है

८४१ सस्तो भाड़ो, पोकर जात

सस्ता भाड़ा और पुष्करकी यात्रा (फिर क्या चाहिअे ?)

८४२ सस्तो रोवै बारबार मूँघो रोवै अेक बार

सस्ता रोवै बारबार महगा रोवै अेक बार

सस्ती वस्तु अच्छी और टिकाअू नहीं होती, महँगी वस्तु में अेक बार तो खूब दाम लग जाता है पर वही अच्छी और टिकाअू होती है।

८४३ संख फेर, खीर भर्योड़ो

शंख और फिर खीरसे भरा (फिर क्या चाहिअे ?)

८४४ संग जिसो रंग

जैसा संग वैसा रंग

८४५ संगत जिसी रंगत

(ऊपरवाली कहावत देखो)

८४६ संगत जिसो असर

जैसी संगत वैसा असर

मि० तुकम तासीर सोहवते असर

८४७ संगत जिसो फळ

जैसी संगति वैसा फल

८४८ संगतरा फळ है

संगत के फल हैं

जैसी संगत की जाती है वैसा ही फल मिलता है ।

८४६ संगतसार अनेक फळ लोहा काठ तिरंत

संगति के अनुसार अनेक प्रकार के फल मिलते हैं

काष्टके साथ लोहा भी तैरता है ।

८५० संदेसां खेती को हुवैनी

संदेश द्वारा खेती नहीं होती (खुद करे तभी होती है)

जो खुद काम नहीं करता, दूसरों को सौंप देता है उसका काम नहीं होता ।

मि० —आप मर्‌यां बिना सरग को मिलैनी

८५१ संपत थी जरां भूत कनै ही धन ले आया

संपति (मेल) थी तब भूत के पास से भी धन ले आये

मेलजोल से सब कुछ हो सकता है

८५२ संपत होय तो घर भलो, नहीं भलो परदेस

यदि परस्पर प्रेम हो तो घरमें रहना अच्छा नहीं तो परदेश ।

८५३ साख अेक सिसियैरी

गवाही अेक खरगोश की

चतुराओ से किसी बात को हँकरवा लेना

भिस पर यह कहानी है—अेक वनिया धन कमाने को परदेश चला । मार्ग में कओी ठग मिले । अुनको देखकर वनिया पहले तो घबराया पर फिर अपनी

दरी जमीन पर फैलाकर बैठ गया और रुपयोंकी थैली पासमें रख कर तथा बही खोलकर बैठ गया। ठग भी अुसके पास आकर बैठ गये और बोले सेठजी, हमें रुपयोंकी जरूरत है, आप अुधार दे दीजिये। सेठने कहा— हमारा तो काम ही यही है, आप किसी साक्षीको ले आअिये ताकि लिखापढ़ी की रस्म पूरी हो जाय। अितनेमें अेक खरगोश वहांसे निकलता हुआ दिखायी दिया। ठगोंने कहा कि अिसीको साक्षी लिख लीजिये, अिस जंगलमें दूसरा साक्षी कहांसे आवेगा? बनियेने कहा-ठीक है। फिर १०) पासमें रखकर सब रुपये ठगोंको सौंप दिये और बहीमें अुनके नाम-धाम लिखकर नीचे लिख दिया—साख अेक सुसियेरी। फिर दुखी मनसे घर लौट आया। जिसके बाद वह बराबर अुनका ध्यान रखने लगा। अेक दिन वे शहरके दरवाजेमें जाते हुअे दिखायी दिये। बनियेने झट पुलिसको सूचना दी और ठग पकड़कर राजाके आगे पेश किये गये। मामला चला। ठगोंने कहा कि बनिया झूठ बोलता है, यदि रुपये हमने लिये होंगे तो कोअी साक्षी जरूर होगा। क्योंकि बिना साक्षीके ये लोग रुपये नहीं देते। बनियेने कहा—हां अन्नदाता, साक्षी है, मेरी बहीमें लिखा है—साख अेक लूंकड़ीरी (गवाही अेक लोमड़ी की)। यह सुनते ही अुनमेंसे अेक मूर्ख ठग बोल अुठा— क्यों झूठ बोलता है, वह लोमड़ी कहां था, वह तो खरगोश था। बनिया बोला—हां, अन्नदाता, बेशक बोलनेमें भूल हो गयी, यह ठग ठीक कहता है मेरी बहीमें भी खरगोश ही लिखा है, देख लीजिये। राजाने सब समझ लिया और बनियेका धन अुसे दिलाकर ठगोंको अुचित दंड दिया।

८५४ सागी कुवाड़ा'र सागी डांडा

वही कुल्हाड़े और वही डंडे
फिर पहलेका-सा ढंग अख्तियार कर लेना
जैसा पहले किया वैसा ही करना

तूं है देवी बावली भैंस गयो है रावली।
हूं हूं कुंभार बांडो सागी कुंवाड़ो'र सागी डांडो ॥१॥

८५५ सागी रोटीरी कोर ला

असी रोटीकी कोर ला

असंभव हठ करना ।

८५६ सागै कुण कैर जावै ?

साथ कौन किसके जाता है

मरनेके बाद कोअी साथ नहीं देता ।

८५७ सागो (पाठान्तर-साथो) तो सेळैरो ही चोखो

साथ तो सेल़ (जानवर) का भी अच्छा

साधारण व्यक्तिका भी साथ अच्छा होता है

अिस पर अेक कहानी है जो इस प्रकार है—

एक व्यक्ति ग्रामान्तर जा रहा था कोई साथ नहीं हुआ तो रास्ते में सेल़ा [कांटेदार जानवर] को ही उठाकर साथ ले लिया । आगे वृक्षके नीचे वह सो गया । सेला उसके पास रक्षक रूपमें बैठा था । एक सांप आया सेल़े ने उसकी पूछ पकड़ ली और दुबक कर बैठ गया सांप क्रुद्ध होकर फण मारने लगा और सेल़े के कांटोंसे बिद्ध कर मर गया जब वह मनुष्य उठा तो उसने सेल़े की चतुराई ज्ञात कर उपर्युक्त कहावत प्रचलित की ।

८५८ साच कहणा, सुखी रहणा

सच कहना, सुखी रहना

८५९ साच कही मानै नहीं, झूठै जग पतियाय

सत्य बात कहने पर लोग नहीं मानते, झूठी बात कहनेसे सबको विश्वास हो जाता है ।

संसारमें प्रायः अैसा होता है ।

८६० साच-कूड़ में च्यार आंगळरो फरक

सच और झूठमें केवल चार आंगुलका फर्क है

(आंख और कानमें चार आंगुलका अंतर होता है)

८६१ साच बोलणो लड़ाअी मोल लेवणी है

सच बोलना लड़ाअी मोल लेना है

सच बात कहनेसे लोग नाराज होते हैं और लड़ बैठते हैं।

८६२ साच बोलै सत्यानास जाय

जो सच बोलता है अ सका सत्यानाश हो जाता है

सच बोलनेवालेके सब वैरी हो जाते हैं

मि०—साच कहै सो मारा जाय।

८६३ साची कैवृ जद मा ही माथै में देवृ

सच्ची कहते हैं तब माँ भी माथेमें देती है (मारती है)

सच्ची पर खरी बात कोअी नहीं सुनना:चाहता

८६४ साचैरी व्रावड़ै, झूठैरी को व्रावड़ै नी

सच्चेकी (दशा) फिर लौट आती है, झूटेकी नहीं लौटती।

८६५ साजन जिसा भोजन

जैसे प्रियतम वैसे भोजन

८६६ साजन सांकड़ा ही भला

मित्र एक साथ रहें तो अच्छा चाहे स्थान संकुचित हो क्यों न हो।

८६७ साझो बापरो ही खोटो

साझा बापका भी खोटा

साझेका काम कोअी अच्छा नहीं।

मि॰—(१) साझेकी मा गंगा न पावै
(२) साझेकी हांडी चौराहे फूटै
(३) साझा भला न बापका बेटी भली न अेक
(४) साझ सझै न बापका है रासै की खाण
घर न्यारो कर, वालमा ! म्हारी मत तूँ मान
(५) सात मामांरो भाणजो भूखां मरै ।

८६८ साठ गांव बकरी चरगी

साठ गांव बकरी चर गयी

८६९ साठी, बुध नाठी

साठी पर पहुंचे और बुद्धि भागी

साठ बरसकी अवस्थाके बाद बुद्धि काम नहीं करती
साठी बुध नाठी सब कही है असीय खिसी लोकोक्ति कही
मैं तो अठाणु पर
छेड़ं मोमें स्मृति मति केथ रही ।
(मस्तयोगी ज्ञानसार १९ वीं शती)

८७० साठे कोसे पाणी, बारह कोसे वाणी

साठ कोस के बाद पानी और बारह कोसके बाद बोली (बदल जाते हैं)

८७१ साठे कोसे लापसी सौए कोसे सीरो
नहीं छोड़ूलो नणदल बाई रो वीरो

लापसी का भोजन साठ कोस व सीरेका सो कोस की दूरी में भी नणंद का भाई नहीं छोड़गा । भोजनभट्ट की स्त्री या लोगों का कथन ।

८७२ साणी कैरा घोड़ा ग्रगस दै ?

साहनी किसके घोड़े बख्श दें ?

८७३ साण्यांरा बगसीज्या किसा घोड़ा बगसीजै ?

साहनियोंके बख्शे कौन-से घोड़े बख्शे जाते हैं (घोड़े तो मालिक बख्शे तभी बख्शे जा सकते हैं)

जिसको कोअी चीज दे देनेका अधिकार नहीं वह अुसको नहीं दे सकता वह दे भी दे तो वह चीज दी हुअी नहीं समझी जा सकती।

८७४ सात-पांचरी लाकड़ी, अेक-जणैरो बोझ

सात-पांच आदमियोंकी अेक-अेक लकड़ीसे अेक आदमीका पूरा बोझा बन जाता है।

कअी आदमियोंके थोड़े-थोड़े सहारेसे अेक आदमीका सारा काम बन जाता है। सब आदमी थोड़ा-थोड़ा सहारा दें तो अेक महान कार्य सिद्ध हो जाता है।

मि०—पांचारी लकड़ी एकैरो भारौ।
पांचांरी लात एकै रो गारौ॥

८७५ सात भायांरी बहन भूखी मरै

सात भाअियोंकी बहन भूखी मरती है

(१) सभी आदमियोंका काम किसीका भी काम नहीं होता

८७६ सात मामांरो भाणजो भूखो मरै

सात मामोंका भानजा भूखा मरता है
(अूपरवाली कहावत देखिये)

त वार नव तिवार
र नौ त्यौहार
ोंको धिक है।

८७९ सादळियै पूरमें ठगिया

सादलिये ने पूरमें (मलवेमें) ठग लिया

चालाकीसे ठग लेना

कहानी-सादा या सादलिया नामका अेक बनिया था। अुसके पास मलवेका बड़ा ढेर हो गया। सबको फिंकवानेमें बहुत पैसा लगेगा यह सोचकर अुसने कुछ हिस्सा बाहर रख दिया और अेक मजूरसे कुछ पैसे देकर फिँकवानेकी बात तय की। मजदूर ढेरीमेंसे कुछ फेंकने गया जितनेमें सादेने कुछ और मलवा ढेरीमें मिला दिया। बेचारा मजदूर फेंकता रहा पर ढेरी खतम हो न हो क्योंकि जितना मजदूर ले जाता अुतना सादा और डाल देता। अंतमें हारकर मजदूर बोला—सादलिये पूरमें ठगिया।

८८० साधांरै किसा सवाद

साधुओं-फकीरों-के कौनसे स्वाद हैं

(नीचेवाली कहावत देखिये)

८८१ साधांरै किसा सवाद, विलोया नहीं तो अणविलोया ही सही

साधुओंके कौनसे स्वाद हैं, मथे नहीं तो बिना मथे हो सही

८८२ साधांरै किसा स्वाद (विलोया है)

साधुओंके कौन-से स्वाद (मथे) हैं

८८३ साफ कहणा, मगन रहणा

स्पष्ट बात कहना और मौज करना

सामो सरड़ा, बामण गरड़ा

८८४ सायजी सूरा, लेखा पूरा

शाहजी सुखोर हैं, हिसाब किताब बराबर

सारी आमदनी खरच हो जाने पर।

८८५ सायजी, जात कांअी ? चोपड़ा

पशम ही दीखै है नी

शाहजी, आपकी जाति क्या ?

चोपड़ा।

आपके पशम ही दीखते हैं न।

८८६ सारी अूमर पीस्यो'र ढकणीमें अुसास्यो

सारी उम्र पीसा और सारा ढकनीमें अेकठा कर लिया

जन्मभर परिश्रम करने पर भी कुछ न जोड़ सके तब।

८८७ सारी रात रोया मर्‌यो अेक ही कोनी

(अूपर कहावत नं० ८११ देखिये)

८८८ सारी रामायण वांच लो जद पूछै सीता कुण ही

(अूपर कहावत नं० ८१२ देखिये)

८८९ साळसींघी सेत व़ाजा, कांअी करैला रूठा राजा ?

सालसिही और सेत बाजा हो तो राजा रूठकर क्या करेगा ?

ये दो अलौकिक शक्तियोंवाली वस्तुअें हैं जो प्रायः सिद्ध लोगोंके पास मिलती हैं

८९० साव़ण बीकानेर

सावनके महीनेमें बीकानेर बहुत मनोरम शोभावाला हो जाता है

सीयालै खाटू भली उन्हालै अजमेर।
नागाणो नितरो भलो सावण बीकानेर॥

८९१ साव़ण सूको न भादव़ो हर्‌यो

सावन सूखा न भादों हरा

सदा अेक-सा रहना।

८९२ साव़ण तो सूतो भलो, ऊभो भलो असाढ

सावनमें चंद्रमा सोया उगे तो अच्छा और आषाढ़में खड़ा

८९३ साव़ण रे (जायोड़ै) गधै नै हरियो हरियो दीसै

सावन में जन्मे गधे को हरियाली ही दीखती है

अनुभव हीन व्यक्ति के लिए।

८९४ साव़ळ करतां काव़ळ पड़ै

अच्छा करते बुरा होता है

८९५ साळी छोड़ सासू सूं ही मसकरी ?

साली छोड़ ससे ही मश्करी !

८९६ साळै बिना कांयरो सासरो ?

साले बिना क्या ससुराल ?

८९७ सावणरै आंधैने हर्‍यो-ही-हर्‍यो सूझै

सावनमें अंधे हुओे आदमीको सब हरा-हरा सूजता है

(जब अंधा हुआ तब सब हरा ही हरा था अुसीकी स्मृति अुसे रह जाती है)

(अूपर कहावत नं० ८९३ देखिये)

८९८ सासरै जाव़तीनै छिनाळ कोअी को कैव़ैनी

ससुराल जाती हुओको छिनाल कोअी नहीं कहता ।

अच्छी जगह जानेसे कोअी बुरा नहीं कहता

८९९ सासरो काई बिसास आवेर आवैअी कोयनी—

स्वासका क्या विश्वास ? आता आताही नआवै (बंध हो जाय)।

९०० सासरो कोनी, भाया ?

भाभी, यह ससुराल नहीं है

आनंद करनेको जगह नहीं।

६०१ सासरो सुख-वासरो

सछराल सुख-निवास है

ससुरालकी प्रशंसा।

६०२ सासरो सुखवासरो, दो दिनांरो आसरो,
तीजे दिन रैवै तो खावै खांसड़ो

ससुराल सुखका निवास है पर दो ही दिन तक तीजे दिन रहे तो जूते खाता है

सछरालमें थोड़े दिन तो बड़ा आदर होता है पर ज्यादा रहनेसे अनादर होने लगता है।

मि०— तीन दिनां रा पावणा चौथे दिन अणखावणा।

६०३ सासरो सुख-वासरो, पण च्यार दिनांरो आसरो
रैसां मास दो मास, देसां दाती बढ़ासां घास

ससुराल सुखका वासा है पर चार ही दिन आश्रय मिलता है

एक व्यक्ति ससुराल गया, वहां की आवभगतसे प्रसन्न होकर असा कहने पर साले ने कहा चार दिन का आश्रय है जंवाई ने कहा महीना दो महीना रहेंगे तो साले ने कहा दाव देकर घास कटावेंगे।

६०४ सासा विसासा करै

असमंजसमें पड़ा है।

६०५ सासूजी! थे जावो, म्हारै ही कोअी राम है

सासजी, आप जाअिये, मेरे भी कोअी राम हैं।

६०६ सासूसूँ वैर, पाड़ोसणसूँ नातो

साससे वैर और पड़ोसिनसे प्रेम

अपनोंसे विरोध और परायोंसे प्रेम रखने पर।

मि०—घरसे वैर अपर से नाता, ऐसी वहू मत देहु विधाता (तुलसीदास)

६०७ साहूकार रै वास्ते ताळो, चोररै वास्ते किसो ताळो ?

साहूकारके वास्ते ताला लगाया जाता है चोरके वास्ते क्या ताला ?
(चोर तो ताला तोड़ कर भी चोरी कर लेता है)

६०८ सांईरी कुदरत है

परमात्मा की कुदरत है

६०९ सांचनै आंच कोनी

सांचको आंच नहीं
सच्चेको कोई डर नहीं
मि० सत्ये नाऽस्ति भयं क्वचित्
    सांचको क्या आंच

६१० सांप आंगळरो मेल है (पाठान्तर—अंगूठैरो)

सांप अंगलीका मेल है
बंबी में हाथ डालना और सांपका डसना।

६११ सांप नीकळग्यो लीक पीटै है।

सांप तो चला गया उसके चिन्ह को पीटा जाता है
किसी भी अनावश्यक रूढ़िके अस्तित्व पर।
मि०—सरप तो गया लिसोड़ा रह्या

६१२ सांप मरै न लाठी टूटै

विना किसी विगाड़के काम हो जाय

६१३ सांपरै खायोड़ैनी अदीतवार कद आवै ?

सांपके खाये हुअे को इतवार कब आवे ? (अुसका अिलाज तो तुरत होना चाहिअे।)

६१४ सांपरो सोवै बिच्छूरो रोवै

सांपका (काटा) सो जाता है, बिच्छूका काटा रोता है

६१५ सांपांरै किसा साख ?

सांपोंके कौन-से रिश्ते

दुष्ट रिश्तेका लिहाज नहीं करते।

६१६ सांभर, जाय अलूणो खाय

सांभर जावे और फिर भी अलोना (भोजन) खावे

मि०—कुंए जाकर प्यासा आवै

६१७ सांभरमें पड़ै सो सांभर हुवै

जो सांभर में पड़ता है वह भी सांभर (नमक) हो जाता है

६१८ सांभरमें लूणरो टोटो !

सांभरमें नमकका टोटा !

६१९ सांभी हांडी चौवटै फूटै

सम्हाली हुअी हँडिया बीच बाजार फूटती है।

जिसकी ज्यादा सम्हाल रखते हैं वह ज्यादा नष्ट होती है।

६२० सांस जितै आस ,

जब तक सांसा तब तक आसा

(१) मरने तक आशा पिंड नहीं छोड़ती

(२) जब तक कोअी मर न जाय जब तक अुसके जीवनकी आशा रहती है

(३) जब तक कोअी काम नष्ट ही न हो जाय तब तक अुसके होनेकी आशा बनी रहती है।

६२१ सिकल देख'र गधा भिड़कै

शक्ल देखकर गधे भड़क उठते हैं

६२२ सिकाररी वखत कुतिया हँगाथी

शिकार के समय कुतिया हंगासी
ठीक मौके पर बहानेबाजी करनेवाले पर।

६२३ सित्तर-मित्तर हूं समझूं कोय नी, तीन वीसी पूरी लेसूं

सित्तर-मित्तर तो मैं समझता नहीं, पूरा तीन बीसी रुपये लूंगा

कहानी- एक भोला जाट बीस से ऊपर गिनती नहीं जानता था, ऊंट बेचने के लिये आने पर खरीददार ने कीमत सत्तर रुपये कही तो उसने कहा सित्तर मित्तर मैं नहीं जानता मुझे तो पूरे तीन बीसी (साठ रुपये) चाहिये।

६२४ सिधश्री में ही खोट

'सिद्धश्री' में ही गल्ती
आरम्भ में ही खराबी
मि० श्रीगणेशायनमः में ही डबको
बिसमिल्ला ही गलत

६२५ सिरपर भींटकोरी खेई, तंबू में बड़न दो

माथे पर भींटोरों (कांटों) का भार और तम्बू में प्रवेश करने की इच्छा, अयोग्य व्यक्ति पर।

६२६ सिर वडो सपूतरो, पग बडा कपूतरा

सिर बड़ा सपूतका, पैर बड़े कपूतके
बड़ा सिर अच्छा समझा जाता है और लंबे पैर बुरे।

६२७ सिर बडो सरदाररो, पग वडो गँवार रो

सिर बड़ा सरदारका, पांव बड़े गंवारके
(ऊपरवाली कहावत देखिये)

६२८ सिलाम सटै मियांजी ने बेराजी क्यों करणा ?

सलाम के हेतु मियांजी को नाराज क्यों करना ?
सामान्य बात के लिये किसी को नाराज नहीं करना चाहिए।

६२९ सिसियां पांती सोळवीं लड़ाअीमें आध

६३० सिंघ पकड़ियो स्याळियै जे छोडै तो खाय

सिंहको सियारने पकड़ तो लिया पर अब यदि छोड़ दे तो सिंह अुसे खा जाय
बिना परिणाम सोचे किसी काममें हाथ डाल देनेवालेपर ऐसा कार्य करके विषम परिस्थिति में पड़ जाने पर जिसे निभाने और छोड़ने में नुकसान उठाना पड़े।

६३१ सिंघ-बचा जो लंघणा तोय न घास चरंत

सिंहका बच्चा यदि भूखा हो तो भी घास नहीं खाता।
स्वाभिमानी पुरुष विपत्तिमें भी पड़नेपर भी स्वाभिमान का त्याग नहीं करता
महापुरुष विपत्तिग्रस्त होकर भी अनुचित कार्य नहीं करता।

६३२ सिंघांरै किसी मास्यां हुवै

सिंहों के कौन-सी मौसियां होती है ?
जो रिश्तेका लिहाज नहीं रखते अुनपर।

६३३ सीता-किसना कह्यो कोनी

सीता-कृष्ण नहीं कहा

६३४ सीयाळो सोभागियां

शीतकाल भाग्यवानोंके लिअे अच्छा
दोहा—सीयाळो सोभागियां देरो देजखियां।
आधो हाली बालदी, सारो पाणंतियां॥

६३५ सीरख देख’र पग पसारणा चायीजै

सौड़ देखकर पैर फैलाना चाहिअे
सामर्थ्य के अनुसार काम करना चाहिअे
मि०—तेते पांव पसारियै जेती लांबी सौड़

६३६ सीररी मांनै स्याळिया खाय

साझेकी मांको सियार खाते हैं

६३७ सीररी होळी हुन्न

साझेकी होली होती है

(१) साझे का काम बिगड़ता है

(२) साझे की होली अच्छी

६३८ सीररो धन स्याळिया खाय

साझे का धन सियार खाते हैं

साझे का काम सदा बुरा

[ऊपर कहावत नं० ९३६ देखिये]

६३९ सीर, सगाई चाकरी राजीपैको काम

६४० सींग पूँछ गांडमें वडग्या गज बंदूक समेत

राजपूती रुळती फिरै ऊपर फिरगी रेत ।

गज बंदूक समेत सींग पूँछ गांड़में घुस गये, रजपूती धूल में मिल गयी ।

कायर राजपूतों पर ।

६४१ सीरोइ बादी करै देख देही रा खेल ।

सीरा भी वायुकारक हो गया, देखो देह का खेल

अमीरी आ जाने पर ।

दोहा लूखा धान न धापता ल्यास पलासां तेल ।
        सीरोइ बादी करै देख देही रा खेल ॥

६४२ सींगरी कसर पूँछमें निकळी

सींगकी कसर पूँछमें निकली पूरी हुई

अेक स्थानकी कमी दूसरे स्थानमें पूरी हुई ।

६४३ सुख-दुखरो जोड़ो है

सुख और दुःखका जोड़ा है

सुखके बाद दुख और दुखके बाद सुख जीवनमें आते ही रहते हैं ।

६४४ सुगन गांठड़ी बांधो

६४५ सुण, भाओ सूजा ! जोधाणै राज करै जका जोधा दूजा

भाओ सूजा सुन, जोधपुरमें राज्य करनेवाले जोधे दूसरे हैं

६४६ सुथारनै देख'र वैंवतेरी लाठी लाँबी हु ज्याय

खातीको देखकर चलते हुओ की लाठी लंबी हो जाती है

६४७ सुधरी ने कंइ सरावणो, विगरी ने कंइ विसरावणो

निंदा स्तुति न करके समभाव रखना चाहिओ ।

६४८ सुसियैरो चौथो पग ही नहीं

खरगोश का चौथा पैर ही नहीं

६४९ सुसियै साख भर दी

खरगोश ने साक्षी भर दी

पक्षपाती साक्षी पर ।

६५० सुँवाळी खेजड़ी माथे सै चढै

सीधे खेजड़ेके पेड़ पर सभी चढ़ जाते हैं

सीधेको सभी सताते हैं

६५१ सुईनै संचार कोनी

खचाखच भर जाने पर

६५२ सूकै साथै आलो बळै

सूखे काठ के साथ गीला जलता है

६५३ सूका संख सड़ासड़ वाजै

सूखे संख खड़खड़ बजते हैं

६५४ सूको काठ टूट भलां ही जावै, निवै कोनी

सूखा काठ टूट चाहे जाय पर नमता नहीं

मूर्ख हानि भले ही उठा ले पर हठ नहीं छोड़ता

६५५ सूत जिसी पेटी, मां जिसी बेटी

जैसा सूत होगा वैसी पेटी होगी, जैसी मां होगी वैसी बेटी होगी

संतान माता के अनुसार होती है ।

६५६ सूतांरी पाडा ही जणै

सोनेवालों की भैंस पाड़े ही जनती है

आलसियोंका काम अधूरा ही रहता है

इस पर कहानी—दो व्यक्तियों के भैंस वियाने वाली थी रात का समय था

जिसके जागते हुए व्यक्ति की भैंस ने पाड़ा प्रसव किया उसने सोनेवाले पड़ौसी

की तत्काल प्रसूता पाड़ी से बदल लिया ।

६५७ सूती-बैठी डूमणी घरमें घाल्यो घोड़ो

सोती-बैठी डूमनी ने घरमें घोड़ा डाल लिया

आराम में रहते हुअे स्वयं आफत मोल ले लेना ।

६५८ सूतैनै जगाव़णो सोरो, जागतैनै जगाव़णो दोरो

सोते को जगाना सहज पर जगते हुअे को जगाना कठिन

जो जान बूझ कर काम न करे अुससे काम नहीं करवाया जा सकता

जो जानबूझ कर समझना न चाहे अुसे कैसे समझाया जाय

६५९ सूतैनै जगाव़ै, पर जागतैनै कियां जगाव़ै ?

सोते को जगा ले पर जगते हुअे को कैसे जगावे

[ऊपरवाली कहावत देखो]

६६० सूथण राखसी जको मूतणनै जाग्यां राखसी

जो पाजामा रखेगा वह मूतने को जगह भी रखेगा

६६१ सूधैनै सौ दुख

सीधे को सभी दुःख

सीधेको सभी सताते हैं ।

६६२ सूधै माथै दो चढै (पाठान्तर-लदै)

सीधे (जानवर) पर दो सवारी करते हैं

सीधे को लोग ज्यादा सताते हैं

६६३ सूनैमें न्हार जरूर पड़ै

सूने में नाहर जरूर पड़ता है

६६४ सूरज अस्त, मजूर मस्त

सूर्यास्त होते ही मजदूर मस्त हो जाते हैं

क्योंकि अुस समय अुन्हें छुट्टी मिल जाती है ।

६६५ सूरज सामी धूड़ अुछाळै जकी आपरै माथै पड़े

सूरज के सामने जो धूल अुछाली जाती है वह अपने ही सिर पर पड़ती है महापुरुष को निंदा करनेसे अपनी ही हानि होती है, महापुरुष का कुछ नहीं बिगड़ता ।

६६६ सूरज सामै थूक्योड़ो आपरै ही माथै पड़ै

सूरजकी ओर थूका हुआ अपने ही सिर पर पड़ता है

[अूपरवाली कहावत देखो]

६६७ सूरदास काळी कामळ पर चढै न दूजो रंग

काली कमली पर दूसरा रंग नहीं चढ़ता

(१) जिसका स्वभाव नहीं बदलता अुस पर

६६८ सूरा सो पूरा

जो सूर है वही पूरा आदमी है

६६९ सूवै अकूरड़ी पर, सपना आवै महलांरा
कूड़ाघर में सोना और महलों के स्वप्न देखना
हवाई किल्ले बांधने वाले के प्रति ।

६७० सूँठ रो गांठिया ले'र पसारी को वणीजैनी
सूँठका गांठिया ले लेने से पंसारी नहीं बना जा सकता

६७१ सूंठरो गांठियो ले'र पंसारो वण्यो है !
सूठ की गांठ लेकर पंसारी बन बैठा है ।

६७२ सेखांरी तळाओ'र सेखांसूँ ही टर
शेखावतों का तलैया और शेखावतों से ही टर्र

६७३ सेखैनै भातो आयो
शेखा के लिअे भाता आया
किसी व्यक्ति पर मीठी आपत्ति आ जाने पर व्यंग से ।

६७४ सेजरी माखी ही बुरी
सेजकी मक्खी ही बुरी
सौत के लिअे ।
(कहावत नं० ९९६ देखिये)

६७५ सेठ बोलै सो सवा वीस
सेठ जो कुछ कहें सो सवा बीस

६७६ सेर-आळी ही दूध लै और पावआळी ही दूध लै.
सेरवाली भी दूध लेते हैं और पाववाली भी दूध लेते हैं.....

९७७ सेर जठै सवा सेर

जहां सेर (खर्च किया) वहां सवा सेर सहीं

जहां ज्यादा खर्च होता है वहां थोड़ा और सही

९७८ सेरनै सवा सेर त्यार है

सेर को सवा सेर तय्यार है

(१) बलवान को अुससे अधिक बलवान अवश्य मिल जाता है

(२) जो किसीको सताता है अुसे सतानेवाल' भी मिल जाता है

(३) जो चालाकी करता है अुसके साथ चालाकी करनेवाला भी मिल जाता है

(४) जो सताता है वह ज्यादा सताया जाता है

९७९ सेर नैं सवा सेर पूग्यो

सेर को सवा सेर पहुँच गया (मिल गया)

सतानेवालेको सतानेवाला मिल गया

चालाकको चालाक मिल गया।

९८० सेरमें पँसेरी रो घोखो

सेरमें पंसेरीका धोखा

बहुत बड़े धोखेबाज पर

ठग दुकानदार पर।

९८१ सेरमें पूणी ही को कती नी

सेरमें पौना भी नहीं कता

अभी काम का बहुत थोड़ा हिस्सा हुआ है।

मि० मण में कण।

९८२ सेर री दे, सवा सेर री ले

सेर की दे सवासेर की ले

जो मारता है या धोखा देता है वह ज्यादा मारा जाता है या ज्यादा धोखा खाता है

९८३ सेर री हांडीमें सवासेर कठैसूं खटावै ?

सेरकी हांडीमें सवा सेर कैसे रहे ?

तुच्छ हृदयके आदमी पर जो थोड़ा धन पाकर या थोड़ा आदर पाकर अितरा जाता है या जो कही हुअी बातको गुप्त नहीं रख सकता।

९८४ सेर रो बेटो गांडू

शेरका बेटा गांडू

९८५ सेर सोनैरी कांअी वणियाट है

सेर सोनेको क्या विसात है

अधिक धनी पर

दरिद्र पर (व्यंगसे)

९८६ सेल घमीड़ा जो सहै, सो जागीरी खाय

जो भालेकी चोटें सहता है वही जो जागीर भोगता है

जो कष्ट अुठाता है वही सुख भोगता है

९८७ सेल घमीड़ा वो सहै, जो जागीरी खाय

भालेकी चोटें भी वही सहेंगे जो जागीर भोगते हैं

९८८ सेवामें मेवा है

सेवाका फल अच्छा होता है

६८९ सै आप-आपरी रोट्यां नीचे खीरा देवै
सभी अपनी-अपनी रोटीके नीचे अंगारे रखते हैं
सब अपना लाभ पहले देखते हैं।

६९० सैजे चूड़ो फूटियो'र हळका हुयग्या हाथ
बाई रा बंधण कट्या, भली करी रघुनाथ
सहजहीमें चूड़ा फूट गया और हाथ हलके हो गये
सहज ही किसी कार्य का हो जाना।

६९१ सैणपमें किरकिर पड़ै
सयानपमें किरकिर (धूल) पड़ती है
जो ज्यादा सयाना बनता है वह काम बिगाड़ता है।

६९२ सैणपमें भीजै है
सयानपमें भीगता है
ज्यादा सयानप दिखानेवाले पर।

६९३ सैयाँ भये कुतवाल, अब डर काहेका ?
प्रियतम ही कोतवाल हो गये अब किस बातका डर ?

६९४ सैंधो कुत्तो घररानै खावै
परिचित कुत्ता घरवालोंको ही खाता है

६९५ सैंधा सगा सूठरा गांठियो (पाठान्तर-सामी)
परिचित समधी सोंठकी गांठ (दे. बराबर)
अधिक परिचय से अनादर होता है।
मि० अति परिचयादवज्ञा

९९६ सौक माटी री ही खोटी

सौत मिट्टीकी भी बुरी

९९७ सोटी बाजै चमचम, विद्या आवै घमघम

सोंटी चमचम बजती है तो विद्या घमघम करती आती है

गुरुके पीटनेसे विद्या जल्दी आती है

पाठां० चोटी करै चमचम विद्या आवै घमघम

९९८ सोढीजी-आळो सिणगार करै

सोढ़ीजीवाला सिंगार करता है

देर करता है।

९९९ सोढीजी सिणगार करसी, जितै रावळजी पोढ ज्यासी

सोढ़ीजी सिंगार करेंगी तबतक राजाजी सो जायँगे

देर करनेवाले पर।

१००० सोनार आपरी मांरा ही हांचळ काट लेवै

सुनार अपनी मांके भी स्तन काट खाता है

सुनार अपने घरवालोंको भी नहीं छोड़ता।

१००१ सोनार सागी मांरा हांचळ काटै

(ऊपर वाली कहावत देखिये)

१००२ सोनैने काट को लागै नी

सोनेको जंग नहीं लगता

अच्छे आदमीमें बुराई नहीं पैदा होती

अच्छे आदमी को बदनामी करने से भी नहीं होती।

१००३ सोनैरी कटारी पेटमें को मारीजै नो

सोनेकी कटारी पेटमें नहीं मारी जाती

(नीचेवाली कहावत देखिये)

१००४ सोनैरी कटारी पेट में खावणनै का हुवै नो

सोनेकी कटार पेटमें खानेको नहीं होती

१००५ सोनैरी थाळीमें लो'री मेख

सोनेकी थालीमें लोहेकी मेख

अमेल संबंध पर।

१००६ सोनैरो सूरज ऊग्यो

सोनेका सूर्य उगा

अत्यन्त हर्षका कार्य हुआ।

१००७ सोनो उछाळता जावो

सोना उछालते जाओ

जहां चोर डाकूका भय न हो ऐसे स्थानके। ८

१००८ सोनो गयौ करणरै साथ

सोना राजा कर्ण के साथ गया

१००९ सोनो देखअर मुनींरा मन हाल

सोना देखकर मुनिका मन भी डिग जाता है

धन देखकर कौन नहीं डिग जाता ?

१०१० सोनो'र सुगंध

सोना और सुगंध

जब दो अच्छी बातोंका संयोग हो

१०११ सोम साजा न मंगळ मांदा

न सोमवारको अच्छे न मंगलको बीमार

हमेशा अेक-सा रहनेवाले पर

१०१२ सोमोती अमावस अर सुकरवार

सोमवती अमावस और शुक्रवार

१०१३ सोरे अूंट माथै सै-कोअी बैठै

आरामदेह अूँट पर सब कोअी बैठते हैं

सीधेको सब सताते हैं

भलेको सब तंग करते हैं।

१०१४ सोळह आना साची !

सोलह आने सच्ची !

बिलकुल सत्य (व्यंग में)

१०१५ सोवै सो खावै

जो सोता है सो खोता है

मि० सूता तेह विगूता सहो जागतां नै डर भय नहीं

१०१६ सौअे कासे निरवाळा

सौ कोस दूर

जो जिम्मेदारीके कामसे सदा बचता रहे।

१०१७ सौअे कोसे लापसी साठे कोसे सीरो,

कदे न छोड़े भूलसु, नणदलबाई को बीरो।

सौ कोस पर लपसी और साठ कोस पर हलुआ हो तो भी

मेरी ननदका भाई (पति) नहीं छोड़ता

भोजनभट्ट और मिष्टान्नप्रेमी पर

१०१८ सौअे वरसे सअीको हुवै
सौ बरस पर शताब्दी होती है
अवसर हमेशा नहीं मिलता

१०१९ सौ का रहग्या सठ, आधा गया नट, दस देंगे, दस दिलावेंगे; दसका देणा क्या ?

१०२० सौगन र सीरणी खावणनै हुवै
सौगंद और सीरनी खानेको ही होती हैं
बहुत सौगंद खानेवाले पर।

१०२१ सौ गुंडा, अेक मुछमंडा
सौ गुंडे और अेक मुछमुंडा (बराबर हैं)

१०२२ सौ गोलां घर सूनो
सौ गोलोंके होते हुअे भी घर सूना
केवल नौकरों से ही घर नहीं शोभता।
मि० घणां गोलां कोटड़ी सूनी

१०२३ सौ जठे सवा सौ
जहां सौ वहां सवा सौ
जहां अधिक खर्च हो रहा है वहां थोड़ा खर्च और हो जाय तो क्या ?

१०२४ सौ ज्यूं पचास, गांगो ज्यूं हरदास
जैसे सौ वैसे पचास, जैसे गांगा वैसा हरदास
जहां सौ खर्च हुअे वहां पचास और सही
जहां अितना गया वहां अितना और सही।

१०२५ सौ दिन चोररा, अेक दिन साहूकार रो

सौ दिन चोर के अेक दिन साहूकारका

जो आदमी कओी बार दोष करके बच जाता है तो अेक दिन पकड़ा भी जाता है और अुस दिन सब दिनोंकी कसर अेक साथ निकल जाती है

१०२६ सौ दिन सासूरा, अेक दिन बहूरो

सौ दिन सासके अेक दिन बहूका

(अूपरवाली कहावत देखिये)

१०२७ सौ धान बाओीस पसेरी

सब धान बाओीस पंसेरी (बेचता है)

भले बुरेको अेकसी कदर करना

१०२८ सौ नार, अेक सोनार

सौ स्त्रियां और अेक सुनार

सौ स्त्रियोंमें जितनी चालाकी होती है अुतनी अेक सुनारमें होती है।

१०२९ सौ नीच, अेक अंखमीच

सौ नीच और अेक काना

१०३० सौ पछै ही सायजी क्यूं ?

सौ के पीछे शाहजी क्यों

सौ मर जायँ तो भी शाहजी क्यो मरें

जो आदमी सदा सशंक रहता हुआ किसी तरहका

खतरा न ले अुस पर।

१०३१ सौबत जिसी असर

जैसी सोहबत वैसा असर

१०३२ सोबतरो असर है

(अूपर की देखिये)

१०३३ सौ में सूर सवामें काणो, सवा लाखमें आंचाताणो

सौ मनुष्योंमें अंधा, सवासौ में काना, और सवा लाख में अैंचाताना अेक ही बदमाश होता है ।

१०३४ सौ रांडांने भांग'र अेक रँडवो घड्यो

सौ रांडोंको भांगकर अेक रँडुआ बनाया

रँडुवा सौ रांडोंके बराबर बदमाश होता है ।

१०३५ सौ वातांरी अेक वात

सौ बातोंकी अेक बात

तात्पर्य यह है । मुख्य बात यह है ।

१०३६ सौ सुजाण, अेक अजाण

१०३७ सौ सोनाररी, अेक लोहाररी

सौ सुनारकी अेक लुहारकी

१०३८ सौ स्याणा अेक मत

सौ सयाने अेक मत

सब सयानोंकी अेक ही राय होती है ।

१०३९ स्याणां स्याणां अेक मत

सयाने सयानोंकी अेक बुद्धि होती है

(अूपरवाली कहावत देखिये)

१०४० स्यामसूँ किसो संग्राम ?

स्वामीसे कैसा संग्राम

बलवानसे विरोध नहीं करना चाहिये ।

१०४१ स्याळियैआळी घुरी है

सियारवाली मांद है

१०४२ स्याळियैरी मौत आवै जरां गांव कानी भाजै

सियारकी मौत आती है तब गांवकी तरफ भागता है

जब होनहार अच्छी नहीं होती तब बुद्धि विपरीत हो जाती है ।

१०४३ स्याळियैआली बुधनेड़ा आयां घटती जावै

सियारवाली बुद्धि ज्यों-ज्यों निकट आते हैं घटती जाती है

कामके पहले डींग मारनेवाले और कामके समय पीठ दे जानेवाले पर ।

१०४४ हकूमतरो डोको डांग फाड़ै

हुकूमत की सींक लाठीको फाड़ डालती है

हुकूमत या अधिकार पास होनेसे निर्बल भी बलवान हो जाता है ।

१०४५ हम पिया, हमारा बैल पिया, अब कूवा टुड़ पड़ो

हमने पी लिया, हमारे बैलने पी लिया, अब कुँआ गिर पड़े

स्वार्थी व्यक्ति के लिये ।

१०४६ हम चवड़े, गळी सांकड़ी

हम चौड़े, गली तंग

अभिमानी या गर्विष्ठ के लिये ।

१०४७ हम बडा गळी सांकड़ी बाजारका रस्ता किधर ?

हम बड़े, गली तंग, बाजारका रास्ता किधर ?

(ऊपरवाली कहावत देखो)

१०४८ हर विना ही गांव्तरो ?

विना आशा के क्यों गामान्तर जाना

१०४९ हरी करी सो खरी

हरिने की सो खरी है

भगवान का किया होता है। भगवान की की हुई को कोई नहीं टाल सकता।

१०५० हळदीरो गांठियो ले'र पंसारी वण्यो है

हल्दीका टुकड़ा लेकर पंसारी बना है

१०५१ हवेली हुवै जठै तारतखानो ही हुवै

महल होता है वहां पाखाना भी होता है

बड़ेके साथ छोटा—भलेके साथ बुरा – भी होता है।

मि० १ गांव हुवै अकुरड़ी ई हुवै।

२ no garden without its weeds

१०५२ हांडो जिसा ठीकरा, मा जिसा डीकरा

जैसी हांडी वैसे उसके ठीकरे, जैसी मां वैसी उसकी संतान

संतानमें माता के गुण आते हैं।

१०५३ हांडी में ढकणी खावै

थोड़ी वस्तु में से भी अधिकांश उड़ा लेना

१०५४ हांती थोड़ी, हलहल घणी

हांती थोड़े, हलचल बहुत

थोड़ा काम पर बहुत हो-हल्ला करना

१०५५ हाडरो चांई लाड ?

हाड़का क्यां लाड़ ?

कहानी—एक बूढे मियां सादी करके बीबी लाये। मियां के दांत एक था। उसने कहा—मर्द तो इकदंता भला तो बीबी ने कहा—हट्ठ क्या लड्ड मुख सफसंफा ही भला। तब मियां ने समझा कि बीबी तो मेरे से भी बूढी है।

१०५६ हाडो तीरसूं डरै क्यूं डरै

कौवा तीरसे डरता है वैसे डरता है

बहुत डरता है

१०५७ हाडो ले डूब्यो गणगोर

हाडा (राजपूत) ले डूबा गनगौर

१०५८ हाथ कमाया कामणा किणने दीजै दोस ?

हाथ से कमाये काम हैं, किसको दोष दिया जाय ?

अपने ही किये कार्मोका फल भोग रहे हैं।

१०५९ हाथ पोलो, जगत गोलो

हाथ पोला (ढीला) हो तो संसार भर गोला (दास) हो जाता है।

रुपया देने से सब वश में हो जाते हैं।

१०६० हाथ में माला, पेट कुदाला

हाथ में माला और पेट में कुदाली

ऊपरसे धर्मात्मा बनना और पेटमें कपट रखकर हानि पहुंचाना

धोखेबाजके लिये।

१०६१ हाथ में लिया कांसा, मांगण का क्या सांसा ?

जब हाथमें भिक्षापात्र ले लिया तो मांगनेका क्या डर ?

निर्लज्जता धारण कर लो फिर लज्जा कैसी ?। निर्लज्जके लिये।

१०६२ हाथरै आळस मूँछ मूँढै में आवै

हाथके (=जरा-से =) आलस्यके कारण माछ मुंहमें आती है ।

जरा-से आलस्यके कारण अधिक हानि होना ।

१०६३ हाथरो दियो आडो आवै

हाथका दिया हुआ काम आता है

दानकी महिमा ।

१०६४ हाथ सुमरनी, पेट कतरणी

हाथमें माला और पेटमें कतरनी

कपटीके लिअे ।

[देखो ऊपर—हाथ में माला पेट कुदाला]

१०६५ हाथसूँ दियो दूध बराबर

हाथसे दिया दूधके समान है

स्वेच्छासे दो हुई वस्तु निर्दोष है ।

मि०—आप मिले सो दूध बराबर, मांग मिले सो पाणी ।

कहै कबीर, सो रक्त बराबर ज्यामें खेंचाताणी ।

१०६६ हाथ सूको, टाबर भूखा

हाथके सूखते ही बच्चा (फिर) भूखा हो जाता है

बच्चों को दिनभर भूख लगती है—वे दिन भर खाते हैं ।

१०६७ हाथसूँ हाथ और पग सूँ पग नेड़ा

हाथ से हाथ और पैर से पैर निकट

१०६८ हाथ ही बळ्या, होळा ही हाथ को आया नी

हाथ भी जले और होले (आगमें भुने गीले चने) भी हाथ नहीं आये ।

हानि भी उठाई, या कष्ट भी सहा, और काम भी न बना ।

१०६९ हाथांरै किसी मँहदी लाग्योड़ी है ?

हाथोंके कौन-सी महँदी लगी हुई है ।

हाथोंके गीली महँदी लगी रहती है तो उसके उतरनेके भयसे काई काम नहीं करते । जब कोई व्यक्ति काम नहीं करता तब यह कहावत कही जाती है ।

१०७० हाथी आगै पूळो

हाथीके आगे पूला

हाथीको अेक घास के पूले से क्या हो, क्योंकि वह बहुत थोड़ा होता है

१०७१ हाथी उडै जठै पुण्यांरा लेखा हुवै ?

जहां हाथी उड़े वहां ऊनकी पूनियोंके हिसाब होते है ?

मिलाओ—भींटोरा उडै जठै पार्यांरा लेखा हुवै ?

१०७२ हाथी तोलीजै जठै गधा पारूग में जाय

जहां हाथी तुलते हैं वहां गधे पासंगमें जाते हैं

१०७३ हाथीरा दांत, कुत्तैरी पूँछ, कुमाणसरी जीभ, सदा आंटी रैवै

हाथीके दांत, कुत्तेकी पूँछ और कुपुरुषकी जीभ सदा टेढ़ी रहती है

कु-पुरुष सीधा नहीं बोलता ।

१०७४ हाथीरा दांत देखावणरा और, खावणरा और

हाथीके दांत दिखलानेके दूसरे और खाने के दूसरे

अैसे आदमीके लिअ जो कहता कुछ है और करता कुछ है ।

१०७५ हाथीरै पगमें सगळांरो पग

हाथीके पैरमें सबका पैर

अेक बड़े आदमी से अनेक छोटों का निर्वाह होता है ।

अेक बड़े पदार्थमें अनेक छोटे पदार्थ आ जाते हैं ।

१०९० हाल रात आडी है

अभी तो रात बीच में है।

अभी सफलता मिली नहीं है, न जाने क्या विघ्न आ पड़े

मिलाओ—कबीर पगड़ा दूरि है जिनके बिच है रात

का जाणै का होयसी ऊगंते परभात

१०९१ हिगतै बोर खायो

हँगते हुए बेर खाया

कहानी—एक आदमी ने शौच जाते बेर खाया जिसे दूसरे व्यक्ति ने देख लिया। वह उसे सबके सामने प्रकट करने की धमकी दिखाता और कहता—कह दूं क्या? तो एक दिन उसने चिढ़कर स्वयं स्वीकार कर लिया जिससे हमेशा की झंझट मिटी।

१०९२ हिगतारै बीचमें मूँढो देवै है

हँगते हुए बीच में मुंह देता है

१०९३ हिग, रे छोरा! पेट फाड़ूँ

अरे छोरे! हँग, नहीं तो तेरा पेट फाड़ता हूं

१०९४ हिंदवाणै में तुरकाणी कर दी

हिन्दुआने में तुर्कानी रीति कर दी

(१) धर्म के विरुद्ध काम करना

(२) किसी काम में विपरीत काम कर डालना

१०९५ हिंदू कैवतो सरमावै, लड़तो को सरमावै नी

हिन्दू कहते हुए शरमाता है, लड़ता हुआ नहीं शरमाता

हिंदू पहले कहता हुआ शरमाता है पर पीछे लड़ता हुआ भी नहीं शरमाता।

समझदार के सामने में शर्मा शर्मी के कारण नहीं बोलता पर पीछे लड़ता है।

१०९६ हिचकी खांसी उबासी, तीनूं काळरी मासी

हिचकी, खांसी और जँभाई—तीनों काल की मौसी हैं

तीनों मृत्यु की ओर ले जानेवाली हैं ।

१०९७ हिमायतरी गधी हाथीरै लांत मारै

हिमायत की गधी हाथी के लात मारती है

हिमायत से निर्बल भी सबल बन जाता है ।

१०९८ हिम्मत किम्मत होय

हिम्मत की कीमत होती है

हिम्मत बड़ी चीज है उसीसे आदर मिलता है । पूरा दोहा इस प्रकार है—

हिम्मत किम्मत होय हिम्मत विना किम्मत नहीं
करै न आदर कोय रद कागद ज्यूँ, राजिया !

१०९९ हिम्मते मरदां मददे खुदां

हिम्मते मरदां मददे खुदां बादशाह की लड़की से फकीर का निकाह

११०० हियैरी बात होठां आयां सरै

हृदय की बात होठों पर आ ही जाती है

हृदय का कपट कभी नहीं छिपता ।

मि०—कोठ री बात होठे आयां सरै ।

११०१ हिलायांसूं दाळ जाय, लडायांसूं पूत जाय

हिलाने से दाल बिगड़ती है, लाड़ करने से पुत्र बिगड़ता है

दाल पकाते समय दाल को बराबर कलछी से चलाना नहीं चाहिये ।

इसी प्रकार संतान का अनुचित लाड़-प्यार नहीं करना चाहिये ।

१९०२ हिळी-हिळी लूँकड़ी अड़कमतीरा खाय
लोभ लागो वाणियो, घाटे लागी गाय।
लोभ में पड़कर सर्वदा अनुचित कार्य करने वाला नुकसान उठाता है।

११०३ हिल्योड़ो चोर गुळगुला खाय

११०४ हींग जावै पण वास को जावैनी
हींग चली जाती है पर उसकी गंध नहीं जाती
मनुष्य मर जाता है पर उसके गुण याद रहते हैं।

११०५ हींग लगै ना फिटकड़ी, रंग चोखो ही आवै
हींग लगे न फिटकरी पर रंग चोखा आवे
बिना खर्च काम हो जाय।

११०६ हींजड़ैरी कमाई मूँछ-मुंडाईमें जावै
हिंजड़े की कमाई मोंछ मुड़वाने में जाती है।

११०७ हीरा पथरांसूँ फोड़नने थोड़ा ही हुवै
हीरे पत्थरों से फोड़ने के लिए थोड़े ही होते हैं
बुद्धिमान मूर्खों से थोड़े ही झगड़ते हैं या माथाकूटी करते हैं

११०८ हीरेसूँ हीरो बींधीजै
हीरे से हीरा बिंधता है
(नीचेवाली कहावत देखो)

११०९ हीरो हीरैसूँ कटै
हीरा हीरे से कटता है
मिलाओ Diamonds cut diamonds.

१११० हुआ सौ, भागा भौ
हुया हजार, फिरो बजार
सो रुपये हो गये तो भय भाग गया, हजार हो गये तो खूब बाजार में फिरो।
धन की महिमा।

११११ हुन्न जणां ईद, नहीं तो रोजा
पास हो तो ईद, नहीं तो रोजे
मिल जाय तो मौज करते हैं, नहीं मिलता है तो फाका

१११२ हूं आयो, तूं चाल
मैं आया, तू चल

१११३ हूं गाऊं दियाळीरा, तूं गावै होळीरा
मैं गाता हूं दिवाली के (गीत), तू गाता है होली के
बिना आशय समझे बीच में बेमतलबकी बात करने पर।

१११४ हूंता बहन, अणहूंतां भाई, मगरां पूठै नार पराई

१११५ हूं नहीं हुती तो कैनें परणीजता ? कै – थारी मांनै
मैं नहीं होती तो किससे विवाह करते ? कि तेरी मां से

१११६ हूं वड़ो, सेरी सांकड़ी
मैं बड़ा, गली तंग
[ऊपर देखिये—हम चबड़ा गली सांकड़ो]

१११७ हूं मरूं पण तनै रांड कैवा'र छोडूं
मैं मरूँ पर तुझे रांड कहला कर छोड़ूं

११९८ हूं रहूं कोलायत, तूं रहै विलायत
मैं रहता हूं कोलायत, तू रहता है विलायत
मेरा-तेरा क्या साथ !

१११९ हूं लायो मांग तांग, तूं लै गधैरी टांग
मैं तो मांग-तांग कर लाया हूं, तू गधे की टांग ले
मांगी हुई चीज में कोई हिस्सा बंटाना चाहता है तब कही जाती है।

११२० हूं ही राणी, तूं ही राणी, कुण घालै चूल्हे में छाणी ?
मैं भी रानी, तू भी रानी, चूल्हे में कंडा कौन डाले ?
जब कोई काम न करना चाहे।

११२१ हूं कहतां मैं आवै
'हूं' कहते मुंह से 'मैं' निकलती है

११२२ है जितोई खैरोरो टुकड़ो है
जितना है उतना ही खैरीका टुकड़ा है

११२३ होड करयां लोड फूटै
होड करने से माथा फूटता है
होड करने की निंदा। जब कोई होड़ नहीं करना चाहता तब कहता है।

११२४ होडाहोड क्यूं गोडा फोडै
होड़ाहोड़ी क्यों गोड़ा फोड़ता है ?
दूसरे की देखादेखी या दूसरे से होड़ कर लगाकर, कोई व्यक्ति हानि उठाता है तब कही जाती है।

११२५ होणहारनै नमस्कार !
होनहार को नमस्कार है
होनहार बड़ी है, उससे बच नहीं सकता।

'राजस्थानी ग्रन्थमाला'

के

स्थायी ग्राहक बन कर

राजस्थानी भाषा के साहित्य-प्रकाशन में सहयोग प्रदान करें।

२००० स्थायी ग्राहक हो जाने से—राजस्थानी के
साहित्य-प्रकाशन का कार्य अपने पैरों
पर खड़ा हो जावेगा।

आप इस उद्योग में सहायक बनिये

नीचे लिखे ग्रंथ प्रेस में दिये जा चुके हैं :—

(१) राजस्थानी कहावतां भाग पहला
(२) संक्षिप्त राजस्थानी व्याकरण
(३) सुखी गिरस्थीरा गीत
(४) नरसीजी रो मायेरो

शीघ्रता से अपनी प्रति रिजर्व कराइये।

राजस्थानी साहित्य परिषद
४ जगमोहन मल्लिक लेन,
कलकत्ता।

११९८ हूं रहूं कोलायत, तूं रहै विलायत
में रहता हूं कोलायत, तू रहता है विलायत
मेरा-तेरा क्या साथ !

१११९ हूं लायो मांग तांग, तूं लै गधैरी टांग
में तो मांग-तांग कर लाया हूं, तू गधे की टांग ले
मांगी हुई चीज में कोई हिस्सा बंटाना चाहता है तब कही जाती है ।

११२० हूं ही राणी, तूं ही राणी, कुण घालै चूल्हे में छाणी ?
मैं भी रानी, तू भी रानी, चूल्हे में कंडा कौन डाले ?
जब कोई काम न करना चाहे ।

११२१ हैं कहतां मैं आवै
'हैं' कहते मुंह से 'मैं' निकलती है

११२२ है जितोई खेरीरो टुकड़ो है
जितना है उतना ही खेरीका टुकड़ा है

११२३ होड करयां लोड फूटै
होड करने से माथा फूटता है
होड करने की निंदा । जब कोई होड़ नहीं करना चाहता तब कहता है ।

११२४ होडाहोड क्यूं गोडा फोडै
होडाहोडी क्यों गोडा फोड़ता है ?
दूसरे की देखादेखी या दूसरे से होड़ कर लगाकर, कोई व्यक्ति हानि उठाता है तब कही जाती है ।

११२५ होणहारनै नमस्कार !
होनहार को नमस्कार है
होनहार बड़ी है, उससे बच नहीं सकता ।

'राजस्थानी ग्रन्थमाला'

के

स्थायी ग्राहक बन कर

राजस्थानी भाषा के साहित्य-प्रकाशन में सहयोग प्रदान करें।

२००० स्थायी ग्राहक हो जाने से—राजस्थानी के
साहित्य-प्रकाशन का कार्य अपने पैरों
पर खड़ा हो जावेगा।

आप इस उद्योग में सहायक बनिये

नीचे लिखे ग्रंथ प्रेस में दिये जा चुके हैं :—

(१) राजस्थानी कहावतां भाग पहला
(२) संक्षिप्त राजस्थानी व्याकरण
(३) सुखी गिरस्थीरा गीत
(४) नरसीजी रो मायेरो

शीघ्रता से अपनी प्रति रिजर्व कराइये।

राजस्थानी साहित्य परिषद
४ जगमोहन मल्लिक लेन,
कलकत्ता।

'राजस्थानी'

राजस्थानी भाषा और साहित्य पर अधिकृत रूप से प्रकाश डालनेवाली एकमात्र निबंधमाला ।

इसका प्रकाशन त्रैमासिक रूप से होता है :—

एक प्रति का मूल्य—२॥)
वार्षिक ग्राहक शुल्क—१०)

राजस्थानी भाषा, साहित्य, संस्कृति और अन्वेषण के—इस महान् प्रयत्न में—अपना सहयोग देकर—मातृभूमि, मातृ-भाषा और मा भारती की सेवा करिये। परिषद का सदस्य हो जाने से यह निबंधमाला मुफ्त मिला करेगी एवं परिषद के प्रकाशन पौने मूल्य में मिलेंगे। परिषद का सदस्य-शुल्क १२) वार्षिक है।

विशेष बातें जानने के लिये पत्र-व्यवहार करिये—

राजस्थानी साहित्य परिषद
४ जगमोहनमल्लिक लेन,
कलकत्ता ।

'राजस्थानी'

राजस्थानी भाषा और साहित्य पर अधिकृत रूप से प्रकाश डालनेवाली एकमात्र निबंधमाला।

इसका प्रकाशन त्रैमासिक रूप से होता है ।—

एक प्रति का मूल्य—२॥)
वार्षिक ग्राहक शुल्क—१०)

राजस्थानी भाषा, साहित्य, संस्कृति और अन्वेषण के—इस महान् प्रयत्न में—अपना सहयोग देकर—मातृभूमि, मातृ-भाषा और मा भारती की सेवा करिये। परिषद का सदस्य हो जाने से यह निबंधमाला मुफ्त मिला करेगी एवं परिषद के प्रकाशन पौने मूल्य में मिलेंगे। परिषद कासदस्य-शुल्क १२) वार्षिक है।

विशेष बातें जानने के लिये पत्र-व्यवहार करिये—

राजस्थानी साहित्य परिषद
४ जगमोहनमल्लिक लेन,
कलकत्ता।